मध्यप्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

चतुर्दश विधान सभा तृतीय सत्र

जून-जुलाई, 2014 सत्र

बुधवार, दिनांक 2 जुलाई, 2014

(11 आषाढ़, शक संवत् 1936)

[खण्ड- 3] [अंक- 3]

मध्यप्रदेश विधान सभा

बुधवार, दिनांक 2 जुलाई, 2014

(11 आषाढ़, शक संवत् 1936)

विधान सभा पूर्वाह्न 10.33 बजे समवेत हुई.

{अध्यक्ष महोदय (डॉ. सीतासरन शर्मा) पीठासीन हुए.}

अध्यक्ष महोदय—प्रश्न क्रमांक 1 श्री सत्यपाल सिंह सिकरवार

नेता प्रतिपक्ष (श्री सत्यदेव कटारे)—माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा निवेदन है.

अध्यक्ष महोदय—अभी प्रश्नकाल है.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, बिल्कुल सही बात है कि प्रश्नकाल है हमें मालूम है. व्यापम को लेकर हमारे दल के माननीय सदस्यों ने 139 की चर्चा मांगी है.

अध्यक्ष महोदय—आप प्रश्नकाल हो जाने दें.

श्री सत्यदेव कटारे—माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने निवेदन किया है, पीएससी के लिये भी निवेदन किया है.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—अध्यक्ष महोदय, प्रश्नकाल बड़ा महत्वपूर्ण है.

अध्यक्ष महोदय—प्रश्नकाल को हो जाने दें.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, हम आसंदी से आश्वासन चाहते हैं. आप हमारे निवेदन को स्वीकार कर लें आपसे अपेक्षा है कि यहां पर चर्चा होगी.

मुख्यमंत्री (श्री शिवराज सिंह चौहान)—माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापम को लेकर पिछले कई दिनों से आरोप लगाने का काम चल रहा है, कीचड़ उछाली जा रही है, षड़यंत्रों की साजिश की जा रही है

और इसलिये मैं आज आपसे प्रार्थना करता हूं कि व्यापम को लेकर के स्थगन लगे हैं आप तत्काल स्थगन को स्वीकार कीजिये और मैं तुरंत चर्चा के लिये तैयार हूं. आप कार्यवाही स्थगित कीजिये स्थगन लीजिये सरकार चर्चा के लिये तैयार है. काल करे सो आज कर आज करे सो अब.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, अब तो सदन की सहमति हो गई है सदन के नेता जी ने बोल दिया है. अब आसंदी के निर्णय की अपेक्षा है.

अध्यक्ष महोदय—यद्यपि यह विषय पुराना है और इस पर पहले भी प्रश्न आ चुके हैं सब ज्यूडिस भी है यह मामला इस तरह सामान्यतः ऐसे विषय स्थगन में नहीं लिये जाते हैं जिन पर प्रश्न आ चुके हों, जिन पर जो मामले सब ज्यूडिस हों. आपने प्रश्नकाल के समय पिछली बार भी चर्चा नहीं की और एक सत्र भले ही लघु हो वह निकल चुका है किन्तु माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी तथा माननीय प्रतिपक्ष के सदस्यों की भावनाओं को देखते हुए और माननीय सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी की सहमति से मैं इस विषय को स्थगन के लिये ग्राह्य करता हूं और इस पर चर्चा अभी तत्काल प्रारंभ की जाये.

(व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे--अध्यक्ष महोदय, मेरी एक प्रार्थना है सभी सदस्यों के सवाल लगे हैं, इसलिये हमने विषय उठाया कि इसको लिया जाये..(व्यवधान).

डॉ. नरोत्तम मिश्रा--चर्चा से भाग रहे हो ? एक तो विषय उठाते हो और अब चर्चा से भाग रहे हो.. (व्यवधान).

एक माननीय सदस्य--इनकी तैयारी नहीं है.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा--आपको अगर चर्चा प्रश्नकाल में नहीं करानी थी, तो प्रश्नकाल में क्यों उठाया ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय--कृपया बैठ जायें. स्थगन प्रस्ताव आपके आग्रह पर बारबार के आग्रह पर...

श्री सत्यदेव कटारे--हां. अध्यक्ष महोदय, हमने निवेदन किया कार्यवाही में देख लीजिये कि हमारे सदस्यों ने 139 की चर्चा दी है हम उस पर चर्चा मांग रहे हैं..(व्यवधान).

डॉ. नरोत्तम मिश्रा--अरे, अब पीछे क्यों भाग रहे हो ?

अध्यक्ष महोदय--आप कृपया यह बतलायें ....(व्यवधान)..

डा. नरोत्तम मिश्रा--हिन्दुस्तान की विधान सभा के इतिहास में आज पहली बार ऐसा हुआ है इनकी तैयारी नहीं है और कांग्रेस चर्चा से भाग रही है.

अध्यक्ष महोदय--माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी, आप कृपया यह बतलायें कि आप चर्चा अभी चाहते हैं कि नहीं चाहते हैं ?(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य--तैयारी करके नहीं आये हैं इसलिये समय मांग रहे हैं.

श्री सत्यदेव कटारे--अध्यक्ष महोदय, यदि आपने हमें समय दिया है, तो हमें बोलने दीजिये फिर इनको बैठाल दीजिये. (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, अगर आपने हमें समय दिया है, तो इनको बैठाल दीजिये.

स्थगन प्रस्ताव

प्रदेश के कई जिलों में व्यावसायिक परीक्षा मंडल द्वारा विभिन्न चयन परीक्षाओं में बड़े पैमाने पर अनियमितता किया जाना

अध्यक्ष महोदय--यदि यह विषय अभी नहीं लेना चाहते थे, तो इसको 11.30 बजे उठाया जा सकता था. मैंने पहली ही प्रश्नकाल के लिये माननीय सदस्य को पुकारा था पर चूंकि यह चर्चा उठ गई है और इस पर अब दोनों पक्षों की सहमति हो गई है इसलिये इस चर्चा को प्रारंभ करता हूं. प्रदेश के कई जिलों में व्यवसायिक परीक्षा मंडल द्वारा विभिन्न चयन परीक्षाओं में बड़े पैमाने पर अनियमितता किये जाने से उत्पन्न स्थिति के संबंध में स्थगन प्रस्ताव की 5 सूचनायें प्राप्त हुई हैं. पहली सूचना श्री कमलेश्वर पटेल, दूसरी सूचना श्री रामनिवास रावत, तीसरी सूचना श्री शिवकुमार जैन, चौथी सूचना श्री जीतू पटवारी, पांचवी सूचना कुंवर विक्रम सिंह नातीराजा, सदस्य की है. (व्यवधान) चूंकि श्री कमलेश्वर पटेल, सदस्य की सूचना पहले प्राप्त हुई है, अत: मैं उसे पढ़ कर सुनाता हूं.प्रदेश में व्यापक भ्रष्टाचार का रूप धारण कर चुका व्यवसायिक परीक्षा मंडल द्वारा विगत् 3-4 वर्षों से विभिन्न चयन परीक्षाओं में बड़े पैमाने पर अनियमितता उजागर हो रही है. कड़ी मेहनत कर परीक्षा में अव्वल आने वाले छात्रों का हनन् एवं उनके साथ अमानवीयता की गई है. प्रदेश के सभी छात्र एवं युवा बेरोजगारों में व्यापक आक्रोश एवं असंतोष व्याप्त है,

अत: आज सदन की कार्यवाही स्थगित कर इस अविलंबनीय लोक महत्व के विषय पर चर्चा कराई जाये. इसके संबंध में शासन क्या कहना है ? (व्यवधान).

अध्यक्ष महोदय--नहीं, आप सुनना चाहते हैं कि नहीं ?

एक माननीय सदस्य--माननीय अध्यक्ष जी, कमलेश्वर पटेल सदस्य तो सदन में मौजूद ही नहीं हैं. (व्यवधान).

डॉ.नरोत्तम मिश्रा--आप अपने नेता जी से कहो अपने नेता जी से.

श्री उमाशंकर गुप्ता--अपने नेता से पूछो अपने नेता से.

एक माननीय सदस्य--यही तो कथनी और करनी मे अंतर है और नहीं मानना है तो और कोई बनाओ. (व्यवधान).

एक माननीय सदस्य--आरिफ भाई, अगर नेता जी आपसे नहीं पूछछ रहे हैं तो आप अलग बैठने की व्यवस्था करो.

अध्यक्ष महोदय- माननीय सदस्य कृपया, बैठ जायें. आपने अनके बार प्रश्नकाल स्थगित कर चर्चा कराने की मांग पहले भी की. प्रति दिन कहीं ना कहीं से यह बात आती रही.

आज फिर से यह बात आपने कही है. अब आपके कई स्थगन प्रस्ताव भी हैं. कई माननीय सदस्यों ने दिये हैं. अब उसको दोनों पक्षों की सहमति से, आपने प्रस्ताव रखा और आपने (मुख्यमंत्री जी की ओर इशारा करते हुए) स्वीकार किया. उसकी चर्चा कराई जा रही है. इसके बाद अब क्या प्रश्न उठ रहा है.

श्री आरिफ अकील -- अध्यक्ष महोदय, जो प्रश्न आज प्रश्नोंत्तरी में आये हैं. उनको आप बाद में लेंगे.

अध्यक्ष महोदय -- पहले इस पर चर्चा होने दें. कृपया आप चर्चा प्रारंभ करें.

तकनीकी शिक्षा मंत्री (श्री उमाशंकर गुप्ता) -- अध्यक्ष महोदय, मध्यप्रदेश की सरकार ने खुद होकर..

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- अध्यक्ष महोदय, अदालत ने आदेश दिया है और जनता अदालत में गयी है. जनता की आवाज कांग्रेस ने उठाई है.

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- कृपया बैठ जायें. ..(व्यवधान).. आप लोग शासन का उत्तर सुनना चाहते हैं कि नहीं . आपने बार बार प्रश्नकाल स्थगित कराया है,मार्च में भी कराया था. मैंने आपसे हमेशा अनुरोध किया...

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- मुख्यमंत्री जी, अगर हिम्मत है तो आप इसकी सीबीआई से जांच के आदेश करें.

अध्यक्ष महोदय -- तिवारी जी, आप कृपया बैठ जायें.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- मुख्यमंत्री जी, आप हिम्मत दिखायें.

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- तिवारी जी, आप कृपया बैठें. आप कृपया बैठ जाइये. यह बात ठीक नहीं है. सदन के नेता खड़े हुए हैं,आपको बैठना चाहिये. आप मर्यादाओं का पालन कीजिये, आप वरिष्ठ सदस्य हैं.

श्री शिवराज सिंह चौहान -- अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रतिपक्ष के मित्र कई दिनों से इस मामले को उठा रहे हैं. सदन के बाहर भी उठा रहे हैं. सरकार पर आरोप लगाये जा रहे हैं. भ्रम का जाल फैलाया जा रहा है.

श्री रामनिवास रावत -- अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी भाषण दे रहे हैं. आपने उनको भाषण की अनुमति दी है क्या. ..(व्यवधान).. यह हमारी आपत्ति है.

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- आप लोग कृपया बैठ जायें.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- मुख्यमंत्री जी, हमारी मांग सीबीआई से जांच कराने की है. अगर आपमें हिम्मत है तो सीबीआई की जांच की घोषणा करें.

श्री शिवराज सिंह चौहान -- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रतिपक्ष से प्रार्थना करता हूं...

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- माननीय तिवारी जी, नहीं, आप बहस में बोलिये ना. आप बहस में बोलिये. आप अपनी बात रखिये ना. आप चर्चा तो प्रारंभ होने दीजिये. आप बात ही नहीं करना चाहते.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- अध्यक्ष महोदय, सामान्य प्रक्रिया से हटकर मुख्यमंत्री जी बोल रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय -- नहीं, कहां सामान्य प्रक्रिया से हटकर बोल रहे हैं. स्थगन प्रस्ताव आपने दिया है. आप कृपया बैठ जायें. तिवारी जी, आप बैठ जायें.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- मुख्यमंत्री जी, आप घोषणा करिये कि सीबीआई से इसकी जांच करायेंगे.

अध्यक्ष महोदय -- नहीं, यह बात ठीक नहीं है. नेता प्रतिपक्ष जी से अनुरोध है कि वे उनको बोलें कि वे बैठ जायें. सदन के नेता खड़े हैं. (नेता प्रतिपक्ष द्वारा सत्ता पक्ष के खड़े हुए सदस्यों की ओर इशारा किया गया) आप जब बोलेंगे, तो मैं उनको भी बिठा दूंगा.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, एक मिनट.

अध्यक्ष महोदय -- पहले सदन के नेता बोलें, फिर आप बोलें.सदन के नेता के बोलने के बाद फिर आपको अवसर देंगे.

श्री शिवराज सिंह चौहान -- मैं प्रतिपक्ष से प्रार्थना करता हूं कि स्थगन ग्राह्य किया गया है, तत्काल चर्चा प्रारंभ करें, तथ्य रखें. मैं एक एक आरोप का उत्तर दूंगा. मेरा निवेदन है कि चर्चा प्रारंभ कीजिये. अध्यक्ष महोदय, आपसे भी प्रार्थना है कि चर्चा प्रारंभ करवाइये.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, हमें यह मालूम नहीं था कि आसंदी सदन का प्रस्ताव मंजूर करेगी कि सदन के नेता का. जब नेता प्रतिपक्ष ने मांग यह की कि हमारे सदस्यों ने नियम 139 के तहत चर्चा की मांग की है, आपने वह मंजूर नहीं किया. मुख्यमंत्री जी ने कहा कि स्थगन आये हैं, आप मंजूर करिये, तो आपने मंजूर कर लिया.

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- मेरे से कहा है, मैं इसका उत्तर दूंगा. आप लोग बैठ जाइये. उन्होंने मेरे से प्रश्न पूछा है. आप लोग बैठ जाइये. ...

श्री कमलेश्वर पटेल -- अध्यक्ष महोदय, हमें कोई सूचना नहीं दी. हमें जो आपका पत्र मिला था, उसमें यह उल्लेख था कि इस पर सूचित किया जायेगा.

अध्यक्ष महोदय -- आप कृपया बैठ जाइये.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा -- अध्यक्ष महोदय, ऐसी दुर्गति विपक्ष की कभी नहीं हुई है जैसी आज हो रही है.
श्री सत्यदेव कटारे--अभी पता लग जायेगा, आप बैठो तो. अभी पता लगेगा शांत रहो जरा.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा -- आप चर्चा करिये. आप चर्चा से भाग रहे हो. इतनी दुर्गति विपक्ष की कभी नहीं हुई.

श्री सत्यदेव कटारे-- हम चर्चा कर रहे हैं . सब तैयार हैं.

अध्यक्ष महोदय-- आप सब बैठिये. नेता प्रतिपक्ष ने मेरे को कहा है तो कृपया आप बात सुन लें. आपने कहा कि पिछले सत्र से अभी तक लगातार आपने यहां भी और कक्ष में भी चर्चायें की है कि स्थगन प्रस्ताव लिया जाये. यह कोई आज की बात नहीं है , (नेता प्रतिपक्ष के खडे होने पर) आप पहले मेरी बात को सुन लें, मैंने आपकी पूरी बात सुनी है. आपने निरंतर मार्च के सत्र में भी प्रश्नकाल बाधित किया था . आप जरा रिकार्ड उठाकर के देख लें, बार बार मैंने अनुरोध किया . मैंने नियम बताये पर आप नहीं माने. अब आपके माननीय सदस्यों ने और मैं ऐसा मानता हूं कि आपकी सहमति से क्योंकि आप नेता प्रतिपक्ष हैं, यह स्थगन प्रस्ताव दिये. या तो आप उनको रोक देते कि नहीं अभी इस विषय पर चर्चा नहीं होगी. अथवा आप प्रश्नकाल के बाद यह विषय उठाते कि आपकी तैयारी नहीं है इस विषय पर ? क्योंकि 3 महीने से आप यह विषय उठा रहे हैं, यहां पर भी उठा रहे हैं और सड़कों पर भी उठा रहे हैं. मुझे कहना नहीं चाहिये. यदि आप चाहें तो इस पर चर्चा हो . आज दोनों पक्ष सहमत हैं, जहां तक इसका विषय है बार बार यह विषय उठ रहा था मैंने पहले भी ग्राह्य करने के पहले इसको कहा कि यद्यपि यह मामला सब-ज्यूडिस है पर आपके आग्रह पर और सदन के नेता के भी आग्रह पर इसको स्वीकार किया तो आप दोनों का आग्रह मानकर के मैंने

कोई गलती की क्या. आपको बहस नहीं करना है तो आप बोल दीजिये कि हमें इस पर बहस नहीं करना है. आपके सदस्य माननीय कमलेश्वर पटेल जी ने यह स्थगन प्रस्ताव दिया है और उसमें लिखा है कि अत: आज सदन की कार्यवाही स्थगित कर इस अविलंबनीय लोक महत्व के विषय पर चर्चा कराई जाये. चर्चा करा रहे हैं तो आप कार्यवाही रोक रहे हैं.

मंत्री, पंचायत एवं ग्रामीण विकास (श्री गोपाल भार्गव)-- अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि आप तो स्थगन प्रस्ताव की सूचना पढ़ें.

अध्यक्ष महोदय-- मैंने स्थगन प्रस्ताव की सूचना पढ़ दी है . पर यह बहस करने को तैयार नहीं हो रहे हैं.

श्री कमलेश्वर पटेल -- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम चर्चा करने को तैयार हैं .

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, मुझे कुछ निवेदन करना है.

अध्यक्ष महोदय- बोलिये. वैसे रावत जी को समय दिया था.

श्री सत्यदेव कटारे-- समय उनको दे दिया पर मैं जरूरी निवेदन करना चाहता हूं आप अनुमति दें तो पहले कर देता हूं नहीं तो फिर उनके कहने के बाद निवेदन करूंगा.

अध्यक्ष महोदय-- आप बोलिये, आपका अधिकार है.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, आपने कक्ष की चर्चा का उल्लेख किया. हम कभी कक्ष की चर्चा को सदन में नहीं लाना चाहते और कक्ष की चर्चा सदन में कभी आना भी नहीं चाहिये. लेकिन अध्यक्ष महोदय आज चूंकि आरोप विपक्ष पर लग रहा है और हमारे पास बचाव के लिये इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है कि मैं कक्ष की चर्चा का भी यहां पर जिक्र करूं.

अध्यक्ष महोदय-- नहीं, आप जिक्र मत करिये.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, मेरी बात पूरी सुन लीजिये. अध्यक्ष महोदय, आपने कल मेरे से निवेदन किया था कि नेता जी आप प्रश्नकाल शुरू होने के पहले व्यापम का मामला उठाना, हम मंजूर कर लेगे, बोलो आपने कहा था कि नहीं कहा था, बोलो कहा था कि नहीं.

...व्यवधान...

अध्यक्ष महोदय-- तो मंजूर कर लिया न. मंजूर किया कि नहीं.

श्री सत्यदेव कटारे-- आपने कक्ष में यह कहा था कि नहीं.

अध्यक्ष महोदय-- हमने आपकी बात मंजूर की या नहीं की ?

...व्यवधान...

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय आप इनके (सत्ता पक्ष) जाल में फंस गये .

अध्यक्ष महोदय-- आपकी बात मंजूर की कि नहीं की. आप जो बात उठा रहे हैं आपको उठाना नहीं चाहिये था. आपने उठाई और मैंने मंजूर की. क्या मैंने इसमें कोई गलती कर दी.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, हमें यह मालूम नहीं था कि हमारी आसंदी भी सत्ता पक्ष के जाल में मिलकर के विपक्ष को जाल में फंसायेगी.

(सत्ता पक्ष के सभी सदस्य अपने अपने स्थान पर खडे होकर के एक साथ बोलने लगे)

...व्यवधान...

अध्यक्ष महोदय-- यह बात ठीक नहीं है.

...व्यवधान...

श्री कैलाश विजयवर्गीय -- अध्यक्ष महोदय, यह घोर आपत्तिजनक है.

....व्यवधान...

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- मेरा व्यवस्था का प्रश्न है. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- कृपया बैठ जायें. (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—XX

(व्यवधान)

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- यह बात करने का तरीका है? (व्यवधान) आप विषयान्तर करके, चर्चा से भाग रहे हैं.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- बात करेंगे. हिम्मत है तो सीबीआई जांच के आदेश दें.

(कांग्रेस पार्टी के सदस्य श्री सुन्दरलाल तिवारी अपनी बात कहते हुए, प्रथम पंक्ति तक आये और वापस चले गये.)

अध्यक्ष महोदय-- आप कृपया बैठ जायें. आप सुन लीजिए.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- चर्चा करिये ना. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- इन्होंने आरोप लगाया उसका उत्तर दे दूं.. चलिये रावत जी बोलिये.(व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—XX

एक माननीय सदस्य-- नेता प्रतिपक्ष जैसा व्यक्ति इस तरह के शब्दों का उपयोग कर रहा है. (व्यवधान) कटारे जी माफी मांगो.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- नेता प्रतिपक्ष व्यापम पर चर्चा करना चाहते हैं या नहीं. "हां" या "ना"

श्री सत्यदेव कटारे-- चाहते हैं. हमारे सदस्य बोलेंगे.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- तो करो ना.

श्री सत्यदेव कटारे-- पहले इनका खुलासा तो हो जाये.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- काहे का खुलासा?

श्री सत्यदेव कटारे-- ये षडयंत्र का...(व्यवधान)

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष व्यापम पर चर्चा करना चाहते हैं या नहीं? (व्यवधान)

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- (XX)...(व्यवधान)

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- ये तो रीवा की जनता ने बता दिया. (व्यवधान)

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- रीवा की जनता ने भेजा है.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- एक लाख से हराकर भेजा है. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- एक मिनट मेरी सुन लें.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- अध्यक्षजी, ये व्यापम पर चर्चा चाहते हैं कि नहीं? इधर-उधर न जाये. व्यापम पर चर्चा चाहते हैं या नहीं? आपने स्थगन पढ़ा है.

डॉ गौरीशंकर शेजवार-- अध्यक्ष महोदय, मेरा विनम्र अनुरोध है. पहले आसंदी पर जो आक्षेप लगायें हैं. श्री कैलाश विजयवर्गीय जी ने जो प्वाइंट ऑफ आर्डर उस विषय पर उठा रहे हैं. इनको समय दिया जाये.आसंदी पर आक्षेप सामान्य बात नहीं है.

श्री सत्यदेव कटारे-- लगाये हैं, लगाये हैं. मैं कह रहा हूं लगाये हैं. अगर इनमें हिम्मत है तो मना करें.

अध्यक्ष महोदय-- मेरे में हिम्मत है. मेरे में हिम्मत है.

श्री सत्यदेव कटारे-- इन्होंने घर बुलाकर बोला कि नहीं.

अध्यक्ष महोदय-- मेरे में हिम्मत है. मैं अभी बोलता हूं आपको.(व्यवधान)

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- (XX). (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- बैठ जाईये. मैं आपकी बात का उत्तर देता हूं. (व्यवधान)

डॉ मोहन यादव-- अध्यक्षजी, पहले माननीय मंत्री कैलाश विजयवर्गीयजी प्वाइंट ऑफर आर्डर उठा रहे हैं, कृपया उनको मौका दें और अगर नेता प्रतिपक्ष को यह बात लगती है कि उनको उत्तर सुनने में कठिनाई हो रही है या तो वो संसदीय परम्पराओं का पालन करते हुए अपनी पूरी बात विस्तार से रखें.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- अध्यक्ष महोदय, विषयान्तर करने की कोशिश की जा रही है. जो आपने अभी स्थगन पढ़ा है उस पर चर्चा होना चाहिए. सदन नियम-प्रक्रियाओं के तहत सदन चलेगा. मान्य परम्पराओं के तहत चलेगा. मेरी आपसे गुजारिश है कि कांग्रेस के सदस्य स्थगन पर चर्चा चाहते हैं या नहीं. 'हां' या 'ना' तो बोलें.

(विपक्ष की ओर से कहा गया 'चाहते हैं')

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- तो करें. शुरु करें.

श्री सत्यदेव कटारे-- आसंदी ने हमारे ऊपर आरोप लगाया था इसलिए हमने आसंदी की पोल खोली.

अध्यक्ष महोदय-- क्या आरोप लगाया था.(व्यवधान) बैठ जाईये. मुझे बोलने दीजिए.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- विपक्ष के नेताजी असंसदीय आरोप लगा रहे हैं. आप व्यापम की चर्चा से पलायन कर रहे हैं. आप चर्चा करिये. शुरु करिये.

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- अध्यक्ष महोदय, घोर आपत्तिजनक है. आसंदी पर एक के बाद एक आरोप लग रहे हैं. विषय पर चर्चा नहीं कर रहे हैं. विषय को डायवर्ट कर रहे हैं.

श्री यशपाल सिंह सिसोदिया-- नेता प्रतिपक्ष क्षमा मांगिये.

अध्यक्ष महोदय-- इसके बाद मैं प्वाइंट ऑफ ऑर्डर सुनूंगा. माननीय प्रतिपक्ष के नेताजी ने अत्यन्त गंभीर बातें कहीं हैं.

श्री गोपाल भार्गव-- अध्यक्ष महोदय, यह असहनीय है. आप कृपा कर मेरा निवेदन सुन लें. यह असहनीय है. (व्यवधान) मैं, नेता प्रतिपक्ष के विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव लाता हूं. **(सत्ता पक्ष की ओर से कहा गया 'हम समर्थन करते हैं') (मेजों की थपथपाहट)** यह असहनीय है.यह अभूतपूर्व है. यह सदन में कभी नहीं हुआ. सामान्य रुप से नहीं करते हैं जैसा नेता प्रतिपक्ष ने किया है.

श्री सत्यदेव कटारे-- अगर असत्य हैं....(व्यवधान)

श्री गोपाल भार्गव-- मैं इसकी निन्दा करता हूं. घोर निन्दा करता हूं.

अध्यक्ष महोदय-- बैठ जायें. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय – नेता प्रतिपक्ष महोदय ने जो आरोप लगाये हैं वह विलोपित किये जाते हैं.... (व्यवधान) ----

श्री गोपाल भार्गव – माननीय अध्यक्ष महोदय, सामान्यत: ऐसा नहीं होता है जैसा कि नेता प्रतिपक्ष ने किया है. मैं यहां पर नेता प्रतिपक्ष की निंदा करता हूं. घोर निंदा करता हूं.

श्री सत्यदेव कटारे – अगर आरोप असत्य हैं तो विलोपित न करें सजा दें..(व्यवधान).. अध्यक्ष महोदय अगर आरोप गलत हैं तो सजा दीजिये विलोपित न करें...(व्यवधान)..

डॉ नरोत्तम मिश्रा – यह विषयांतर कर रहे हैं...(व्यवधान) आप यह बतायें कि कांग्रेस व्यापम पर चर्चा चाहती है या नहीं.

श्री सुन्दरलाल तिवारी – चाहती है....(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय – आप कृपया बैठ जायें मंत्री जी ...(व्यवधान)..

डॉ मोहन यादव – माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से माननीय नेता प्रतिपक्ष व्यवहार कर रहे हैं वह अशोभनीय है...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय – कृपया आप सभी लोग बैठ जायें. प्रतिपक्ष के नेता जी, अनेक दिनों से यह चर्चाएं चल रही थी. यदि मैं इस पर चर्चा नहीं कराता तो आप आरोप लगा रहे थे कि आप प्रतिपक्ष की नहीं सुनते हैं सत्तापक्ष की सुनते हैं. यदि मैं यहां पर चर्चा करा रहा हूं तो आप आरोप लगा रहे हैं. यदि मैंने आपको कक्ष में आश्वासन दिया है तो कोई गलती की है क्या आपने मांगा , तो मैंने दिया. अब आप उस बात को लेकर के मुझे ही आरोपित कर रहे हैं कि आपने ऐसा क्यों कहा है. यह बात बिल्कुल गलत है और अनुचित है. जब आपका स्थगन नहीं लेते हैं तो आप आरोप लगाते हैं. आपका स्थगन लेते हैं तो आरोप लगाते हैं. क्या सारी चीजें इस तरह से चलेंगी और क्या इस तरह से आरोप लगाया जाना उचित होगा. मेरा दोनों पक्षों के माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि जो विषय आ गया है उस विषय पर चर्चा करें. ताकि कोई अनावश्यक विवाद न हो. यदि इस चर्चा पर कोई आपत्ति है तो आप जरूर बोलिये. बाकी कोई बात नहीं बोलें तो अच्छा रहेगा.

श्री कैलाश विजयवर्गीय – माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि नेता प्रतिपक्ष ने जो आरोप लगाये हैं यह उनके विवेक पर है कि वह माफी मांगे या नहीं, कम से कम आप रिकार्ड से विलोपित करेंगे तो बेहतर होगा.

अध्यक्ष महोदय – वह आरोप विलोपित कर दिए हैं.

श्री सत्यदेव कटारे – माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं विस्तार से कहना चाहता हूं.

अध्यक्ष महोदय – अब इस पर..

श्री सत्यदेव कटारे – बिल्कुल बोलूंगा....(व्यवधान)..

डॉ नरोत्तम मिश्रा – अध्यक्ष महोदय, यह फिर से विषयांतर कर रहे हैं..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय – जो कुछ कमलेश्वर पटेल कहेंगे वह ही लिखा जायेगा .

डॉ नरोत्तम मिश्रा -- अध्यक्ष महोदय, इस तरह से मनगढंत आरोप हमारे बेदाग मुख्यमंत्री पर और भाजपा पर लगाने की कोशिश की है. अगर इनके पास में तथ्य हैं तो यहां पर रखें....(व्यवधान)..

श्री सुन्दरलाल तिवारी – (X X)

अध्यक्ष महोदय – आप उनको बोलने दें आपके ही सदस्य हैं....(व्यवधान)..

डॉ नरोत्तम मिश्रा – माननीय अध्यक्ष महोदय, दूध का दूध और पानी का पानी प्रदेश की जनता देखेगी. आप तत्काल चर्चा प्रारम्भ करायें.....(व्यवधान) ...

अध्यक्ष महोदय – सारे आरोप आपके असत्य हैं...(व्यवधान) अब यह बहस का विषय नहीं है. आपके सारे आरोप असत्य है....(व्यवधान)..

श्री कैलाश विजयवर्गीय – अध्यक्ष महोदय, यह व्यापमं पर चर्चा नहीं कराना चाहते हैं.... (व्यवधान) ..

श्री सुन्दरलाल तिवारी – माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मुख्यमंत्री जी ने मजबूर होकर स्वीकार किया है. जब कार्य मंत्रणा की बैठक में हम लोगों ने स्वीकार नहीं किया है..(व्यवधान).....

मुख्यमंत्री (श्री शिवराज सिंह चौहान) - माननीय अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पाखंड कर रही है, कीचड़ उछालकर चर्चा से भागने का काम कर रही है. (मेजों की थपथपाहट)..

श्री सुन्दरलाल तिवारी - बिल्कुल नहीं, हम चर्चा चाहते हैं खुले मन से, षड्यंत्रपूर्वक नहीं. (व्यवधान)...

श्री कमलेश्वर पटेल - चर्चा होगी.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -(व्यवधान)...मुख्यमंत्री जी, षड्यंत्री की तरह आपने काम किया है.

श्री कमलेश्वर पटेल (सिहावल) - माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या मध्यप्रदेश व्यावसायिक परीक्षा मंडल में घोटाला हुआ है, यह हम आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से जानना चाहते हैं, भ्रष्टाचार

हुआ है कि नहीं? (व्यवधान)...क्या मध्यप्रदेश शासन के पूर्व तकनीकी शिक्षा मंत्री जेल में हैं? हम मुख्यमंत्री, सदन के नेता से यह जानना चाहते हैं.

अध्यक्ष महोदय - यह प्रश्नकाल नहीं है, आप तथ्य रखें.

श्री कमलेश्वर पटेल - यह हमारे स्थगन प्रस्ताव से जुड़ा हुआ मामला है...

श्री सत्यदेव कटारे - अध्यक्ष महोदय, जब आप स्थगन प्रस्ताव पढ़कर सुनाते हैं. सबसे पहले सत्तापक्ष उस पर अपना जवाब पढ़कर सुनाता है और उसके बाद फिर चर्चा शुरू होती है.

संसदीय कार्यमंत्री (डॉ. नरोत्तम मिश्रा)- माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्राह्यता पर चर्चा होती है, जबकि यह स्वीकार हुआ है. (व्यवधान)...अध्यक्ष जी, प्रबोधन कार्यक्रम और कर लें.

श्री सत्यदेव कटारे - ग्राह्यता पर ही इधर से जवाब आएगा. (व्यवधान)..

श्री कैलाश विजयवर्गीय - एक प्रबोधन नेता प्रतिपक्ष के लिए भी करा लीजिए.

अध्यक्ष महोदय - सत्तापक्ष से पूछा था तो उन्होंने कहा कि ग्राह्य करें, अब इस पर चर्चा होगी, तब उत्तर देंगे.

श्री सत्यदेव कटारे - नहीं, अध्यक्ष महोदय, उसके बाद तो आप निर्णय देते हैं कि दोनों पक्षों को सुनने के बाद हम उसे ग्राह्य नहीं करते. लेकिन सत्तापक्ष का उत्तर पहले आ जाता है.

अध्यक्ष महोदय - माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी, यह ग्राह्यता पर चर्चा नहीं है. यह चर्चा अब स्थगन प्रस्ताव पर है. इसको चर्चा के लिए ग्राह्य कर लिया है.

श्री सत्यदेव कटारे - तो सरकार क्या कह रही है इसको पहले बताएं.

अध्यक्ष महोदय - आप चर्चा करिए. (व्यवधान)...

श्री सत्यदेव कटारे - सरकार अपना जवाब दे. (व्यवधान)..

श्री कैलाश विजयवर्गीय - अध्यक्ष महोदय, हमें तो हंसी आ रही है.

अध्यक्ष महोदय - अब मैं क्या बताऊं, कक्ष में आने की बोल नहीं सकता. नहीं तो आप कहते हैं कि मैं पोल खोल दूंगा. अब मैं बताऊं क्या आपको? क्या पूरी किताब खोलकर पढ़वाऊं? यह नियम है. यदि ग्राह्य कर रहे हैं तो उस पर पहले चर्चा होती है फिर शासन का उत्तर होता है, आप पढ़ लीजिए.

श्री सत्यदेव कटारे - अध्यक्ष महोदय, आप तो नियम का उल्लेख कर दीजिए, नियम का उल्लेख करके बता दीजिए?

वन मंत्री (डॉ. गौरीशंकर शेजवार) - अध्यक्ष महोदय, बीन बजाने के बराबर है इनके सामने कहना.

श्री कमलेश्वर पटेल - यह तो सरकार के सामने है बीन बजाने जैसा. माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे मध्यप्रदेश में आज स्थिति ऐसी हो गई है कि मध्यप्रदेश के युवा शिक्षित बेरोजगार और मध्यप्रदेश के जो पढ़े-लिखे योग्य प्रतिभावान छात्र थे, आज उनका भविष्य अंधकारमय है. इस बीच में 7-8 साल में जो भ्रष्टाचार हुआ है, उसके कारण आज कई ऐसे प्रतिभाशाली छात्र हैं जो कोमा में चले गये हैं. उनके लिए सरकार की क्या चिंता है?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मध्यप्रदेश सरकार मंत्रियों और जो लोग इसमें शामिल हैं, उनको बचाने का काम कर रही है. क्या विपक्ष में बैठे सदस्यों का या हम लोगों का कोई गुनाह है, जो हम बात कर रहे हैं कि सीबीआई से जांच कराने में सरकार को क्या तकलीफ है? अगर आप बिल्कुल पाक-साफ हैं तो सरकार को कोई चिंता नहीं होना चाहिए. अब तो दोनों जगह आपकी सरकार है. क्या माननीय मुख्यमंत्री महोदय को मोदी जी पर विश्वास नहीं है? आज युवा बेरोजगारों के साथ इतना बड़ा अन्याय हुआ है और प्रतिभाशाली छात्रों के साथ प्रदेश सरकार ने इतना बड़ा अन्याय किया है. यह बहुत चिंता का विषय है. यह पूरे देश में चर्चा का विषय है. यह हमारे लिए (XX) की बात है. ऐसे अविलंबनीय विषय पर आपसे निवेदन करेंगे कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय व्यापमं घोटाले को सीबीआई जांच के लिए केन्द्र सरकार को सौंपे, जिससे जो हमारे युवा बेरोजगार हैं, जो प्रतिभाशाली छात्र हैं जिनके भविष्य के साथ अन्याय हुआ है. उनको न्याय मिल सके. जो पढ़े-लिखे प्रतिभाशाली छात्र इन 5-6 सालों में इस भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ें हैं उनके लिए सरकार क्या करने जा रही है? उनके साथ तो बहुत बड़ा अन्याय हुआ है.

माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार बिलकुल नहीं चाहती कि सी.बी.आई. जांच हो. अध्यक्ष महोदय, उसके लिए आपको पहल करनी होगी और हम उसके लिए आपका स्वागत भी करते हैं जो आज इस विषय पर आपने चर्चा के लिए सदन में हम लोगों को, विपक्ष को समय दिया है और सत्ता पक्ष ने स्वीकार किया है. अध्यक्ष महोदय, पर ये सिर्फ चर्चा तक सीमित न रहे तह तक जाना चाहिए. हम जानना चाह रहे हैं कि

व्यावसायिक परीक्ष मंडल में घोटाला हुआ तभी तो आज माननीय पूर्व, अब माननीय मंत्री जी को क्या माननीय कहें जो आज जेल के अन्दर सलाखों के पीछे हैं. कई अधिकारी भी सलाखों के पीछे हैं. तो क्या सरकार की नैतिक जिम्मेदारी नहीं बनती थी. इतना बड़ा घोटाला इतने साल से चलता रहा, माननीय मुख्यमंत्री जी मूक दर्शक थे. अध्यक्ष महोदय, क्या यह सरकार की असफलता नहीं है? बहुत चिन्ता का विषय है और यह एक ही जगह का घोटाला नहीं है. व्यावसायिक परीक्षा मंडल के माध्यम से इस बीच में चाहे पटवारी की भर्ती हुई हो, चाहे परिवहन विभाग में आरक्षकों की भर्ती हुई हो. जितनी भी व्यापम के माध्यम से भर्तियां हुई हैं सभी जगह भारी भ्रष्टाचार हुआ है, भारी घोटाला हुआ है. अध्यक्ष महोदय, यह हम युवाओं के लिए बहुत चिन्ता का विषय है. आज जहां देश बहुत आगे की ओर बढ़ रहा है वहीं मध्यप्रदश सरकार बातें तो बहुत अच्छी अच्छी करती है पर सच्चाई में अगर आप जायेंगे तो सभी जगह इतना भ्रष्टाचार है, व्यावसायिक परीक्षा मंडल से ज्यादा ज्यादा बड़े घोटाले सामने आएँगे. अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से हमारा सरकार से और सरकार के मुखिया से है विनम्र निवेदन है कि इसकी सी.बी.आई. जांच कराये जिससे दूध का दूध और पानी का पानी हो सके. धन्यवाद.

वन मंत्री (डॉ. गौरीशंकर शेजवार)-माननीय अध्यक्ष महोदय, " खोदा पहाड़ और निकली चुहिया "

एक माननीय सदस्य—सी.बी.आई. से जांच करा लें पता चल जाएगा कि चुहिया है कि क्या है. (व्यवधान)

डॉ.गौरीशंकर शेजवार- अध्यक्ष महोदय, एक वाक्य बोला और दस लोग(XX). मैने किसी से कुछ कहा नहीं. किसी का नाम नहीं लिया. अध्यक्ष महोदय, उम्मीद यह थी ..

पंचायत और ग्रामीण विकास मंत्री (श्री गोपाल भार्गव)- इतनी पूअर और लचर ओपनिंग, उस स्थगन पर जिसका बहुत बड़ा नाटक बनाया जा रहा था.

अध्यक्ष महोदय—माननीय सदस्य अभी नये सदस्य हैं. इसलिए यह उचित नहीं है. (व्यवधान.) मंत्री जी आप अपना वक्तव्य जारी रखें.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार—माननीय अध्यक्ष महोदय, बड़ी पुरानी परंपरागत कहावत है कि " होम करते हाथ जले " माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो कांग्रेस के द्वारा, इनके मुख्यमंत्रियों द्वारा, जिस तरीके से कांग्रेस के जमाने में नौकरी होती थी, (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, क्या यह व्यवस्था का प्रश्न है? (व्यवधान)

डॉ.गौरीशंकर शेजवार—कांग्रेस के मुख्यमंत्रियों ने जिस तरह से नौकरियो में प्रदूषण फैलाया था उसकी शुद्धीकरण के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी ने, अध्यक्ष महोदय, वायु मंडल के शुद्धीकरण के लिए यह किया था, जिस तरीके से प्रदूषण फैलाया था , माननीय मुख्यमंत्री जी ने उस प्रदूषण को समाप्त करने के लिए व्यापम को तमाम अधिकार दिये कि व्यापम में पहले परीक्षाएं होंगी. इसके बाद फिर नियुक्तियां होंगी. अरे आप लोग भूल गये. सिगरेट की पन्नियों पर आपने नौकरियां लगवा दीं. (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे— अध्यक्ष महोदय,ये क्या करवा रहे हैं, क्या यह सरकार का जवाब है? सदस्य बोलेंगे . ये मंत्री हैं. यह किस नियम के तहत बोल रहे हैं? आप यह सदन में क्या करवा रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय—स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है.

श्री सत्यदेव कटारे—यह सरकार का जवाब दे रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय—सरकार का जवाब नहीं है.

श्री सत्यदेव कटारे—फिर यह क्यों बोल रहे हैं. इसमें सदस्य बोलेंगे, यह मंत्री हैं.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—ऐसा नहीं है आप देख लें.

श्री सत्यदेव कटारे—मैंने नियम पूछा है. नियम बताएं.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—मैं नियम ही बता रहा हूं.

श्री सत्यदेव कटारे—सरकार के मंत्री का जवाब आ रहा है कि आपके दल का सदस्य बोल रहा है.

अध्यक्ष महोदय—नहीं, जब प्रस्ताव ग्राह्य हो जाता है, तो दोनों पक्षों के सदस्य बोलते हैं

श्री सत्यदेव कटारे—हम मानते हैं, पर यह सरकार के मंत्री बोल रहे हैं कि दल का सदस्य बोल रहा है?

श्री कैलाश विजयवर्गीय—अध्यक्ष महोदय, एक नेता प्रतिपक्ष के प्रबोधन का भी कार्यक्रम रख लीजिए, मुझे बहुत अफसोस हो रहा है, हंसी आ रही है कि इन्हें नियम और कानून की कोई जानकारी नहीं है.

श्री कृष्णकुमार श्रीवास्तव—इनकी नियुक्ति भी सिगरेट की पन्नी जैसी हुई है.

श्री सत्यदेव कटारे—आप तो सिर्फ यह बता दो कि यह सरकार के मंत्री बोल रहे हैं कि भाजपा के सदस्य बोल रहे हैं?

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—यह मंत्री के रूप में भी बोल सकते हैं, माननीय सदस्य के रूप में भी बोल सकते हैं.

श्री सत्यदेव कटारे—अभी कैसे बोल रहे हैं? अभी सदस्य के रूप में बोल रहे हैं कि सरकार के मंत्री बोल रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय—एक एक सदस्य की अनेक भूमिकाएं होती हैं और सारी भूमिकाओं में वह एक साथ उपस्थित हो सकता है. माननीय वरिष्ठ सदस्य बगल में बैठे हैं, वह समझाएं.

डॉ.गैरीशंकर शेजवार—अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था कि 2007 में व्यापम को यह अधिकार दिए गए कि वह नौकरियों में भर्ती के लिए परीक्षाएं भी आयोजित करवाएगा और शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए भी परीक्षाएं आयोजित करवाएगा. यह हमारी सरकार और माननीय मुख्यमंत्री जी की एक अच्छी सोच थी. भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने के लिए, नौकरियों में किस तरह से भ्रष्टाचार हो रहा था, उससे हर नौजवान को निष्पक्ष और न्याय दिलाने के लिए व्यापम में हमने नियुक्तियों के लिए परीक्षाएं करवाईं.

श्री कमलेश्वर पटेल—माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले सत्र में माननीय मुख्यमंत्री जी ने स्वीकार किया था कि भर्तियों में भ्रष्टाचार हुआ है.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार—अध्यक्ष महोदय, जो मेहनती, ईमानदार और योग्य छात्र हैं, उन्हें न्याय मिला है और उन्हें उनका अधिकार माननीय मुख्यमंत्री जी और सरकार के निर्णय से मिला है.

श्री सुंदरलाल तिवारी—यह जेल में कौन है? मंत्री सरेआम इस तरह का ब्यान दे रहे हैं, यह ब्यान है? जेल में लोग बंद हैं, निष्पक्ष परीक्षा यह करा रहे हैं? 400 लड़के जेल में हैं ? यह क्या स्टेटमेन्ट आप दे रहे हैं? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपया चर्चा होने दें माननीय सदस्य आपको भी अभी बोलने का अवसर मिलेगा. तब आप अपनी बात कहिएगा.

श्री सुंदरलाल तिवारी—अध्यक्ष महोदय, यह सरकार के मंत्री है और इस तरह बोलेंगे.

अध्यक्ष महोदय—दोनों पक्षों के सदस्य इस पर बोलेंगे, जब आपका अवसर आएगा तो आप अपनी बात कहिएगा

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—इनका तो स्थगन में नाम ही नहीं है. इन्होंने स्थगन ही नहीं दिया है.

श्री सुंदरलाल तिवारी—शेजवार जी आप अच्छे से देख लीजिए. हड़बड़ाईये नहीं.

अध्यक्ष महोदय—आप कृपया सुन लीजिए. आपके सदस्यों को भी अवसर मिलेगा.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार—अध्यक्ष महोदय, मेरे पास कुछ आंकड़े हैं, जिन्हें मैं सदन के सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं.

श्री सुंदरलाल तिवारी—पहले की बात वापिस ले लीजिए.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार—तो फिर हम लोगों को पहले की बहुत सी बातें वापिस लेना पड़ेंगी. तिवारी जी मेरा मुंह मत खुलवाओ. (xxx)

श्री सुंदरलाल तिवारी—जो आप करना चाहते हैं कर लें. मेरा चैलेन्ज हैं.

अध्यक्ष महोदय—कृपया आरोप प्रत्यारोप नहीं लगाएं. अध्यक्ष वाली बात कार्यवाही से निकाल दें.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार—आप ज्यादा बोलोगे तो मैं फिर बहुत से चीजें बोलूंगा

श्री सुंदरलाल तिवारी—आपकी जो इच्छा हो वह बोलिये, लेकिन सही बोलिये.

अध्यक्ष महोदय—कृपया आपस में आरोप नहीं लगाएं. सीधी बात कृपया न करें. माननीय तिवारी जी और माननीय मंत्री से अनुरोध है कि सीधी बात न करें. आसंदी के माध्यम से करें. आप कृपया बैठ जाएं.

श्री सुंदरलाल तिवारी—पूरे प्रदेश की जनता स दस साल से व्यापम के घोटालों को सह रही है.

अध्यक्ष महोदय—आप बैठिए, आपको और सबको बोलने का अवसर आएगा.

(xxx) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ व्यापमं के आंकड़ें प्रस्तुत करना चाहता हूँ. 7 वर्षों में 01 लाख 27 हजार पदों पर भर्ती हुई. 01 करोड़ 23 लाख से ज्यादा अभ्यर्थियों ने इसमें भाग लिया और इन परीक्षाओं में बैठे. अध्यक्ष महोदय, इनमें से मात्र 228 नियुक्तियों में गड़बड़ पायी गई.

श्री सुन्दरलाल तिवारी—अभी जांच चल रही हैं.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार-- सारा हिसाब दे रहा हूँ भाई, सुनो तो आप, सुनते नहीं हो, कुछ भी बोले जाते हो. यदि कमी और गड़बड़ी का हम प्रतिशत देखें तो 01 लाख 27 हजार पदों पर भर्ती हुई. 01 करोड़ 23 लाख से ज्यादा अभ्यर्थी उसमें बैठें. इनमें 228 नियुक्तियों में गड़बड़ पायी गयी और इसका हम प्रतिशत देखें तो .001% है. हम कोई अच्छा काम करते हैं तो नीयत अच्छी होना चाहिए, नियम अच्छे बनाना चाहिए और क्रियान्वयन अच्छा होना चाहिए और इसके बाद .001% की कोई कमी है तो उसके लिए भी माननीय मुख्यमंत्री जी ने कदम उठाये. (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय,एक बार फिर कहना चाहता हूँ कि आप व्यापमं को जो आप महाघोटाला कह रहे हो न,यह .001% पर महाघोटाला कह रहे हो और आपकी सिगरेट की पन्नी...

श्री गिरीश भण्डारी—माननीय, यह जो पकड़े गये हैं वे हैं,उनकी संख्या आप बता रहे हैं, जो नहीं पकड़ाये हैं उनका क्या होगा? उनकी भी जांच की जाए.

श्री कमलेश्वर पटेल—जिन प्रतिभावान युवाओं का,शिक्षित छात्रों का जो भविष्य खराब हुआ है उनके लिए सरकार क्या कर रही है, यह भी तो बतायें. जिनके साथ अन्याय हुआ है, जिनको न्याय नहीं मिल पाया पढ़े लिखे नौजवानों को, छात्रों को, उनके लिए सरकार क्या कर रही है. (व्यवधान)

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- जो पन्नियां फाइल में लगी हैं उन्हें निकालना पड़ेगा, पहले पूछ तो लो, नये नये आये हो नहीं तो उत्साह में कुछ गलत बोल जाओ. कमलेश्वर जी, कितनी पन्नियां निकलेंगी सोचना, बहुत लोग रहें हैं सदन में मेरे साथ विधायक, जरा ज्यादा बोलने से पहले उन पन्नियों की चिन्ता करना (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—माननीय मंत्री जी कृपया विषय पर आयें.(व्यवधान) आप लोग कृपया बैठ जायें.

श्री कमलेश्वर पटेल- अध्यक्ष महोदय, सही बात करना क्या गुनाह है.

श्री सुखेन्द्र सिंह-- सही बात बोलने से धमकाया जा रहा है.(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—मेरा माननीय सभी सदस्यों से और माननीय मंत्री जी से आग्रह है कि एक तो विषय पर आयें, दूसरा आसंदी की ओर मुखातिब होकर बोलें. व्यक्तिगत आरोप नहीं लगायें,असंसदीय शब्दों का उपयोग न करें. कृपया सभी सदस्य मर्यादा में रहें. बहस आपने मांगी, इसलिए आपको बहस सुनना चाहिए, चर्चाएँ सुनना चाहिए. कोई भी सदस्य विषय से बाहर नहीं जाए.

श्री घनश्याम पिरोनियां—माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि मंत्री जी हमारे सीनियर सदस्य को भी धमकी देंगे और जो नये सदस्य हैं उनको भी धमकी देंगें तो वे अपनी बात रख रहे हैं कि धमकी दे रहे हैं.इनको अपनी बात रखनी चाहिए.

अध्यक्ष महोदय—मैंने अभी सब से अनुरोध कर लिया.आप कृपया बैठे,इस विषय को बार बार न लें.अब उस विषय को बार बार नहीं लें, कृपया बैठ जाएं आप.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार—अध्यक्ष महोदय, शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेश के लिए विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की परीक्षाएँ हुईं 7 वर्षों में 70 परीक्षाएँ हुईं. 25 लाख 84 हजार परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी, 7 लाख 27 हजार सीटों के लिए चयन किया गया,इसमें कुल 293 सरकारी में और 131 निजी में एडमीशन निरस्त हुए . अब 7 लाख 27 हजार यदि सिलेक्शन में से इतनी नगण्य संख्या आई है तो उसके लिए भी सरकार ने पूरी चिंता की है . अध्यक्ष महोदय, इस तरीके से आपके द्वारा जो आऱोप लगाये जा रहे ,बहुत छात्र ईमानदार हैं, बहुत बड़ी संख्या में जिनका चयन हुआ है उन्होंने मेहनत की है, उन्होंने पढ़ाई की . आप जिस तरीके से व्यापमं पर और नियुक्तियों और सिलेक्शन पर यह जो आरोप लगा रहे हैं, ऐसे हजारों लोगों का अपमान कर रहे हैं औऱ यह निंदनीय है. अध्यक्ष महोदय, आगे आपको बताना चाहता हूं कि कुछ छात्रों ने गड़बड़ करी है..(व्यवधान)...

श्री सुंदरलाल तिवारी--- छात्रों ने ? यह क्या बोल रहे हैं आप.

एक माननीय सदस्य--- अधिकारियों ने और मंत्रियों ने गड़बड़ करी है.

श्री सुदंरलाल तिवारी--- सरकार ने औऱ तंत्र ने गड़बड़ी की है छात्रों ने गड़बड़ नहीं किया है.

एक माननीय सदस्य--- यह छात्रों का अपमान है.

अध्यक्ष महोदय--- कृपया आप सभी बैठ जाएं, पहले उनकी बात सुन लें.

एक माननीय सदस्य---- अध्यक्ष महोदय, छात्रों से पैसा लिया और उनकी जिंदगी बरबाद की है , छात्रों ने क्या गड़बड़ी की है.

अध्यक्ष महोदय--- आप अपनी बात जब आपका समय आए तब पूछना .

श्रीमती सरस्वती सिंह—आपने खुद गड़बड़ किया है छात्रों को क्यों दोषी ठहराते हैं.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार--- अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से जनता के सामने एक बात कहना चाहता हूं यह हमारे कांग्रेस के नेता प्रतिपक्ष छिंगली कटाकर शहीद बन रहे हैं. यह ऐसा प्रस्तुतीकरण कर रहे हैं कि इन्होंने ही पूरे मामले को उठाया है और ये ही उसके सूत्रधार हैं और एकमात्र यह ही आदमी हैं, जो कहीं गड़बड़ी और भ्रष्टाचार को खत्म करना चाहते हैं. भाईसाहब, वास्तव में यह स्थिति नहीं है. अध्यक्ष महोदय , मैं आपको बताना चाहता हूं कि 7 जुलाई को एक गुमनाम शिकायत, इन्दौर में क्राईम ब्रांच में प्राप्त हुई और उस गुमनाम शिकायत पर माननीय मुख्यमंत्री जी ने स्पेशल टास्क फोर्स से जांच करवाई. भारत में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि किसी मुख्यमंत्री ने गुमनाम शिकायत पर....

श्री सुदंरलाल तिवारी--- अध्यक्ष महोय, असत्य बोल रहे हैं,एक कमेटी बनाई थी...

अध्यक्ष महोदय--- जब आप अपनी बात बोले तब उस बात को कहिये.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार--- जब आपका टाइम आएगा तब आप बोलिये.

श्री सुंदरलाल तिवारी--- मतलब आप असत्य ही बोलेंगे. सही नहीं बोलेंगे.

श्री यशपाल सिंह सिसोदिया--- तिवारी जी को बार बार खड़े होने की बीमारी हो गई है.

अध्यक्ष महोदय--- सिसोदिया जी बैठ जाए.

एक माननीय सदस्य—तिवारी जी को नेता प्रतिपक्ष बनना है.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार--- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था कि 7 जुलाई 2013 को एक गुमनाम शिकायत क्राईम ब्रांच इन्दौर में हुई, पीएमटी में प्रवेश के विरुद्ध यह शिकायत थी. क्राइम ब्रांच ने कुछ होटलों में छापे मारे, कुछ संदिग्ध छात्र वहाँ मिले, उन्हको पकड़ा गया. बात माननीय मुख्यमंत्री

जी तक आई . मुख्यमंत्री जी ने कहा कि इस विषय की गहराई से छानबीन होना चाहिए और जाँच होना चाहिए औऱ उन्होंने मामले को स्पेशल टास्कफोर्स को दे दिया.

नेता प्रतिपक्ष(श्री सत्यदेव कटारे)--- डॉक्टर साहब, एक मिनट मैं कुछ कहना चाहता हूं.

अध्यक्ष महोदय--- माननीय नेता जी, आपका अवसर आएगा.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार--- अध्यक्ष महोदय, मेरा आरोप है कि इनके कानों में सुनने की गलत मशीन लगी है और मस्तिष्क में गलत समझने की मशीन लगी है इसमें मेरा दोष नहीं है...

एक माननीय सदस्य--- विपक्ष के नेता जी का इलाज करवाइए.

श्री सत्यदेव कटारे--- शेजवार साहब, मेरी बात सुनिये...

डॉ. गौरीशंकर शेजवार--- अध्यक्ष महोदय, मुझे सब बहुत ज्यादा डिस्टर्ब कर चुके हैं अब मुझे बोल लेने दीजिये. आपकी बारी आएगी तब आप बोल लीजिये, यह उचित नहीं है...(व्यवधान)....

अध्य़क्ष महोदय--- नेता जी, यदि वह नहीं बैठ रहे हैं तो आपको बैठना चाहिए यही मर्यादा है, आप बैठ जाए कृपया. आपका अवसर आएगा अभी.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार--- अध्यक्ष महोदय, विपक्ष द्वारा बार-बार सीबीआई जांच की मांग की गई , केवल मांग की गई इतना ही नहीं है, इन्होंने कई जनहित याचिकायें भी हाईकोर्ट में लगवाई. हाईकोर्ट की डबल बैंच ने यह फैसला किया कि एसटीएफ जो जांच कर रही है उस पर कहीं कोई शंका नहीं है, कोई संदिग्ध नहीं है औऱ जांच ठीक चल रही है. अध्यक्ष महोदय, इसके बाद हाईकोर्ट उसकी मॉनीटरिंग भी कर रही है. आप ठीक बोल रहे थे, मैं आपकी बात से सहमत हूं. आपने आसंदी से यह कहा था कि यह मामला सबज्यूडिश है हाईकोर्ट इसमें मॉनीटरिंग कर रही है इसलिए इस पर चर्चा नहीं होना चाहिए. इसके बाद भी हम उन पहलुओं पर बात नहीं कर रहे हैं जो हाईकोर्ट से जुड़े हैं लेकिन बाकी की जो बात है यह सदन के सामने औऱ जनता के सामने रख रहे हैं . यह मैं फिर से एक बार दोहरा रहा हूं कि भारत में ऐसा कोई मुख्यमंत्री नहीं है जिसने गुमनाम शिकायत के आधार पर एस टी एफ को जाँच दी हो. (मेजों की थपथपाहट) और सुप्रीम कोर्ट ने जिस एस टी एफ को सही ठहराया हो....

श्री कमलेश्वर पटेल-- माननीय अध्यक्ष महोदय, एस टी एफ किसके अधीन आती है यह हम जानना चाहेंगे.

एक माननीय सदस्य-- अभी हाईकोर्ट के अधीन है.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- अब बार बार जाँच की मांग आ रही है कि सी बी आई से जाँच होना चाहिए, यह मांग आ रही है. हम हाईकोर्ट के निर्देशन में चल रहे हैं, हाईकोर्ट के मार्गदर्शन में यह सब चल रहा है. मुख्यमंत्री जी, मैं समझता हूँ आज सरकार को यह अधिकार नहीं है कि हम उनको ओव्हर रूल करके, और सी बी आई के लिए हम बात करें....(व्यवधान)..

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- मुख्यमंत्री जी को बिल्कुल पूरा अधिकार है. आज भी सी बी आई को इसी सदन में डिक्लेयर कर सकते हैं. यह सरकार का अधिकार है, मुख्यमंत्री जी का अधिकार है.... (व्यवधान)..हिम्मत हो तो कहें मुख्यमंत्री जी...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- आप बैठ जाइये, बोलने दीजिए...(व्यवधान)..

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- लेकिन असत्य का पुलिंदा ले आए आप यहाँ....(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- आप कृपया बैठिए.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो काँग्रेस का नेतृत्व आज मध्यप्रदेश में है. आधारहीन बातें करने का और आरोप लगाने का इनका स्वभाव बन गया है. षड्यंत्र करके, आप मुख्यमंत्री जी के ऊपर आरोप लगा रहे हैं. (शेम शेम की आवाज) और इतना ही नहीं दुर्भाग्य है कि ऐसे कमजोर और क्या कहूँ मैं ऐसे विपक्ष के लिए कि जिसने मुख्यमंत्री जी के परिवार के लोगों पर आरोप लगाए और आपके पास कोई प्रमाण नहीं था. हर चीज निराधार निकली. (शेम शेम की आवाज) आप तथ्य प्रस्तुत नहीं कर पाए. अध्यक्ष महोदय, यदि इनके पास तथ्य होते तो ये हाईकोर्ट में वहाँ रखते कि इसलिए सी बी आई से जाँच जरूरी है. हाईकोर्ट ने हर पहलू को देखा. एक एक चीज को समझा और इसके बाद यह निर्णय दिया है कि एस टी एफ की जाँच ठीक चल रही है. आप संघ के अधिकारियों पर आरोप लगाने लगे.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- हम नहीं लगा रहे हैं यह तो...(व्यवधान)..

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- तिवारी जी संघ पर आरोप नहीं लगा रहे..(व्यवधान)...

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- संघ पर आरोप एस टी एफ की जाँच में आया है...(व्यवधान)..तब हमने आरोप लगाया है..(व्यवधान)..

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- मुझे ऐसा लगता है कि आप पहले स्वयंसेवक रहे हैं...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- कृपया विषय पर आएँ...(व्यवधान)...

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- उमा भारती जी के पास डी जी पी गये हैं और डी जी पी ने सफाई दी है... (व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- तिवारी जी, कृपया बैठ जाइये. ..(व्यवधान)..

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- अध्यक्ष महोदय, काँग्रेस के राज में..(व्यवधान)..पन्नियों पर होते थे, अध्यक्ष महोदय, मेरे पास ऐसे उदाहरण हैं कि काँग्रेस के राज में मुख्यमंत्री के पास एक दरख्वास्त लेकर गए कि साहब मेरे बच्चे की नौकरी लगा दो. उन्होंने एक दरख्वास्त पर तीन ऑर्डर किए. बच्चे की नौकरी मास्टर की लगाई जाती है. दूसरा ऑर्डर, इनकी देहलान में स्कूल खुलेगा, तीसरा ऑर्डर, यहाँ प्रामयरी स्कूल खोला जाता है. इन सब से बचने के लिए व्यापमं में परीक्षाएँ करवाई गई हैं.

एक माननीय सदस्य- इसमें इन्होंने भ्रष्टाचार नहीं किया होगा, इसमें इन लोगों ने जरूर भ्रष्टाचार किया होगा.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- अध्यक्ष महोदय, नगर विकास प्राधिकरण, साडा, नगर सुधार न्यास, अरे आपने तो सीधे-सीधे आपके चुने हुए प्रतिनिधियों से नौकरियाँ दिलवाई हैं और नौकरियाँ भी ऐसी कि जैसे ही मोबाइल चल गए थे तो बाहर लेनदेन हो जाता था और वह कह देता था कि दे दो, इन्हें दे दो. (शेम शेम की आवाज) यह आपके जमाने में हुआ है.

अध्यक्ष महोदय-- कृपया विषय पर आएँ...(व्यवधान)..

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- रीवा, सतना की याद करो...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- कृपया विषय पर आएँ...(व्यवधान)..

श्री गिरीश गौतम-- माननीय अध्यक्ष महोदय, रीवा वाले मामले में सबको सजा हो गई है.

अध्यक्ष महोदय-- गिरीश जी, बैठिए.

श्री गिरीश गौतम-- शिक्षाकर्मी घोटाले में अदालत से सबको सजा हो गई है. मैं यह जानकारी देना चाहता हूँ.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि आज जिस तरीके से ये पिछड़े हुए हैं ऐसा विपक्ष का उदाहरण मैंने कहीं नहीं देखा. माननीय पटवा जी जो कहा करते थे कि एक दिल के टुकड़े हजार हुए कोई यहाँ गिरा, कोई वहाँ गिरा. कोई अटेर में गिरा और कोई चुरहट में गिरा. (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया बहुत बहुत धन्यवाद.

श्री रामनिवास रावत (विजयपुर)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने स्थगन स्वीकार किया सदन के नेता ने स्वीकार किया, इसके लिये हम आभारी है और सबसे बड़ी बात है पहली बार विधान सभा में प्रश्नकाल स्थगित करके चर्चा स्वीकार की गई सामान्य तौर पर स्थगन स्वीकार होने के बाद तीन बजे लिया जाता है, लेकिन आपने स्वीकार करके चर्चा तुरन्त प्रारंभ कराई, इसके लिये धन्यवाद.

माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यावसायिक परीक्षा मंडल मध्यप्रदेश में बना हुआ है यह व्यावसायिक परीक्षाओं जैसे पीएमटी, प्रीपीजी और पीईटी की परीक्षायें आयोजित कराता है और इसके साथ साथ शासकीय सेवाओं में विभिन्न विभागों में जो भर्तियां होती हैं उनकी भी परीक्षाओं का आयोजन करता है.

माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2004 से लेकर लगातार वर्ष 2013 तक पीएमटी, प्रीपीजी और अन्य शासकीय सेवाओं की जितनी भी परीक्षायें हैं, जैसे संविदा शिक्षक भर्ती, पुलिस आरक्षक भर्ती, पर्यवेक्षक भर्ती, परिवहन आरक्षक भर्ती, जेल प्रहरी भर्ती, नापतौल निरीक्षक भर्ती, खाद्य निरीक्षक, पुलिस उप निरीक्षक, महिला पर्यवेक्षक या अन्य परीक्षायें जो आयोजित की गई हैं, आपने बताया कि इनके द्वारा 1,27000 लोगों का चयन किया गया. मैं दावे से कह सकता हूँ कि प्रीपीजी और पीएमटी में ही जो लोग पकड़े गये हैं और पकड़े जा रहे हैं उनकी संख्या वर्ष 2004 से लेकर 2014 तक तीन हजार लोगों से ऊपर है. तीन हजार ऐसे लोग हैं जो पीएमटी में पास होकर डॉक्टर बन रहे हैं, जिन्होंने परीक्षा नहीं दी कुछ लोग तो बारहवीं में भी फेल हुए हैं, कुछ लोग बारहवीं की परीक्षा में थर्ड डिवीजन आये हैं. इस तरह के लोग व्यावसायिक परीक्षा मंडल से फर्जी तरीके से पास हुए हैं. आप क्या कहना चाहते हैं बताइये.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार—माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने दिग्विजय सिंह जी के जमाने के आंकड़े इसमें जोड़ दिये हैं, हमने जो आंकड़ा बताया है वह हमारे जमाने का बताया है और बाकी का जो है वह दिग्विजय सिंह जी के जमाने का है. (व्यवधान)

श्री रामनिवास रावत—2004 के बाद का बोल रहा हूँ आप रिकोर्ड निकाल लो, जब आप बोल रहे थे तब मैं नहीं बोल रहा था आप, इंटरप्ट मत करो (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपया उनको बोलने दें, आप अपनी बात चालू रखें.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार—अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि यह सुधार लें आप हमारा आंकड़ा हमारे तक रखें और बाकी का दिग्विजय सिंह जी में जोड़िये.

श्री रामनिवास रावत—आपकी ही का बता रहा हूँ. माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यावसायिक परीक्षा मंडल में फर्जीवाड़े से न केवल प्रदेश के प्रतिभावान, योग्य मेहनतकश छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ हुआ है साथ ही साथ प्रदेश में दो ढाई हजार डॉक्टर ऐसे बनकर जायेंगे जिन्होंने परीक्षा ही नहीं दी जिन्हें पढ़ना ही नहीं आता है, योग्यता नहीं है वे प्रदेश की जनता के स्वास्थ्य का कैसे ख्याल रखेंगे. माननीय मुख्यमंत्रीजी आपको इस बारे में चिन्तित होना चाहिये मुझे प्रदेश की जनता के स्वास्थ्य की चिन्ता है, कैसे काम चलेगा.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार—माननीय अध्यक्ष महोदय, यह डॉक्टरों पर आक्षेप और अपमान है आखिरकार वे दुनिया का इलाज कर रहे हैं और सेवा से काम कर रहे हैं. व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप कृपया उनको बोलने दें.

श्रीमती इमरती देवी—जनता अस्पताल में जाते हुए डरती है कि डॉक्टर कौन से हैं पढ़े लिखे हैं या अनपढ़ हैं.

श्री रामनिवास रावत—माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. जगदीश सगर जो इस फर्जी कांड का सूत्रधार है, इसको एसटीएफ ने पकड़ा. इसने अपने इकबालिया बयान में स्वीकार किया है कि अकेले सगर ने 1500 छात्र फर्जी पास कराये हैं और इनसे अरबों रुपयों का लेनदेन हुआ है यह कहां गया, कैसे गया, इसके

बारे में नहीं कहा जा सकता. छात्रों को पकड़ा भी जा रहा है छात्रों को निकाला भी जा रहा है. प्रीपीजी में भी इसी तरह से काफी छात्रों को पकड़ा गया है और निकाला भी गया है.

माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यावसायिक परीक्षा मंडल में वर्ष 2004 से जो यह शुरु हुआ है, इसमें हम चाहते हैं कि जितनी भी ओ एम आर शीट हैं वे चाहे पीएमटी की हों, प्रीपीजी की हों या जितनी भी परीक्षायें शासकीय सेवा के लिये आयोजित की हैं मुख्यमंत्रीजी क्या आप इन सब शीटों का चंडीगढ़ या हैदराबाद की लैब से परीक्षण करायेंगे. आप हिम्मत दिखायें और परीक्षण के लिये भेजें तब दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा क्योंकि सागर से जो परीक्षण कराया है इसे जब हाईकोर्ट में प्रस्तुत किया गया तो उसने भी माना कि इस परीक्षण से हम संतुष्ट नहीं हैं, चंडीगढ़ या हैदराबाद की लैब से परीक्षण कराया जाये.

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से डॉ. दीपक यादव है यह फर्जी तरीके से डॉक्टर बना है और इसने अपने पूरे परिवार को ही डॉक्टर बना दिया है इनकी भी शिकायतें लगातार हो रही हैं ,दलालों के नामों की शिकायत भी मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी और मुख्य सचिव से पूर्व में थी। लेकिन अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया क्योंकि उनकी बड़ी-बड़ी पहुंच हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं मध्यप्रदेश शासन के चिकित्सा शिक्षा मंत्रालय वल्लभ भवन भोपाल ने 24.5.2012 को एक आदेश जारी किया कि 2006,2007 2008, 2010, 2011 के छात्र छात्राओं की ओ.एम.आर. शीट की जांच चंढीगढ़ या हैदराबाद लैब से करायी जाये लेकिन आज तक जांच नहीं करायी गयी है। अध्यक्ष महोदय, केवल 36 लोगों की जांच करायी गयी है जिनको निकाल दिया गया है। जबकि शिकायत ज्यादा लोगों की थी। इसी तरह से सागर फारेंसिक लैब के अधिकारियों ने भी कहा है कि यहां पर स्पष्ट जांच नहीं हो पाती इतना जरूर पता चलता है इन्होंने कूटकरण किया है, शासकीय दस्तावेजों के साथ छेड़-छाड़ की है। इन सभी के विरूद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज किये जाने का कष्ट करें। अध्यक्ष महोदय, हम चाहते हैं कि जितनी भी जांच एस.टी.एफ ने की है, और जो इकबालिया बयान जिन-जिन लोगों ने दिये हैं, उन सबको प्रस्तुत किया जाये और प्रदेश की जनता को बताया जाये। जिससे स्पष्ट हो सके कि प्रदेश में व्यापम में क्या- क्या हो रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मध्यप्रदेश के चिकित्सा महाविद्यालयों में ऐसे भी छात्र- छात्राएं चिकित्सक बन चुके हैं जिनके ओ.एम.आर. फार्म और महाविद्यालय के एडमिशन फार्म नाम, रोल नम्बर और फोटों सभी अलग-अलग हैं। ऐसे कई छात्र हैं जिन्हें सौ प्रतिशत फर्जी होना पाया गया है। माननीय अध्यक्ष 12 जनवरी, 2012 को आपके पूर्व चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री महेन्द्र हार्डिया व उप महाधिवक्ता मध्यप्रदेश हाईकोर्ट, ग्वालियर श्री विवेक खेरकर ने भी सागर फारेंसिक लैब की रिपोर्ट को पूरी तरह से अस्पष्ट माना है। और विवादित फोटों की जांच केन्द्रीय फारेंसिक लैब, हैदराबाद से कराये जाने की बात कही है।

श्री यशपाल सिंह सिसौदिया:- जो भी बोलना है, बोलते रहो कोई फर्क नहीं पड़ता है।

श्री रामनिवास रावत:- इस तरह से हम चाहते हैं कि इन सभी की जांच फारेंसिक लैब हैदराबाद या चंढीगढ़ से करायी जाये। अध्यक्ष महोदय इसी तरह से मैं पी.पी.जी के कुछ छात्रों के नाम लेना चाहता हूं जो फर्जी तरीके से नियुक्त हुए हैं। आप कहें तो मैं पटल रख दूंगा कि कितने छात्र हैं जिन्होंने फर्जी रूप से कालेज में एडमिशन पाये हैं। केवल भोपाल और ग्वालियर के एक या दो कालेजों कि ओ.एम.आर. शीट की जांच करायी गयी है। रीवा, जबलपुर, सागर और इंदौर इन मेडिकल कालेजों की ओ.एम.आर. शीटों की जांच अभी तक नहीं करायी गयी है। इसी तरह मैं उल्लेख करना चाहूंगा जिन परीक्षाओं का मैंने उल्लेख किया है। परिवहन आरक्षक भर्ती परीक्षा, आरक्षक भर्ती परीक्षा और संविदा भर्ती परीक्षा। आपके पूर्व मंत्री को गिरफ्तार किया गया, आपके पूर्व मंत्री कहते हैं कि इसमें बड़े – बड़े आदमी सम्मिलित हैं। कौन संलिप्त हैं, उनसे बड़ा कौन है। इसकी जांच उन्हीं के अधीन रहते हुए एस.टी.एफ. के माध्यम से नहीं हो सकती है। अध्यक्ष महोदय, एस.टी.एफ. जांच कर रही है। मैं एस.टी.एफ. की निष्पक्षता पर कोई संदेह नहीं करना चाहता। लेकिन जैसे ही पूर्व मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा गिरफ्तार होते हैं। उसके तुरंत बाद प्रदेश के मुखिया मुख्यमंत्री जी एस.टी.एफ. के अधिकारियों की और पी.एच.क्यू के अधिकारियों की एक मीटिंग सी.एम.हाऊस में एक मीटिंग बुलाते हैं। क्या निर्देश देते हैं यह किसी को नहीं पता और मध्यप्रदेश का जनसंपर्क विभाग मध्यप्रदेश का पुलिस मुख्यालय यह स्पष्टीकरण देता है कि इसमें आर.एस.एस. के लोग सम्मिलित नहीं है। इसमें सी.हाऊस सम्मिलित नहीं है, इसकी क्या जरूरत पड़ गयी स्पष्टीकरण देने की। कैसे स्पष्टीकरण दे सकता है इसलिये यह पूरी जांच संदेह के घेरे में है। हमारी प्रवक्ता के.के.मिश्रा ने आरोप लगया कि इसमें गोंदिया के कुछ लोग भर्ती किये गये हैं। माननीय मुख्यमंत्री कह रहे हैं कि गोंदिया के नहीं हैं। उसकी पूरी सूची पटल पर रख दें कि इनमें एक भी गोंदिया का नहीं है। आप दूसरे के ऊपर क्यों छोड़ते हो, आपके पास तो पूरे रिकार्ड हैं।

मुख्यमंत्री (श्री शिवराज सिंह चौहान):- अध्यक्ष महोदय, मेरी प्रार्थना है कि जब मेरा उत्तर हो । एक बार सुन जरूर लेना, सदन छोड़कर मत चले जाना।

श्री सुन्दर लाल तिवारी:- मुख्यमंत्री जी उनकी आठवीं और दसवीं के 19 लोगों की मार्कशीट रख दीजिये उसके बाद पूरी बात सुनी जायेगी।

अध्यक्ष महोदय आप लोग बैठ जाईये माननीय रावत जी को अपनी बात बोलने दीजिये।

श्री गोपाल भार्गव – माननीय अध्यक्ष महोदय, ये बातें महीनों से टेलीविजन और अखबारों में आ रही हैं. प्रतिपक्ष के पास कोई नये तथ्य हों तो उसको रखें नहीं तो ये घिसी पिटी बातें अखबारों में आ चुकी हैं.

अध्यक्ष महोदय – अब बोल लेने दें.

एक माननीय सदस्य – माननीय अध्यक्ष जी, इसमें तो नैतिकता के आधार पर पूरी सरकार को इस्तीफा दे देना चाहिये. इतना बड़ा भ्रष्टाचार है.

श्री रामनिवास रावत – नये तथ्य नहीं हैं तो क्या है. माननीय अध्यक्ष महोदय, पुलिस आरक्षक भर्ती परीक्षा हुई. पुलिस आरक्षक भर्ती परीक्षा में पूरे पुराने नियम ही बदल डाले. केवल फर्जी तरीके से अपने लोगों को पुलिस आरक्षक बनाने के लिये पुराने नियम बदल डाले. पुराने नियमों के बारे में गौर साहब कह रहे हैं कि मेरे यहां कोई नियम नहीं बदले. केबिनेट से कोई नियम नहीं बदले गये. मंत्री के यहां से कोई नियम नहीं बदले गये. तो ये नियम कहां से बदले गये. ये सारे के सारे तथ्य जांच के विषय हैं कि नियमों को बदलकर किस प्रकार से भर्ती की गई. ये स्पष्ट उजागर होता है कि आरक्षक भर्ती परीक्षाओं में काफी बड़ी गड़बड़ी हुई है. लक्ष्मीकांत शर्मा जी के गिरफ्तार होने के बाद शर्मा ने खुद चुनौती दी है एस.टी.एफ. को कि बड़े लोगों को गिरफ्तार करें. बड़े लोग जो सम्मिलित हैं. बड़े-बड़े आई.ए.एस. हैं. आई.पी.एस. हैं. राजनेता हैं उन लोगों को गिरफ्तार करें और उन लोगों से एस.टी.एफ. ने पूछताछ नहीं की. पूछताछ क्या की गई वह बताएं. माननीय अध्यक्ष महोदय, इस तरह की चुनौती के बाद भी पी.एम.टी. में कुछ बचा नहीं रह जाता. आप दमदारी से कहते हैं कि आप व्यापम घोटाले में नहीं है. उमा जी का नाम है. विजयवर्गीय का नाम है. आप क्यों नहीं मानहानि का केस करते. पेपर पर करिये मानहानि का केस. आप सभी सम्मिलित हैं. आप सभी पेपर कटिंगों को..

एक माननीय सदस्य – कुछ तो भी आरोप लगा रहे हैं आप सभी सम्मिलित हैं.

श्री रामनिवास रावत – माननीय अध्यक्ष महोदय, जितने भी पेपरों में प्रकरण प्रकाशित हो रहे हैं उन सबको मुख्यमंत्री जी क्या जांच में सम्मिलित करेंगे. मैं चाहता हूं कि आप सम्मिलित करें और आपके जो पंकज त्रिवेदी गिरफ्तार हुए.

अध्यक्ष महोदय – कितना समय लेंगे माननीय रावत जी आप.

श्री रामनिवास रावत – अभी प्रारंभ किया है.

अध्यक्ष महोदय - पंद्रह मिनिट हो गये.

श्री सुन्दरलाल तिवारी – चर्चा होगी तो कथा भी खत्म हो जायेगी लेकिन यह नहीं. इतना बड़ा भ्रष्टाचार है.

अध्यक्ष महोदय – दो-तीन मिनिट में समाप्त कर दें आप.

श्री रामनिवास रावत – माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तक पंकज त्रिवेदी गिरफ्तार किये गये हैं. डाक्टर जगदीश साग को गिरफ्तार किया गया है. लक्ष्मीकांत शर्मा को गिरफ्तार किया गया है. हम चाहते हैं कि इसकी जांच अगर ठीक ढंग से ले जाना है. आप दूध का दूध और पानी का पानी करना चाहते हो. जितने भी आरोपी हैं. जितने भी व्यवसायिक परीक्षा मंडल की भर्ती परीक्षाओं के दलाल हैं. उनके पिछले आठ वर्षों के 2004 से लेकर आज तक पूरे फोन काल डिटेल्स निकाले जाएं और इनको इस बीच में किस-किस के द्वारा फोन किये गये. इनमें कौन-कौन व्यक्ति थे सब स्पष्ट हो जाएगा कि किस-किसके द्वारा ये भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी कराई गई है. प्रदेश के युवाओं के साथ उनके भविष्य के साथ धोखा किया गया है. बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा ये सब बातें आना आवश्यक हैं. अगर ये बातें नहीं आईं तो इस जांच का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा. ये पेपर पत्रिका 25 जून,2014..

अध्यक्ष महोदय - पेपर का हवाला कृपया नहीं दें पेपर का हवाला नहीं दिया जाता.

श्री रामनिवास रावत – माननीय अध्यक्ष महोदय, तो ये पेपरों के खिलाफ क्यों नहीं मानहानि का दावा करते.

अध्यक्ष महोदय – आप पढ़कर नहीं दें उसको आप वैसे बोल दें.

श्री रामनिवास रावत – मैं वैसे बोल देता हूं. परिवहन आरक्षक भर्ती के अहम सबूतों का कहीं अता-पता नहीं. काल डिटेल्स इन भर्ती परीक्षाओं की की जाने वाली सिफारिशों की काल डिटेल्स, एक्सेल शीट पूरी तरह से गायब हो गई.एस.टी.एफ. कार्यालय से गायब हो गई. ये किसने गायब कराई. क्यों हुई गायब इसके लिये सरकार जिम्मेदार नहीं है. यह स्पष्ट करें कि ये बातें कैसे आईं. इसमें काफी बातें आ चुकी हैं

सिफारिश की. संविदा शिक्षक भर्ती परीक्षा आप कह रहे हैं कि केवल 700 लोगों की परीक्षा निरस्त हुई हैं. कम से कम मेडीकल छात्रों की ही बता दें. एक हजार से अधिक तो मेडीकल छात्र पकड़े जा चुके हैं. अभी गौरीशंकर शेजवार जी ने कहा कुछ शिकायतें क्राईम ब्रांच के पास पहुंची हैं. जिस दिन से पूर्व मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा गिरफ्तार हुए हैं

श्री रामनिवास रावत(जारी)—उस दिन से एस.टी.एफ. का और क्राईम ब्रांच का डायरेक्शन बदल गया है परीक्षण का एवं जांच का केवल उनका फोकस बच्चों का पकड़ने एवं उनके परिवारजनों को धोंस देने का हो गया है और इसमें भी भारी भ्रष्टाचार हो रहा है उसमें भी बच्चों के परिवारजनों से भारी राशि वसूल की जा रही है.

श्री गौरीशंकर शेजवार—अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाईंट ऑफ आर्डर है.

अध्यक्ष महोदय—इनका प्वाईंट ऑफ आर्डर है जरा सुन लें.

श्री बाला बच्चन—जब हमारी यहां से कोई वक्ता बोलता है तो आपके यहां से प्वाईंट ऑफ आर्डर खड़ा हो जाता है और सदन में ऑलरेडी बोल चुके हैं उन्होंने पूरा सदन में एक्सप्लेन कर दिया फिर कहां से प्वाईंट ऑफ आर्डर सदन में आ जाता है.

श्री गौरीशंकर शेजवार—अध्यक्ष महोदय, मेरा इसमें निवेदन केवल इतना है और मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि जब हाईकोर्ट में रिट पिटीशन लगी थी तो हाईकोर्ट ने कहा कि एसटीएफ की जांच जो चल रही है वह ठीक चल रही है.

श्री तरूण भनोत—अध्यक्ष महोदय, हर अधिकारी को फटकार मिल रही है. हाईकोर्ट ने खुद कहा है कि बड़े अधिकारियों को क्यों नहीं गिरफ्तार कर रहे हैं. इसमें आरएसएस के लोग तथा मंत्री लोग शामिल हैं इसमें सीएम हाऊस भी जुड़ा हुआ है.

श्री मुकेश नायक—आप हाईकोर्ट के आर्डर को सदन में क्यों प्रस्तुत कर रहे हैं, यह गलत बात है.

श्री गौरीशंकर शेजवार—जो पिटीशन है उन्हें रिजेक्ट किया है कि इसमें सीबीआई की जांच की आवश्यकता नहीं है.

(व्यवधान)—

श्री बाला बच्चन—इसमें प्वाईंट ऑफ आर्डर बनता है क्या. एसटीएफ पर प्वाईंट ऑफ आर्डर की क्या बात कर रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय—प्वाईंट ऑफ आर्डर क्या है.

श्री गौरीशंकर शेजवार—लोगों पर जो आरोप लग रहे हैं कम से कम उसमें उच्च न्यायालय का अपमान नहीं होना चाहिये यह माननीय सदस्यों ने मेरा निवेदन है.

श्री सुंदरलाल तिवारी—आप हाईकोर्ड का आर्डर पढ़ लीजिये.

श्री रामनिवास रावत—माननीय अध्यक्ष महोदय, हाईकोर्ट ने समय समय पर एस.टी.एफ के अधिकारियों को फटकार लगाई है.

श्री सुंदरलाल तिवारी—आप हाईकोर्ट के आर्डर की बात कर रहे हैं. आप रख दो उसको पटल पर, लाओ.

अध्यक्ष महोदय—तिवारी जी कृपया आप बैठ जाएं.

श्री तरूण भनोत—यह लोग हाईकोर्ट का हवाला दे रहे हैं माखनलाल चतुर्वेदी की रिपोर्ट छिपाई गई है यह काम किसने किया है.

अध्यक्ष महोदय—आप बैठ जाईये बहुत समय हो गया है.

श्री मुकेश नायक—डॉ.साहब आप न्यायालय पर चर्चा करेंगे आपके पैर के नीचे से जमीन खिसक जायेगी. माखनलाल चतुर्वेदी के बारे में कोर्ट ने क्या कहा है, व्यापम के बारे जो मॉनिटरिंग चल रही है उसके बारे में क्या कहा है.

अध्यक्ष महोदय—आप कृपया बैठ जाएं. जो रावत जी बोलेंगे उनका ही लिखा जायेगा.

श्री रामनिवास रावत—माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कहना कि यह घोटाला नहीं है, यह देश का सबसे बड़ा कोई घोटाला है इसमें टर्न ओव्हर की तरह रिश्वत ली गई है. मैं जो बात कर रहा था कि जिस दिन से लक्ष्मीकांत जी शर्मा गिरफ्तार हुए उस दिन से क्राईम ब्रांच एवं एस.टी.एफ की जांच की दिशा बदल गई, बच्चों को गिरफ्तार किया जाने लगा. वे गलत तरीके से परीक्षाओं में बैठे हैं तो उनको गिरफ्तार करने में हमें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन उनके परिवारजनों को धोंस दे देकर के उनसे अधिकारी लोग रिश्वत ले रहे

हैं ऊपर वालों पर मेरी कोई आपत्ति नहीं है, यह मैं खुद देख रहा हूं एवं भुगत रहा हूं. कोई भी ऐसी 2004 से लेकर के आज तक परीक्षा नहीं हुई जिसमें फर्जीवाड़ा नहीं हुआ हो आप एक भी परीक्षा बता दें. कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी, उसमें 16 लोगों की जाएगी नौकरी.

अध्यक्ष महोदय—रावत जी आप बैठ जाएं आपको 15 मिनट से ज्यादा समय हो गया है इसमें 15 मिनट का समय बोलने के लिये नहीं होता है.

श्री रामनिवास रावत—अध्यक्ष महोदय, वेटनरी डॉक्टरों का साक्षात्कार, हाईस्कूल फेल मेरिट लिस्ट, पीएमटी की मेरिट लिस्ट में हाईकोर्ट ने पीएमटी कांड में फंसे छात्रों की सौंपी विजीलेंस को जांच, पूछताछ में मांगा पानी शर्मा ने कहा कि इसमें बहुत बड़े लोग हैं उनको गिरफ्तार करो, बड़े कौन हैं बताओ.

एक माननीय सदस्य—इनसे बोलें कि यह प्रूफ दें यह तो केवल भाषण दे रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय—रावत जी आप बैठ जाएं बहुत समय हो गया है.

श्री रामनिवास रावत—अध्यक्ष महोदय, अन्य राज्यों के लोग यहां पर भागकर के नौकरियां पा रहे हैं और हमारे लोग यहां से बाहर रह रहे हैं हमारे प्रदेश के युवाओं के साथ तथा शिक्षित बेराजगार युवकों के साथ अन्याय हो रहा है, पहले बात आती थी सीबीआई जांच की मांग उठती रही है तब आप कहते थे कि सीबीआई तो कांग्रेस सरकार,यूपीए सरकार का तोता है अब तो भाई आपकी सरकार है आपको क्या आपत्ति है.

अध्यक्ष महोदय--कृपया समाप्त करें.

श्री रामनिवास रावत--..माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है मैं एस.डी.एफ. की अधिकारियों पर कोई उंगली नहीं उठा रहा लेकिन मजबूर हैं अधिकारी आप मीटिंग के लिये बुलाओगे लक्ष्मीकांत शर्मा की गिरफ्तारी के बाद माननीय मुख्यमंत्री ने सी.एम. हाउस में क्यों पूरे एस.टी.एफ. के अधिकारियों की मीटिंग बुलाई, क्यों पी.एच.क्यू. को क्या लिखेंगे (व्यवधान) सी.एम.हाउस से निर्देश दिया कि सी.एम.हाउस और आर.एस.एस. के लोग इसमें शामिल नहीं हैं..

अध्यक्ष महोदय--कृपया समाप्त करें अब. आपकी बात आ गई सारी. श्री कैलाश विजय वर्गीय..

श्री रामनिवास रावत--मैं तो कहता हूं अध्यक्ष महोदय, आर.एस.एस. के लोग और सी.एम. हाउस के लोग इन्वाल्व हैं. हिम्मत है तो पूरे कालडिटेल्स और दलालों के संबंध में जांच करायें और मध्यप्रदेश के युवाओं को न्याय दिलायें.

अध्यक्ष महोदय--कृपया बैठें अब आप. आपकी बात आ गई पूरी.

श्री रामनिवास रावत--पूरी परीक्षाओं में करोड़ों रूपये का लेनदेन हुआ है.

अध्यक्ष महोदय--रावत जी कृपया बैठें.

श्री रामनिवास रावत-- हम चाहते हैं कि प्रदेश के युवाओं को न्याय मिले, न्याय आप दें आप देखें आपसे भी अनुरोध करेंगे हाई कोर्ट की बात आती है मामला...

अध्यक्ष महोदय--कृपया बैठ जायें अब आप.

श्री रामनिवास रावत--मामला सी.बी.आई. जांच के लिये गया.

अध्यक्ष महोदय--आप कृपया बैठ जायें.

श्री रामनिवास रावत---जांच हाई कोर्ट अपने देखरेख में करा रहा है. एस.टी.एफ. को कई बार फटकार लगाई है सरकार अपनी तरफ से सिफारिश कर ले हम सी.बी.आई. जांच के लिये तैयार हैं. इसमें क्या आपत्ति है ?

अध्यक्ष महोदय--माननीय सदस्य आपक बात आ चुकी है. रिपीटीशन हो रहा है, कृपया बैठ जायें.

श्री मुकेश नायक--मेरा प्वाइन्ट आफ आर्डर है माननीय अध्यक्ष महोदय.

अध्यक्ष महोदय--प्वाइन्ट आफ आर्डर बोलिये. रावत जी आप बैठ जाइये.

श्री मुकेश नायक--मेरा प्वाइन्ट आफ आर्डर यह है कि मध्यप्रदेश के अखबारों ने ....

अध्यक्ष महोदय--अखबारों पर से कोई प्वाइन्ट आफ आर्डर नहीं होता.

श्री मुकेश नायक--नहीं, मैं घोटाले के बारे में....

अध्यक्ष महोदय--- यहां जो हो रहा है कार्य उस पर ही होता है प्वाइन्ट आफ आर्डर.

श्री मुकेश नायक--चलिये, मैं विषय बदल लेता हूं माननीय प्वाइन्ट आफ आर्डर मेरा यह है कि माननीय कैलाश विजय वर्गीय जी का इस घोटाले से नाम जोड़ा जाता रहा है एक चीज, दूसरी चीज..

अध्यक्ष महोदय--नहीं, यह प्वाइन्ट आफ आर्डर नहीं है.

श्री मुकेश नायक--वह इसको डिफेन्ड करेंगे कि यह घोटाला ठीक है.

अध्यक्ष महोदय--नहीं, कृपया बैठ जाइये आप. आपने लिखकर कुछ दिया है क्या ?

श्री मुकेश नायक--जिनके नाम इस घोटाले में शामिल है अगर उन्हें स्थगन प्रस्ताव में प्रस्तुत करने दिया जाये, क्या इसकी अनुमति आप देंगे ?

अध्यक्ष महोदय--माननीय सदस्य, आपने यहां कुछ लिखकर दिया है क्या ? या माननीय मंत्री पर कोई आरोप लगाये हैं लिखकर प्रमाण सहित, नहीं लगाये हैं तो आप यह विलोपित करिये.

श्री रामनिवास रावत--अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, मैं अंतिम बात कह कर अपनी बात समाप्त करता हूं. माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवसायिक परीक्षा मंडल के फर्जीवाड़े के कारण पूरे देश में मध्यप्रदेश की छवि बिगड़ रही है. माननीय मुख्यमंत्री जी आपकी भी छवि खराब हो रही है, हम तो आपसे भी अनुरोध करते हैं कि आपकी छवि खराब ना हो इसके लिये मध्यप्रदेश के युवाओं का भविष्य सुधारने के लिये सी.बी.आई. जांच के लिये आपकी सरकार को तैयार रहना चाहिये, नहीं तो हम यही मानेंगे कि आप वहां घोटाले में सम्मिलित हैं और आपकी देखरेख में सब पूरा घोटाला हुआ है.

श्री कैलाश विजय वर्गीय--माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं साधारणत: विधानसभा की यह परंपरा रही है कि जब भी कोई मामला सबजूडिश हो या एक बारि फिर वधान सभा में आ गया हो जब तक नये तथ्य नहीं आयें जब तक दूसरी बार चर्चा नहीं होती पर माननीय प्रतिपक्ष के हमारे मित्रों के विशेष अनुरोध पर आपने इस चर्चा को सदन में लाया और साहसिक तरीके से मुख्यमंत्री जी ने उसको स्वीकार करके स्थगन पर चर्चा करने का अवसर दिया इस सदन में, तो मैं दोनों को ही धन्यवाद देता हूं अध्यक्ष महोदय यह मध्यप्रदेश की विधान सभा देश की सर्वश्रेष्ठ 5 विधानसभाओं में से एक है और मैंने यहां पर स्वर्गीय अर्जुन सिंह जी को, माननीय पटवा जी को, वीरेन्द्र कुमार सखलेचा जी को, मोतीलाल वोरा जी को, श्यामाचरण शुक्ला जी को बहुत बड़े बड़े यहां तक कि एक बार माननीय कैलाश जोशी जी को, विक्रम वर्मा जी को यहां पर बहस करते हुए देखा है. हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने उनकी बहस को सुना और संसदीय परंपरा को देख पर आज जिस तरीके से सदन में चर्चा प्रारंभ

हुई, अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात से शंकित हूं कि इस विधान सभा की जो गरिमा देश के अंदर सर्वश्रेष्ठ 5 विधानसभाओं में है, वह बनी रहेगी या नहीं. मुझे समझ में नहीं आता नेता प्रतिपक्ष का व्यवहार जैसा है.. (व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- आप लोग बैठें. कृपया विषय पर आयें.

श्री कैलाश विजय वर्गीय--नेता प्रतिपक्ष ने प्रश्नकाल के पहले आपसे आग्रह किया कि चर्चा करायें और ख उसके बाद खुद ही स्लिप हो गये .

अध्यक्ष महोदय--कृपया, विषय पर आयें.

श्री कैलाश विजय वर्गीय--मैं विषय पर ही आ रहा हूं अध्यक्ष महोदय. बात की शुरूवात जहां से हुई, वहीं से आ रहा हूं मैं.

अध्यक्ष महोदय--नहीं, आप सीधे विषय पर आयें.

श्री कैलाश विजय वर्गय--विधान सभा की चर्चा जहां से प्रारंभ हुई मैं वहीं से प्रारंभ करूंगा अध्यक्ष महोदय, कहीं बाहर से नहीं कर रहा हूं तो इसलिये मुझे अवसर आपने दिया है मुझे बोलने का अवसर आप दें यह निवेदन है अध्यक्ष महोदय, बीच बीच में उठकर बोलना डा. गौरीशंकर शैजवार जैसे वरिष्ठ नेताओं को इस सदन में सुनने का अवसर हमें मिलता है उसको बीच बीच में बोलकर अवरोध पैदा करना क्या यह संसदीय परंपरा रही है अध्यक्ष महोदय इस विधान सभा में इसके पहले अध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात की चिन्ता है इस प्रकार की चर्चा तो होती रहेगी बहस स्राआरोप प्रत्यारोप होते रहेंगे पर इस सदन की गरिमा बनी रहे यह बहुत आवश्यक है अध्यक्ष महोदय इसलिये मैं प्रतिपक्ष के सब साथियों से कहना चाहता हूं कि सदन की गरिमा पहले है. आरोप प्रत्यारोप चलते रहेंगे. कभी आप इधर, कभी हम इधर, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता. पर इस विधान सभा की गरिमा कायम रहे, यह हम सब की जवाबदारी है. आरोप इस प्रकार लगे, जैसे सारा का सारा व्यापम घोटाला कांग्रेस के मित्रों ने उजागर किया हो. मैं डॉ. साहब ने जो बात कही है, उसको दोहराना नहीं चाहता. पर यह एक गोपनीय शिकायत के आधार पर इन्दौर में गुप्तचर विभाग ने कुछ लोगों को पकड़ा और मुख्यमंत्री जी को अवगत कराया कि इसमें कोई रेकेट का हाथ है. मुख्यमंत्री जी ने तत्कालीन सीएस, परशुराम जी और डीजीपी को बुलाकर पूरे प्रकरण को समझा और

यह निर्देश दिये कि इसके लिये एक स्पेशल टास्क फोर्स बनाई जाय. उस पर जांच की. अध्यक्ष महोदय, उसकी जांच प्रारंभ हुई. हमारे विपक्ष के साथी 7 जुलाई की बात है, विधान सभा चुनाव के पहले. व्यापम घोटाले की टोकरी को अपने सिर पर रखकर जनता के बीच में गये कि बड़ा घोटाला, बड़ा घोटाला और जनता ने पहले यह विधान सभा में इतने चौड़े फैलकर बैठते थे, अब इतने से रह गये. विधान सभा में बहुत जोर जोर से बोला, सब दूर पूरे मध्यप्रदेश में बोला कि व्यापम घोटाले में भ्रष्टाचार हुआ. जनता ने इनको यहां बैठा दिया. लोकसभा के चुनाव आये फिर घूमें. बहुत जोर जोर से घूमें. (XX) . व्यापम घोटाला, व्यापम घोटाला. सिंधिया जी से लेकर, अरुण जी से लेकर सब व्यापम घोटाला, व्यापम घोटाला और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष का पद प्राप्त करने का अधिकार भी खो बैठे. देश और प्रदेश में कांग्रेस की यह स्थिति हुई.

अध्यक्ष महोदय, इस सदन के अन्दर चर्चा होती है तथ्यों के आधार पर. आरोप लगाये जाते हैं तथ्यों के आधार पर. कोई तथ्य हों, तो आरोप लगाइये ना, हम जवाब देंगे. पर कुछ भी बातें, कैसे भी अनर्गल आरोप. आरोपों की कोई मर्यादा होती है. मुख्यमंत्री जी सदन के नेता हैं. लगाइये आप आरोप. परिवार के लोगों के ऊपर आरोप. अनर्गल आरोप. अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के अन्दर घोषणा कर रहा हूं, मुख्यमंत्री जी ने एक साहसिक काम किया है और मान हानि का दावा लगाया है. वह लोग जेल की सीखचों में होंगे. जेल की सीखचों में. आखिर कुछ संसदीय परंपरा है हमारे यहां. पक्ष है, विपक्ष है. उन सब लोगों की अपनी भूमिका है. उस भूमिका के अन्दर हमें किस प्रकार आरोप लगाना है, कैसे आरोप लगाना है, किसके ऊपर आरोप लगाना है. हम लोग राजनीति करते हैं. हमारे ऊपर आप आरोप लगाइये. अब परिवार के ऊपर जा रहे हैं. राजनीति के अन्दर आखिर कोई मर्यादा होती है. अगर आप राजनीति की मर्यादा का उल्लंघन करेंगे, तो आपके ऊपर भी आरोप लगेंगे. मैं पहले भी इस सदन में कह चुका हूं, जब नेता प्रतिपक्ष, अजय सिंह जी थे. तब मैंने कहा था कि आप परिवार के ऊपर मत जाइये. पर इस प्रदेश के अन्दर, इस प्रदेश की राजनीति के अन्दर यह मर्यादा का उल्लंघन हो रहा है. यह हमारे वरिष्ठ नेताओं ने, अर्जन सिंह जी ने, पटवा जी ने, कभी परिवार के लोगों पर आरोप नहीं लगाये. एक दूसरे के ऊपर आरोप लगाये. आप आरोप लगाइये. हम जवाब देंगे. हम राजनीति करते हैं, हम गलत करेंगे, तो हम ही जिम्मेदार होंगे.

श्री सत्यदेव कटारे -- आप परिवार के नाम बुलवाने में इंट्रेसटेड हैं क्या. अभी किसी ने नाम लिया नहीं है, आप बार बार यह बात क्यों कर रहे हैं. इधर से किसी ने बोला नहीं है. आप क्यों बोल रहे हैं. आप इंट्रेसटेड हैं कि नाम लिये जायें.

श्री कैलाश विजयवर्गीय -- अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष सिर्फ मेरे लिये दया के पात्र हैं. इसके अलावा कुछ भी नहीं हैं. आज सुबह से, जिस तरह से सदन में उनका व्यवहार था मुझे लगता है कि उन्हें एक बार हास्पीटल में जाकर अपना सम्पूर्ण परीक्षण कराना चाहिये सिर से लेकर पैर तक. अध्यक्ष महोदय, ये लोकसभा के चुनाव में गये. वहां जनता ने नकार दिया. फिर ये हाईकोर्ट गये. एक नहीं, दो नहीं 14 रिट लगाईं. सीबीआई की जांच, सीबीआई की जांच.हाई कोर्ट ने 14 रिट खारिज कर दीं और यह कहा कि हम इसको देखेंगे.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- इससे आप गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं.

श्री कैलाश विजयवर्गीय -- अध्यक्ष महोदय, इनको समझाइये. इनके पिताजी ने 10 साल तक माननीय अध्यक्ष की सीट पर बैठकर इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है. वे जिस तरीके से सदन को हल्के फुल्के तरीके से ले रहे हैं, अध्यक्ष महोदय, मुझे शर्म महसूस हो रही है कि ये उनके पुत्र हैं. मुझे शर्म महसूस हो रही है इनके आचरण पर.

..(व्यवधान)..

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- अध्यक्ष महोदय, हमें शर्म लग रही है कि सरकार के इतने वरिष्ठ मंत्री इस घोटाले में शामिल हैं.

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- तिवारी जी, आप कृपया बैठ जायें. आप बहुत इन्टरफियर करते हैं, आप कृपया बैठ जायें. मंत्री जी, कृपया विषय पर आयें.

श्री यशपाल सिंह सिसौदिया-- तिवारी जी को बार बार खडे होने की कोई बीमारी तो नहीं है, अभी स्वास्थ्य शिविर लगा है ,जांच करा लें.

कृषि मंत्री (श्री गौरी शंकर बिसेन)-- अध्यक्ष महोदय तिवारी जी को पाबंद किया जाये कि यह बार बार खडे न हों.

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- अध्यक्ष महोदय, हाईकोर्ट में गये, हाईकोर्ट की डबल बैंच में चीफ जस्टिस साहब खुद उसकी मानीटरिंग कर रहे हैं . हमारे साथियों को हाईकोर्ट पर विश्वास नहीं है. हाईकोर्ट के मार्गदर्शन पर जांच हो रही है उस पर हमारे विपक्ष के साथियों को विश्वास नहीं है. अगर हाईकोर्ट जांच नहीं कर रही होती तो मैं खुद कहता मुख्यमंत्री जी से कि सीबीआई से जांच कराईये, मैं खुद कहता.(मेजों की थपथपाहट) पर आप माननीय उच्च न्यायालय जिसके मार्गदर्शन में जांच हो रही है उसके बाद उनके ऊपर इनको विश्वास नहीं है. अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे प्रार्थना करना चाहता हूं और आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि एक महत्वपूर्ण विषय पर आपने चर्चा प्रारंभ कराई. मैं टीवी चैनल देख रहा था. टीवी चैनल के ऐंकर ने जब यह कहा कि मध्यप्रदेश का कोई डॉक्टर अगर हो तो इलाज कराने के पहले पूछ लें कि व्यापम के माध्यम से उसका चयन तो नहीं हुआ. अध्यक्ष महोदय, मेरे रोंगटे खडे हो गये, डॉक्टर शेजवार जी ने अभी दोनों परीक्षाओं के बारे में बताया , व्यापम के माध्यम से सरकारी नौकरी में भी प्रवेश दिया गया और शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रवेश दिया गया . लाखों की संख्या में नोजवानों ने अपने परिश्रम , योग्यता, ज्ञान के बल पर कॉलेजों में प्रवेश लिया और मध्यप्रदेश सरकारी की नौकरी में प्रवेश लिया , आप उन सबको अपमानित करने का काम कर रहे हैं.

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि इसमें गड़बड़ियां हुई, हमने स्वीकार किया है कि लाखों की संख्या में ईमानदारी से भर्तियां हुई हैं पर कुछ सैकड़ों में गलतियां भी हुई हैं. जहां गलतियां हुई हैं वहां पर लोगों को दंडित भी किया गया है, उनके खिलाफ कार्यवाही की जा रही है. निष्पक्ष कार्यवाही की जा रही है. आपने खुद ने चार चार बार कहा कि हमारे एक मंत्रि मंडल के साथी जो पहले थे वे अभी जेल के अंदर हैं. इससे बड़ा और निष्पक्षता का कोई उदाहरण हो सकता है . (मेजों की थपथपाहट)

श्री कमलेश्वर पटेल -- असली अपराधी अभी बाहर हैं.

श्री कैलाश विजयवर्गीय -- अध्यक्ष महोदय, इस बात के लिये तो मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन करना चाहिये, और आप इस्तीफा मांग रहे हैं.

(नेता प्रतिपक्ष द्वारा बैठे बैठे कुछ कहने पर)

अध्यक्ष महोदय, यह नेता प्रतिपक्ष की गरिमा है, बैठे बैठे बोल रहे हैं. मुझे जो चिंता है वह इसी बात की है कि सदन की गरिमा का क्या होगा, जब नेता प्रतिपक्ष का आचरण इस सदन में यह है. आखिर संसदीय परम्परा यहां पर कुछ रही हैं,उसका सभी को पालन करना चाहिये.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, मैंने तो यह निवेदन किया था कि डॉक्टर गौरी शंकर शैजवार इतना समय नहीं दे सके थे और आसंदी से भी निर्देश नहीं हुआ था, तो होगा क्या फिर, प्रतिपक्ष को जब मौका लगेगा तब बोलेगा अपनी बात को.

अध्यक्ष महोदय-- संसदीय मर्यादा यह है कि यदि कोई वक्ता बोल रहा हो और कोई भी माननीय सदस्य बीच में खड़ा हो तो यदि वह वक्ता नहीं बैठे तो हमको नहीं बोलना चाहिये. दूसरी बात कि बैठे बैठे नहीं बोलना चाहिये. माननीय मंत्री जी कृपया अपनी बात रखें.

श्री कैलाश विजयवर्गीय -- अध्यक्ष महोदय धन्यवाद इस प्रकार आप ज्ञानवर्धन करते रहियेगा तो कम से कम सदन की परम्परा बनी रहेगी.

अध्यक्ष महोदय, अभी डॉक्टर साहब ने जो बात कही, जिस प्रकार इस प्रदेश के अंदर पिछले दिनों, पिछली सरकारों में भर्ती हुई, उसको मैं भुगत रहा हूं. आवास एवं पर्यावरण विभाग , मैंने अपने पीएस से कहा कि इतने अधिकारियों की भर्ती कैसे हुई जरा यह तो बताओ, यह सदन के अंदर रिकार्ड ही नही. फिर मुझे बताया गया कि सिगरेट की पर्ची पर लिखकर के दे दिया जाता है कि इसको यहां का सीएमओ बना दो.

श्री राम निवास रावत-- तो उसकी भी जांच कराओ, 11 साल से सत्ता में बैठे हो कार्यवाही करो.

श्री कैलाश विजयवर्गीय -- वह भी प्रथम श्रेणी में नियुक्तियां हुई हैं. उस अव्यवस्था को व्यवस्थित करने के लिये प्रदेश के मुख्यमंत्री ने व्यापम का गठन किया. श्री रामनिवास रावत-- अपनी स्मृति पर जौर दें व्यापम का गठन तो पहले ही हो गया था.

एक माननीय सदस्य-- नई भर्तियां सिर्फ पीएमटी, पीईटी के अलावा भी व्यापम के माध्यम से चालू हुई.

श्री सुंदरलाल तिवारी-- अध्यक्ष महोदय 1970 से मंडल बना हुआ है. मंत्री जी. 1970 से पीएमटी और पीईटी की परीक्षा ली जा रही है.

श्री कैलाश विजयवर्गीय -- रावत जी मंडल को अधिकार 2007 में अधिनियम बनाकर के दिया.

अध्यक्ष महोदय-- कृपया बैठ जायें. माननीय मंत्री जी को बोलने दें.

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- व्यापम को कानूनी अधिकार 2007 में अधिनियम बनाकर दिया.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- 1970 में मंडल का निर्माण हुआ है.

डॉ. गौरीशंकर शेजवार-- अध्यक्षजी, तिवारीजी की सीट चेक करवा लें कहीं कुछ है तो नहीं बार-बार उठ रहे हैं.

श्री विश्वास सारंग-- अध्यक्षजी, मैंने सुना था ऐसी कोई बीमारी भी होती है. इनको बीमारी है.डॉक्टर को दिखाना पड़ेगा. (हंसी)

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- अध्यक्ष महोदय, प्रदेश की शिक्षा का स्तर उसके शिक्षकों के माध्यम से होता है. बाकी स्तर भी, वहां पर काम करने वाली जो कार्यपालिका है, उसके स्तर पर होता है. यदि स्तरहीन कार्यपालिका होगी तो प्रदेश कभी प्रगति नहीं कर सकता. हमारे मुख्यमंत्रीजी ने योग्यता के आधार पर सरकार में कर्मचारियों का चयन हो इसलिए 2007 में व्यापम को अधिनियम बनाकर अधिकार दिये. मुझे कहते हुए गर्व है कि 99.99 प्रतिशत कर्मचारियों का चयन शत-प्रतिशत योग्यता के आधार पर हुआ है. आप इस प्रकार आरोप लगाकर उन नौजवानों का अपमान कर रहे हैं जिन्होंने योग्यता के आधार पर आज यहां पर नौकरी प्राप्त की या कॉलेजों में प्रवेश प्राप्त किया.

श्री कमलेश्वर पटेल-- अध्यक्ष महोदय, यह तो व्यापम की विश्वनियता पर प्रश्न चिह्न लगाने के लिए इस तरह की व्यवस्था बनायी है.

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- अगर गड़बड़ी है तो 00.01 प्रतिशत है और उसको आप महाघोटाला बता रहे हैं, आप मध्यप्रदेश के नौजवानों का अपमान कर रहे हैं.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- यह 00.01 किस केलकुलेटर से निकाला है.

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- आपके इस आरोप से आज नेशनल टीवी का न्यूज एंकर यह कहने का साहस कर रहा है कि मध्यप्रदेश का डॉक्टर हो तो इलाज कराने के पहले चार बार सोचना. क्या हमारे प्रदेश में योग्य डॉक्टर नहीं हैं ? योग्यता के आधार पर प्रवेश नहीं हुआ ? आप उन सबके साथ अन्याय कर

रहे हैं. आप बहुत बड़ा पाप कर रहे हैं. आपको आने वाला समय कभी माफ नहीं करेगा. जिस तरीके से आप बात कर रहे हैं. आप उन पर प्रश्न चिह्न खड़ा कर रहे हैं.

श्री रामनिवास रावत-- आप घोटाले करते जाओ.

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- (XXX)

अध्यक्ष महोदय-- इसको कार्यवाही से निकाल दें. आप विषय पर आयें.

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- मुझे कहते हुए यह बहुत गर्व है कि इस मध्यप्रदेश में पहली बार पटवारियों की परीक्षा ऑन लाईन हुई. ऑन लाईन परीक्षा हुई पटवारियों का सिलेक्शन हुआ और भारत ही नहीं एशिया पेसीफिक में मध्यप्रदेश के व्यापम को उनकी पारदर्शता के कारण पुरस्कार प्राप्त हुआ. कोई अनुशंसा नहीं. पहले पटवारियों का चयन कैसे होता था. इस मंत्री के चार, उस मंत्री के चार, इस संत्री के चार उसके रिश्तेदार चार ऐसे पटवारियों का चयन होता था. निष्पक्षता के साथ सरकारी नौकरी में प्रवेश अगर किसी ने दिया है तो उसका श्रेय हमारे लोकप्रिय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह जी को जाता है, जिन्होंने पारदर्शी तरीके से और आधुनिक तकनीक का उपयोग करके, पटवारी की परीक्षा करवायी. जो गलतियां है हम उसको स्वीकार करते हैं, जहां अनियमितता हुई हम उसको स्वीकार करते हैं पर उसके साथ ही उसमें कहीं पर भी किसी को बख्शा नहीं गया है इस बात के लिए विपक्ष को मुख्यमंत्रीजी की पीठ थपथपाना थी. (मेजों की थपथपाहट)पर मुझे कहते हुए बहुत अफसोस है कि पीठ थपथपाने के लिए बड़ा दिल चाहिए. बड़ा कलेजा चाहिए.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- आप लोग क्या मुख्यमंत्रीजी को फंसा रहे हो. इधर से तो किसी ने मुख्यमंत्रीजी का नाम नहीं लिया. इधर कोई मुख्यमंत्रीजी आपका नाम नहीं ले रहा ये आपके सहयोगी आपको पहले ही से बचा रहे हैं. (व्यवधान) ये आपके मित्र हैं कि दुश्मन. यहां से कोई नहीं बोल रहा.

(XXX) **आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.**

श्री कैलाश विजयवर्गीय-- मुझे तिवारी जी की गरिमा की कोई चिन्ता नहीं है. इनके पिताजी की बड़ी प्रतिष्ठा थी. उनकी गरिमा का ध्यान रखिये जरा.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- अध्यक्षजी, यह मुख्यमंत्रीजी मुख्यमंत्रीजी घर से रट कर चले आये हैं.

अध्यक्ष महोदय-- बैठ जायें. आपका अवसर आये तब बोलें वरना आपका अवसर चला जायेगा. आपका सब रिकार्ड हो रहा है कि आप कितने मिनट बोले.

श्री कैलाश विजयवर्गीय – माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर मैं इनकी वास्तविकता बताऊंगा तो यह यहां पर सिर के बल खड़े हो जायेंगे. जब यह जनपद अध्यक्ष थे उस समय जिस प्रकार से शिक्षकों की भर्ती की है, ये खुद आरोपों के कटघरे में खड़े हुए हैं.

अध्यक्ष महदोय – आप अपनी बात कहें. तिवारी जी आप बैठ जायें. यह सब निजी आरोप रिकार्ड में नहीं आयेंगे...(व्यवधान) --

श्री सुन्दर लाल तिवारी –(X X)

डॉ. गौरीशंकर शेजवार – लोकायुक्त की जांच हुई. आपसे विजयवर्गीय जी ने कहा है तो यह गलत है या सही है. जनपद वाली जो बात की है... (व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय – तिवारी जी आप बैठ जायें...(व्यवधान) जब आपको अवसर दिया जायेगा तब ही आपकी बात लिखी जायेगी.

श्री कैलाश विजयवर्गीय – अध्यक्ष महोदय, हम लोग विपक्ष में थे. आरक्षकों की भर्ती हो रही थी. इस सदन में बैठा हुआ एक व्यक्ति इस प्रदेश का गृहमंत्री भी था. अध्यक्ष महोदय, उस समय आरक्षकों की भर्ती में सौदे हुए हैं. उस समय एक और डेढ़ लाख रूपये में सौदे हुए हैं. आज पारदर्शी तरीके से आरक्षकों की भर्ती हुई है . जितनी भर्ती की गई है सबमें पारदर्शिता है. सब अपनी योग्यता के आधार पर भर्ती हुए हैं, सबने अपनी योग्यता के आधार पर कालेजों में प्रवेश लिया है, सब अपनी योग्यता के आधार पर डॉक्टर बन रहे हैं. पर इनके आरोप से आज हर व्यक्ति को कटघरे में खड़ा कर दिया है. अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश के नौजवानों का अपमान करने का काम इन कांग्रेस के लोगों ने किया है....(व्यवधान).. अभी तो यह यहां से यहां हुए हैं, अगली बार यह कहां जायेंगे इस बात की चिंता करें यह. अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि भाजपा की सरकार ने हमारे मुख्यमंत्री जी ने व्यापमं का गठन करके

पारदर्शिता से नौकरी में लोगों को योग्यता के आधार पर प्रवेश दिलाया है, कालेज में भी प्रवेश दिलाया है लेकिन जो गलतियां हुई हैं तो उन गलतियों के लिए निश्चित रूप से सजा दी जा रही है. इसलिए मुख्यमंत्री जी का इस्तीफा मांगने वाले अपने गिरेबां में झांके, मुझे मालुम है कि अगर वह आत्म विश्लेषण करेंगे तो मुख्यमंत्री जिंदाबाद के नारे लगायेंगे....(व्यवधान)..

श्री मुकेश नायक – अध्यक्ष महोदय, स्थगन प्रस्ताव में मेरा नाम है. अगर आप अनुमति दें तो इस विषय पर मैं चर्चा को आगे बढ़ाना चाहता हूं .

अध्यक्ष महदोय – आपका नाम नहीं है.

श्री मुकेश नायक – है, मेरे पास उसकी कापी हैं. आप कहें तो आप तक पहुंचा दूं.

अध्यक्ष महोदय – यह आपने कब दिया है ? आपने विक्रम सिंह नाती राजा के साथ में हस्ताक्षर किये हैं. पहला ही नाम लिया जाता है, यही परंपरा है. यह जो लिस्ट है, उसमें पार्टी से भी आपका नाम नहीं आया है...(व्यवधान)...

श्री निशंक कुमार जैन (बासौदा) - माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसा कि मंत्री जी बता रहे थे वर्ष 2007 में व्यापमं के अधिनियम में संशोधन करके व्यापमं को और अधिकार दिये गये. माननीय अध्यक्ष महोदय, आप देखिए, वर्ष 2007 में व्यापमं को और अधिकार दिये जाते हैं और वर्ष 2008 में ही व्यापमं में पहला घोटाला डॉक्टरों की भर्ती के मामले में सामने आता है. यानि किस षड्यंत्र के तहत व्यापमं के अधिकार बढ़ाए गये, मैं यह आपके माध्यम से बताना चाहता हूं. जब वर्ष 2008 में घोटाला सामने आया, फिर व्यापमं की निष्पक्षता का ध्यान रखते हुए उन्हें 65 भर्ती के अधिकार और क्यों दिये गये? मध्यप्रदेश के युवाओं के साथ इससे बड़ा कुठाराघात और क्या होगा कि तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों की भर्ती में पहले प्रदेश के नौजवानों को मौका दिया जाता था, फिर संशोधन किया गया और पूरे देश के युवाओं को उसमें मौका दिया गया. क्या यह प्रदेश के युवाओं के साथ कुठाराघात नहीं है?

अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से यह पूछना चाहता हूं कि जब वर्ष 2008 में व्यापमं में घोटाला सामने आया और नितिन महेन्द्र और अशोक सेन के विरुद्ध ईओडब्ल्यू की जांच की मांग की, तब सरकार ने ईओडब्ल्यू की जांच की अनुमति क्यों नहीं दी? क्योंकि कहीं न कहीं इनकी मंशा गलत थी. यह मैं आपके सामने बताना चाहता हूं कि हद तो तब हो गई जब पुलिस भर्ती में युवाओं के समान युवतियों के लिए भी, हमारी बहनों के लिए भी उसी शारीरिक योग्यता का मापदंड बना दिया, जबकि उसके पहले 5 फुट 5 इंच

युवाओं के लिए और युवतियों के लिए 5 फुट 1 इंच की योग्यता थी. हाईकोर्ट ने आदेश दिया उसके बाद पुनः अलग-अलग नियम बनाये गये.

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि सरकार साफ है. सरकार की मंशा साफ है तो फिर सीबीआई की जांच से हम क्यों डर रहे हैं? यदि मेरे कपड़े सफेद हैं तो किसी भी कांच के सामने खड़ा कर दो, मेरा चेहरा तो वही रहेगा. मेरे कपड़े तो वही रहेंगे. मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान टाइम्स पेपर के एक संवाददाता ने एक खबर छापी. दूसरे ही दिन उसको मकान खाली करने का नोटिस दे दिया. यह हमारी सरकार की निष्पक्षता है. मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि सीबीआई से जांच कराई जाय और जिन परीक्षार्थियों को उत्तीर्ण किया गया है उनकी 10 वीं, 12 वीं की मार्कशीट और उनका मूल निवासी प्रमाण-पत्र सदन के पटल पर रखा जाय. इससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा. आपने बोलने के लिए जो मौका दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद.

गृहमंत्री (श्री बाबूलाल गौर) - अध्यक्ष महोदय, किसी भी पत्रकार को सरकार के द्वारा कोई नोटिस नहीं दिया गया है.

परिवहन मंत्री (श्री भूपेन्द्र सिंह)- अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा आज माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय सदन के नेता दोनों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए इस स्थगन पर चर्चा कराने का निर्णय लिया गया है. मैं आपको धन्यवाद देता हूं. अध्यक्ष जी, वास्तव में हमारे प्रदेश में पिछले कुछ दिनों से एक धुंध का वातावरण बनाने का प्रयास हमारे माननीय विपक्ष के नेताओं के द्वारा किया गया. इसीलिए आज इस पर जो चर्चा हो रही है, उस चर्चा से सारी स्थिति प्रदेश की जनता के सामने आएगी.

माननीय अध्यक्ष जी, पूर्व में मैं वर्ष 1993 से लेकर वर्ष 2003 तक इस सदन का सदस्य रहा हूं. माननीय श्री दिग्विजय सिंह जी उस समय इस सदन के नेता थे, मुख्यमंत्री थे. हमारे नेता प्रतिपक्ष श्री सत्यदेव कटारे जी भी उस समय गृहमंत्री हुआ करते थे. जैसा माननीय श्री कैलाश जी ने कहा, उस समय भी सदन की कुछ परम्पराएं थीं. हम लोग भी अपनी बात रखते थे और तथ्यों और तर्कों के साथ रखते थे.

परन्तु माननीय अध्यक्षजी, अभी जो देखने को मिल रहा है वह हमारे प्रदेश के लिए,लोकतंत्र के लिए अच्छी परम्परा नहीं है और इसलिए मैं माननीय नेता प्रतिपक्ष जी से आग्रह करूंगा कि सदन में सदन के नेता और

नेता प्रतिपक्ष दोनों समान रूप से सम्मान का केन्द्र होते हैं और इसलिए नेता प्रतिपक्ष उस गरिमा को बढ़ाने का काम करेंगे. माननीय अध्यक्ष जी, हमारे प्रदेश के अंदर पहले जो नियुक्तियां होती थीं उन नियुक्तियों में अलग अलग विभागों के द्वारा नियुक्तियां होती थीं. नियुक्तियों को लेकर तरह तरह की शिकायतें भी आती थीं और विभागों के पास कोई प्रक्रिया नहीं थी और इसलिए विभागों को नियुक्तियां करने में कठिनाई होती थी. इस कारण से मुख्यमंत्री जी ने, हमारी सरकार ने यह निर्णय लिया कि अब हम सारी परीक्षाएं व्यापमं के माध्यम से करायेंगे. जिससे एक पारदर्शी प्रक्रिया हमारे प्रदेश के अंदर स्थापित हो सके. एक पारदर्शी प्रक्रिया से हमारे प्रदेश के अंदर नियुक्तियां हो सकें. और इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी ने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया कि अब हम मध्यप्रदेश की सारी परीक्षाएं व्यापमं के माध्यम से करायेंगे. इस प्रकार एक पारदर्शी व्यवस्था हमारी सरकार ने प्रदेश के अंदर लाने का प्रयास किया. माननीय नेता प्रतिपक्ष जी , आप भी जानते हैं कि सरकार के कार्य में अगर नीचे स्तर पर कोई गलतियां होती हैं, अधिकारी,कर्मचारी स्तर पर गलतियां होती हैं तो कार्यवाही करना सरकार का दायित्व है. मैं पिछले पांच साल सांसद था और संसद के अंदर भी माननीय अध्यक्षजी अनेक ऐसे मामले आते थे. मैं नहीं समझता कि कभी नियुक्तियों के मामले में हम लोगों ने विपक्ष के नाते उस समय के माननीय प्रधान मंत्री जी को कभी यह कहा हो कि आप प्रधान मंत्री को आरोपी बनाईये. प्रधान मंत्री इस बात के लिए इस्तीफा दें. आखिर ये प्रशासनतंत्र होता किस बात के लिए हैं.? अगर मुख्यमंत्री जी के ध्यान में कोई विषय आता है और मुख्यमंत्री जी उस पर निर्णय करते हैं कि इस पर हम तत्काल कार्यवाही करेगे और इसके लिए मुख्यमंत्री जी एस.टी.एफ. बनाने का निर्णय करते हैं तो अध्यक्ष जी माननीय मुख्यमंत्री जी ने कौन सा अपराध कर दिया. अगर मुख्यमंत्री जी चाहते तो दो चार अधिकारियों पर कार्यवाही करके मामले को समाप्त भी कर सकते थे. अगर हमारी सरकार के लोग दोषी होते और अगर हमारी नीयत ठीक नहीं होती तो क्या हम एस.टी.एफ. बनाने का काम करते? और माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, एस.टी.एफ. में भी उस अधिकारी को जांच का जिम्मा सौंपा जो अधिकारी मध्यप्रदेश ही नहीं पूरे देश के अंदर अपनी नैतिकता और ईमानदारी के लिए जाना जाता है. उस अधिकारी को जिम्मेदारी सौंपी. जो छः साल तक "रा" (RAW) का अधिकारी रहा जिसने शादी नहीं की, जिसका कोई परिवार नहीं. ऐसे व्यक्ति को हमने एस.टी.एफ. की जांच सौंपी. उस समय चुनाव थे. और चुनाव के

समय आपको लगता था कि व्यापम के माध्यम से हम मध्यप्रेदश की सरकार को बदनाम कर सकते हैं. और आपने एक योजना बनाई. इस मामले को सी.बी.आई. को देना चाहिए. उस समय दिल्ली में आपकी सरकार थी और चाहते थे कि सी.बी.आई. के माध्यम से हम मध्यप्रदेश के नेताओं को फंसाने का षडयंत्र करें. हम मध्यप्रदेश के नेताओं को आरोपी बनाने का काम करें और जिसका लाभ हमें विधानसभा के चुनावों में मिल सके. माननीय अध्यक्ष जी,. मैं निवेदन करना चाहता हूं जब उस समय इनकी जांच की बात हमारे माननीय विपक्ष के लोग कर रहे थे. आप सी.बी.आई. के मांग कर रहे थे ना? आपकी सरकार में सी.बी.आई, के बारे में सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा, जब आपकी सरकार थी. मैं कुछ बिन्दु यहां पर आपको उल्लेख करता हूं. " सी.बी.आई. पिंजरे में बंद तोते की तरह है.सरकारी अफसरों ने कोयला घोटाले की आत्मा ही बदल दी" ये सप्रीम कोर्ट ने कहा. ..

अश्विनी कुमार जो आपके मंत्री थे, जिनको इस्तीफा देना पड़ा, उसमें सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा. कोयला खदान आवंटन की सी.बी.आई. जांच को प्रभावित करने पर सुप्रीम कोर्ट ने अश्विनी कुमार को फटकार लगाई.

श्री जीतू पटवारी—अध्यक्ष महोदय, अखबारों की बातों को यहां कोट करने की परंपरा नहीं है.

श्री भूपेन्द्र सिंह—जीतू भाई रिकार्ड के आधार पर बोलूंगा. आप सुनिये.

श्री कमलेश्वर पेटल—अध्यक्ष महोदय, क्या माननीय मंत्री भी सी.बी.आई. को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं?

श्री भूपेन्द्र सिंह—कमलेश्वर जी सुनिये. आपके समय सी.बी.आई. की स्थिति क्या थी, वह बता रहा हूं. सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा, सुनिये तो. आप सी.बी.आई. की बात कर रहे हैं.

एक माननीय सदस्य—कैसे मुलायम जी और मायावती जी को सी.बी.आई. का डर दिखाया, यह पूरा देश जानता है.

श्री कमलेश्वर पटेल—आपको सी.बी.आई. में पूरी विश्वसनीयता है और आप में दम है तो इसे सी.बी.आई. को सौंप दीजिए.

श्री भूपेन्द्र सिंह—कमलेश्वर जी, जब आप बोले तो मैं बिलकुल नहीं उठा और इसलिए कुछ परंपराएं सदन की होती हैं, अगर मैं खड़ा हूं तो फिर आपको बैठना चाहिए. आप कुछ तथ्यात्मक बात कहेंगे तो मैं बैठूंगा. इसलिए कुछ सदन की उच्च परंपराएं बनाएं. सी.बी.आई. के बारे में सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा, सुनिये, सी.बी.आई. का इतना बड़ा दुरूपयोग अपने फायदे के लिए आज के पहले किसी भी सरकार ने नहीं किया. आखिर सरकार अपनी नाकामी कब तक दूसरों के सिर पर थोपती रहेगी. क्या इस सरकार में कोई भी जिम्मदार नहीं है? यह सुप्रीम कोर्ट ने कहा है और आगे भी यह कहा कि इस सरकार ने हमारा ही नहीं बल्कि कानून व्यवस्था का भरोसा तोड़ा है. मेरे पास 20 प्वाइंट है, जो सुप्रीम कोर्ट ने उस समय सी.बी.आई. और आपकी सरकार के बारे में कहे हैं.

श्री सुखेन्द्र सिंह—अब तो दिल्ली में आपकी सरकार है न अब तो कोई दिक्कत नहीं है.

श्री भूपेन्द्र सिंह—सुनिये न, आपको बोलने का मौका मिलेगा, तब बोलियेगा. आप सी.बी.आई. की बात कर रहे थे, सरकार ने मामला एस.टी.एफ. को दिया. आपको लगा कि मामला बिगड़ गया, सी.बी.आई. के पास नहीं गया और जो हम राजनैतिक खेल खेलना चाहते थे, वह नहीं खेल पाए. आप हाईकोर्ट गए, हाईकोर्ट में आपने 14 याचिकाएं लगवाई.

श्री सुंदरलाल तिवारी—इन्डीविजुअल पिटीश्नर्स गए हैं, हमारी पार्टी नहीं गई है.

श्री भूपेन्द्र सिंह—तिवारी जी सुनिये, आपके पिताजी मेरे बारे में जानते हैं, मैं हवा में बात नहीं करता.

श्री बाला बच्चन—(xxx)

अध्यक्ष महोदय—यह सब निकाल दें.

श्री बाला बच्चन—(xxx)

श्री भूपेन्द्र सिंह—यह 107 पेज का हाईकोर्ट का आर्डर है. 14 रिट लगी थीं. पी.सी.शर्मा जी की तरफ से भी इसमें पी.आई.एल. थी, हाई कोर्ट ने क्या कहा वह सुनिये. "The State Government, looking to the gravity of the matter and realizing that the incident was not as isolated incident but offence committed by organized crime syndicate, on its own, in less that seven weeks from registration of FIR on 7th July, 2013, had constituted the Special Task Force, vide order dated 26th August, 2013."

श्री सुंदरलाल तिवारी—यह तो आपकी रिप्लाई है.

श्री भूपेन्द्र सिंह—तिवारी जी फिर से एक बार पिताजी से मेरे बारे पूछिये.

श्री सुंदरलाल तिवारी—आप जजमेन्ट में आईये, यह तो कोर्ट में आपकी रिप्लाई है.

श्री भूपेन्द्र सिंह—आप सुनिये तो...

(xxx)—आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

श्री भूपेन्द्र सिंह--- आप पूरा सुनिये तो. "The Constitution of the STF was to set up a police station by the name of Special Task Force having territorial jurisdiction over whole of the State of Madhya Pradesh for the purposes of investigation". मैं इसको हिन्दी में पढ़ देता हूँ. व्यावसायिक परीक्षा मण्डल से संबंधित मामलों के अनुसंधान एसटीएफ से सीबीआई को अंतरित करने के लिए उच्च न्यायालय जबलपुर में कुल 14 याचिकाएँ प्रस्तुत की गईं जिसमें मुख्यत: यह आक्षेप लगाये गये थे कि राज्य सरकार द्वारा व्यापमं संबंधी मामलों में कोई ठोस कार्यवाही नहीं की जा रही है.साथ ही उन याचिकाओं में एसटीएफ की कार्यप्रणाली पर भी यह कहते हुए आक्षेप किया गया कि एसटीएफ राज्य सरकार के अधीन कार्य करती है इसलिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष जांच नहीं करेगी. माननीय उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश एवं माननीय न्यायाधीश श्री के.के.त्रिवेदी की डबल बैंच द्वारा उपरोक्त सभी याचिकाओं का निराकरण अपने आदेश दिनांक 16 अप्रेल 2014 को याचिकाकर्ता द्वारा उठाये गए सभी आरोपों को अमान्यकरते हुए राज्य सरकार द्वारा की गई कार्यवाही की हाईकोर्ट के द्वारा प्रशंसा की गई (मेजों की थथपथाहट)

श्री सुन्दरलाल तिवारी—यह किस पैरा में हैं? यह बताइये. कहां से आपने अपना फैसला लिखा है. (व्यवधान) पैरा बताइये. अंग्रेजी तो मैंने आपकी अभी देख ली.(व्यवधान) वह पैरा बताइये जहां अदालत ने लिखा हो. मंत्री जी, आप अदालत के फैसले को कोड कर रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय—कृपया सुन लें. आप बैठ जाएं कृपया.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- अध्यक्ष महोदय, अदालत के आदेश की बात की है, पैरा बतायें कि किस पैरा में अदालत ने यह लिखा है. मेरे पास अदालत का फैसला है.

श्री भूपेन्द्र सिंह—मैं पैरा 19 कह रहा हूँ, आपको सुनाई नहीं पड़ रहा है क्या?

अध्यक्ष महोदय—आपका जब अवसर आये, तब आप बोलियेगा.

श्री सुन्दरलाल तिवारी—(x x x)

अध्यक्ष महोदय-- यह कुछ भी बात नहीं लिखी जाएगी. माननीय तिवारी जी की कोई बात नहीं लिखी जाएगी.

श्री भूपेन्द्र सिंह—मैं इसको पटल पर रखता हूँ. आगे सुनिये एसटीएफ ने क्या कहा.

श्री सुन्दरलाल तिवारी—(x x x)

अध्यक्ष महोदय—आप बैठ जाएं कृपया.(व्यवधान)

श्री सुन्दरलाल तिवारी—(x x x)

अध्यक्ष महोदय-- आप कृपया बैठ जाइये.यह कुछ रिकार्ड में नहीं आ रहा है.कृपया सीधी बात नहीं करें. आप उनको बोलने दें,आपका जब अवसर आयेगा तब बोलियेगा. सारे प्वाइंट आप नोट डाउन कर लें, यहां वाद-विवाद नहीं हो रहा है. पहले उनको बोलने दें फिर आप बोलियेगा.

श्री भूपेन्द्र सिंह—माननीय उच्च न्यायालय ने इस बात की भी प्रशंसा की कि राज्य सरकार ने एसटीएफ में बेदाग छवि वाले अधिकारियों की पदस्थापना की है. माननीय उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार की इस बात के लिए प्रशंसा की. माननीय अध्यक्ष जी, जैसा मैंने कहा कि सरकार ने एसटीएफ को मामला दिया . हाईकोर्ट की निगरानी में पूरी जांच हो रही है. अब क्या सीबीआई हाईकोर्ट से बड़ी होती है. जब हाईकोर्ट की निगरानी में जांच हो रही है. हाई कोर्ट सीबीआई से तो ऊपर है फिरि िवपक्ष को लगा कि अब कोई मुद्दा नहीं है,

----

(X X X) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया

औऱ जब हमारा 3 से 5 मार्च 2014 वाला सत्र हुआ तो उस समय विपक्ष ने फिर यह बात उठाई औऱ उस समय भी इस बात को कहा कि व्यापमं में गड़बड़ी हुई. माननीय मुख्यमंत्री जी ने उस समय भी एक-एक बात का जवाब दिया.माननीय अध्यक्ष जी, उस समय भी इऩकी नजर लोकसभा के चुनाव पर थी कि कैसे भी लोकसभा चुनाव में व्यापमं का विषय उठाकर औऱ इसका चुनाव में लाभ लेने का काम करें, परन्तु मध्यप्रदेश में लोकसभा के चुनाव में 29 में से 27 सीटें जीतकर हमने मध्यप्रदेश में रिकार्ड बनाने का काम किया, मध्यप्रदेश के इतिहास में रिकार्ड बनाया. उस समय भी आपकी नहीं चली. अध्यक्ष महोदय, मैंने अपने जीवन में इतना गैर जिम्मेदार विपक्ष का नेता आज तक नहीं देखा. आज मध्यप्रदेश के अंदर जब मार्च में सत्र चल रहा था उस समय हमारे यहाँ ओलावृष्टि हुई, हमारे प्रदेश का व्यापक नुकसान हुआ पर विपक्ष के नेता इस बात को लेकर सदन में नहीं आए . आज जब मध्यप्रदेश में अवर्षा की स्थिति है...(व्यवधान)....

श्री रामनिवास रावत --- अध्यक्ष महोदय, ओलावृष्टि औऱ अतिवृष्टि पर नियम 139 में चर्चा हुई है.

श्री जितु पटवारी--- चर्चा हुई थी...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य--- चर्चा हुई थी, अभी तक किसानों को मुआवजा नहीं मिला है.

अध्यक्ष महोदय-- आप कृपया विषय पर आएं, कृपया आप बैठ जाएं.

श्री भूपेन्द्र सिंह--- अध्यक्ष महोदय, जब पूरा प्रदेश अवर्षा का सामना कर रहा है , सूखा पड़ा हुआ है.तब इनको व्यापमं दिख रहा है .

श्री रामनिवास रावत--- अध्य़क्ष महोदय, माननीय मंत्री जी आऱोप लगा रहे हैं कि पिछले सदन में ओलावृष्टि पर चर्चा नहीं हुई है जबकि 139 के तहत उस पर चर्चा हुई है. प्रोसीडिंग उठाकर आप देख लें.

श्री भूपेन्द्र सिंह---- अध्यक्ष महोदय, इनको 7 करोड़ जनता का दर्द नहीं दिख रहा है... (व्यवधान)...अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि जिस तरह से इन्होंने फर्जी आरोप लगाने का काम किया , किस तरह से मीडिया के सामने आने का काम किया.इऩके प्रवक्ता ने प्रेस में कहा कि मध्यप्रदेश में परिवहन विभाग में 19 आरक्षकों की गलत भर्ती हुई है. मैं परिवहन मंत्री हूं. मैंने पूछा कि आपके जो प्रवक्ता हैं वह 19 नाम बतायें कि कौन से 19 नाम हैं जिनकी गलत नियुक्ति हुई. माननीय अध्यक्ष जी, हमने उच्च परंपरायें स्थापित करने का काम किया , हमने दूसरे दिन 316 आरक्षकों की सूची मीडिया के सामने देने का

काम किया कि यह 316 आरक्षकों की सूची है आज दिनाँक तक 10 दिन हो गये हैं ,लेकिन सूची देने के बाद,सूची वेबसाईट पर होने के बाद आज तक कॉग्रेस के जो प्रवक्ता हैं, वह आज तक 19 आरक्षकों के नाम नहीं बता पाये हैं. अरे, महाराष्ट्र का एक आरक्षक नहीं था, बाकी तो छोड़िये. यह हालत है. यह ऐसा गैर जिम्मेदार विपक्ष? आप कुछ भी आरोप लगा दो. आप इस प्रदेश को किस दिशा में ले जाना चाहते हो, आप राजनीति को किस दिशा में ले जाना चाहते हो अगर आप इस तरह की राजनीति करोगे तो क्या इससे आप यह मानकर चलते हैं कि हम प्रदेश का कुछ भला कर पाएंगे क्या. हम प्रदेश को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं . आपके पास कोई तथ्य , कोई प्रमाण नहीं है, जो मन में आए आप आरोप लगा दो. आपके पास कोई जवाब नहीं. कुछ कहने के लिए आपके पास नहीं है.माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष के नेताओं को व्यापमं का घोटाला दिखता है . जो भी संख्या होगी 200, 400 . माननीय अध्यक्ष जी , आपके प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने....

अध्यक्ष महोदय--- कृपया समाप्त करें.

श्री भूपेन्द्र सिंह---- अध्यक्ष महोदय, पांच मिनट लूंगा. आपके प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने सागर विश्वविद्यालय में डॉ. गजभिये की नियुक्ति की, कुलपति के रूप में. सागर यूनिवर्सिटी में 300 नियुक्तियाँ फर्जी हुई हैं. सीबीआई की जांच में आया, आपने क्या प्रधानमंत्री के ऊपर अपराध दर्ज करने की बात की, आपने क्या प्रधानमंत्री के ऊपर यह बात की कि प्रधानमंत्री के ऊपर मुकदमा रजिस्टर्ड किया जाए उस समय...

डॉ. गोविंद सिंह--- अध्यक्ष महोदय, यह क्या व्यापमं का विषय है?

अध्यक्ष महोदय-- नहीं है.आपकी बात स्वीकार्य है. कृपया विषय पर आएं माननीय मंत्री जी ... (व्यवधान)..

एक माननीय सदस्य--- माननीय अध्यक्ष जी, आईना तो दिखाना पड़ेगा ना.

अध्यक्ष महोदय--- आप उनको बोलने दें.

श्री भूपेन्द्र सिंह-- माननीय अध्यक्ष जी, हमारे नेता प्रतिपक्ष एक धरने में गए, मुख्यमंत्री निवास पर प्रदर्शन करने गए. आप मेरे बड़े भाई हैं पर आपकी उम्र क्या उछलने कूदने की है? आप जाली पर चढ़ गए. अब एक तरफ आप युवाओं से आह्वान कर रहे हैं कि युवा हमारे साथ आएँ कोई युवा आपके साथ नहीं आया, आपको ही जाली पर चढ़ना पड़ा. अब जब आप जाली पर चढ़े, अब यह उछलना कूदना आप छोड़ो. आप जब जाली पर चढ़े..

डॉ.गोविन्द सिंह-- अब यह आपको कैसे पता कि उम्र नहीं है अभी...(व्यवधान)..

श्री भूपेन्द्र सिंह-- इसको तो आप ज्यादा जानते हैं...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- माननीय, कृपया समाप्त करें.

श्री भूपेन्द्र सिंह-- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा यह कहना है कि हमारे नेता प्रतिपक्ष जो भी हुआ हो, अस्पताल गए, हमारे एक भी सदस्य इसमें जो बैठे हैं कोई अस्पताल देखने नहीं गया.

श्री जितु पटवारी-- मैं गया...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- माननीय, अब आपका विषय पूरा हो गया. आप कृपया समाप्त करिए...(व्यवधान)..बहुत समय हो गया है...(व्यवधान)..

कुंवर विक्रम सिंह-- माननीय अध्यक्ष महोदय, चर्चा विषय पर हो...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- विषय का बोल दिया.

श्री भूपेन्द्र सिंह-- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा यही कहना है कि हाईकोर्ट की निगरानी में इस पूरे मामले की देखरेख हो रही है और मैं मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन करना चाहता हूँ. मध्यप्रदेश में हमारी सरकार के होते हुए, हमारे एक पूर्व शिक्षा मंत्री जेल में हैं इससे ज्यादा निष्पक्षता की कार्यवाही और क्या हो सकती है. ...(व्यवधान).. हमारे अपने जेल में हैं. इस पुलिस के डी आई जी, कभी आज तक पुलिस के डी आई जी की गिरफ्तारी हुई, आज एक डी आई जी गिरफ्तार होकर जेल के अन्दर है कभी आपके समय में क्या डी आई जी की गिरफ्तारी हो सकती थी. इससे ज्यादा निष्पक्षता, आप और किस बात की अपेक्षा करते. कार्यवाही में क्या कमी थी. हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने जितनी भी कार्यवाही हो सकती थी उस कार्यवाही को करने का काम किया है और इसलिए सदन माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व के साथ हम उनका अभिनंदन करते हैं (मेजों की थपथपाहट) हम उनका वंदन करते हैं कि उन्होंने यह जो कार्यवाही की है इससे प्रदेश में उच्च मापदंड स्थापित हुए हैं, हम उनका अभिनंदन करते हैं. (मेजों की थपथपाहट)

श्री जितु पटवारी(राऊ)-- माननीय अध्यक्ष जी, जब भी मैं अपनी कुछ बात कहने की चेष्टा करता हूँ तो बार बार मंत्री जी कह रहे थे मेरे बारे में कि आपके पिताजी से पूछ लेना. कैलाश जी ने भी 3-4 बार कहा इतने थे, इतने हो गए और भी संख्या का बखान करते हैं. एक बार भारतीय जनता पार्टी के भी दो एम पी चुने गए थे. अध्यक्ष महोदय, अपनी बात कहने की इच्छा शक्ति सब में होना चाहिए और उसका वह धर्म है.

अध्यक्ष महोदय-- कृपया विषय पर आएँ, जो बात निकल चुकी है उसकी चर्चा करने का यह अवसर नहीं है.

श्री जितु पटवारी-- अध्यक्ष जी, मैं कोशिश करूँगा कि आपको कभी भी मेरे लिए कोई ऐसी बात संज्ञान में न लेनी पड़े जिससे कि मुझे टोकाटाकी हो. मैं मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद करता हूँ और आपको उससे ज्यादा धन्यवाद करता हूँ कि व्यापम वाले मुद्दे पर कम से कम आपने चर्चा कराने की कोशिश तो की. अध्यक्ष जी, देश के इतिहास में अभी तक कई घोटाले हुए हैं, कई आर्थिक घोटाले हुए, राजनैतिक हुए... (व्यवधान)..यह घोटाला बौद्धिक घोटाला हुआ और इसमें जिस प्रकार से.....

राज्य मंत्री, नर्मदा घाटी विकास (श्री लाल सिंह आर्य)-- देश में जो पुराने घोटाले हुए हैं उनके नाम बता दें.

श्री जितु पटवारी-- अध्यक्ष जी, आप से निवेदन करता हूँ कि माननीय सदस्यों को बात सुनने की आदत भी डालनी चाहिए....(व्यवधान).. अध्यक्ष जी, अभी मैंने शुरुआत भी नहीं की है. अध्यक्ष जी, मुझे आपका संरक्षण चाहिए कि आदरणीय मंत्री जैसे...(व्यवधान)..अगर एक नये विधायक के सामने उठकर इस प्रकार से कहे आपकी मर्यादा का आप भी ध्यान रखें और मैं भी ध्यान रखूँ...(व्यवधान)..मैं जिस प्रकार से आपको कहना चाह रहा था..(व्यवधान)..उन्होंने जाँच की पहल की, कैलाश जी ने कहा कि एक छोटे से आवेदन पर, बिना नाम का आवेदन मिला और उस पर जाँच चालू कर दी. घोटाला कितना हुआ? मुख्यमंत्री जी ने पिछली बार सदन में कहा था कि लगभग एक हजार लोग फर्जी भर्ती हुए हैं, उसका मुझे दुख है. युवाओं के साथ जो अन्याय हुआ उसके लिए बड़े हाथ खड़े कर करके उन्होंने बड़ी वेदना प्रकट की थी. क्या अभी तक उन एक हजार लड़कों को यह सरकार या एस टी एफ आयडेंटिफाई कर पाई है, जब हम निष्पक्ष

जाँच की बात करते हैं तो क्या आवश्यकता पड़ती है कि पुलिस विभाग को बार बार एक चिट्ठी जारी करनी पड़ती है, विपक्ष के लोगों के आरोपों पर और मीडिया के आरोपों पर कि इन व्यक्तियों का नाम नहीं है.

कि इन व्यक्तियों का नाम नहीं है, मुख्यमंत्रीजी के परिवार का नहीं है और आप सब तथाकथित लोगों के नाम पर आवेदन, निवेदन क्यों करते हैं इसकी आवश्यकता क्या है जब निष्पक्ष जांच हो रही है. मुख्यमंत्रीजी पुलिस अधीक्षक चिट्ठी जारी करते हैं, एसटीएफ जांच कर रही है उसने चिट्ठी जारी नहीं की, पुलिस विभाग के उपायुक्त को चिट्ठी जारी करना पड़ी. गोंदिया की बात पर इनके ससुराल पक्ष पर कोई आरोप लगा दिया तो इसे इतना ज्यादा संज्ञान में लेने की आवश्यकता क्यों पड़ गई फिर निष्पक्ष जांच की बात क्यों करते हो. मैं ज्यादा न बोलते हुए मुख्यमंत्रीजी से अनुरोध करना चाहूंगा कि मुझे खुशी होगी, सदन के लोगों को भी शायद खुशी होगी कि उमा भारती जी पर एक छोटा सा झंडा फहराने का आरोप लगा था उसे उन्होंने संज्ञान में लेते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया था. क्या आपमें इतनी क्षमता है कि एक करोड़ युवाओं का भविष्य में क्या होगा जांच के बाद पता चलेगा न हमें पता है न आपको पता है पर यदि आप ईमानदार हैं तो क्या अपने पद से इस्तीफा दे सकतें हैं, उदाहरण पेश कर सकते हैं क्या ? नैतिकता की बात, मर्यादा की बात, संस्कारों की बात ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपया शांति बनाये रखें (व्यवधान) कृपया बैठ जायें (व्यवधान)

श्री जितु पटवारी—मैं कोई भाषण नहीं दूंगा मैं तथ्यों पर आधारित बात करूंगा अखबार की कटिंग की बात नहीं करुंगा...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप लोग कृपया बैठ जायें. (व्यवधान)

श्री जितु पटवारी—एसटीएफ ने माननीय पूर्व मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा जी की गिरफ्तारी की, गिरफ्तारी का समय चुना, इससे पहले एसटीएफ से दो तीन बार चाय, नाश्ता, खाना, पीना करके वह बाहर आ गये. जब तक तथ्यों को अपने हिसाब से करने की रणनीति नहीं बना ली गई तब तक उनको गिरफ्तार नहीं किया गया, ऐसा क्यों ? निष्पक्ष जांच के बारे में बात हो रही है. सुधीर शर्मा अभी तक गिरफ्तार नहीं हुआ है वह ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो वहां पर तीन बार हो आया है उस समय उसे

गिरफ्तार नहीं किया गया अब उसकी संपत्ति कुर्क करने की कार्यवाही की बात हो रही है. मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ यह बात कहना चाहता हूँ कि (XXX)

अध्यक्ष महोदय—यह अनुमान है इसे कार्यवाही से निकाल दें.

(XXX) आदेशानुसार नोट नहीं किया गया.

(व्यवधान)

श्री जितु पटवारी--मैं आप लोगों से जिम्मेदारी से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि निष्पक्ष जांच हो जब व्यक्ति ही नहीं रहेगा. (XXX)

श्री रणजीत सिंह गुणवान—(XXX)

अध्यक्ष महोदय—यह कार्यवाही में नहीं आयेगा. (व्यवधान)

श्री जितु पटवारी—मुख्यमंत्रीजी इतने ही ईमानदार हैं (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी पूरी बात हो जाने दीजिये (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप लोग बैठ जायें. (व्यवधान)

श्री जितु पटवारी—अध्यक्ष महोदय, अगर आप चर्चा करवाना चाहते हैं और मेरी कोई बात गलत हो तो आप बोल सकते हैं.

श्री रणजीत सिंह गुणवान—(XXX)

अध्यक्ष महोदय—गुणवान जी बैठ जाइये. (व्यवधान)

श्री जितु पटवारी—अध्यक्ष महोदय, अगर मुख्यमंत्रीजी इतने ही ईमानदार हैं तो इनके मुख्य सचिव जो मेरे साथ..

अध्यक्ष महोदय—आप बैठ गये तो मैंने विश्वास सारंग जी को टाइम दिया था, आप दो मिनट रुक जायें विश्वास जी को समय दिया है.

श्री विश्वास सारंग— (XXX) माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत आपत्तिजनक है यह पेपर में छपने के लिये इस तरह की बातें करते हैं.

अध्यक्ष महोदय—उसको विलोपित कर दिया गया है. (व्यवधान)

श्री जितु पटवारी—धन्यवाद विश्वास सारंगजी आपने मुझे बताया कि किसमें छपते हैं और किसमें नहीं छपते हैं

(XXX) आदेशानुसार नोट नहीं किया गया.

अध्यक्ष महोदय, मेरा अनुरोध है कि अगर इतने ही इमानदार मुख्यमंत्री हैं कि तो आपके साथ आपका जो सचित आपका पी.ए. काम करता है उसकी बेटी का कहीं एटमिशन होता है तो क्या मुख्यमंत्री को अपने सचिव के कारनामे का पता नहीं होता तो उन पर जिम्मेदारी का बोझ इतना कम है कि नहीं है यह स्पष्ट प्रश्नचिन्ह लगता है कि नहीं। मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूँ कि मैं आरोप के लिये आरोप नहीं लगा रहा हूं। मुख्यमंत्री जी, मेरा आपसे आरोप है कि अगर आपको ऐसा लगता है कि इस पूरे घटनाक्रम में कई वे परिवार जिन्होंने पैसे दिये हों। कई वे परिवार जिनके बच्चे पैसे नहीं होने के अभाव में परीक्षा से वंचित रह गये हों कई वे परिवार जिनके बच्चों ने परीक्षा में पास नहीं होने के कारण आत्महत्या कर ली, उसमें भोपाल की भी एक छात्रा थी, क्या आप उनकी वेदना समझते हैं। मेरा आपसे अनुरोध कि यह जो कहा जा रहा है कि यह आरोप कांग्रेस का नहीं है तो यह आरोप मध्यप्रदेश के उन परिवारों का है, जिनके बच्चे रह गये हैं।

अध्यक्ष महोदय:- कृपया आप बैठ जाईये।

श्री जीतू पटवारी:- अध्यक्ष महोदय, अगर मुझे बैठाने से आपको शांति मिलती है तो मैं बैठ जाता हूं। अध्यक्ष महोदय, बात उठने और उठाने की नहीं है। कांग्रेस ने घोटाले किये ,कांग्रेस का ऐसा था, कांग्रेस का वैसा था अगर कांग्रेस में कुछ कमी थी तभी तो कम हो गये। ..(व्यवधान)..मेरे को एक बात समझ नहीं आती ...(व्यवधान)....एक बार कहा था का मां का दूध पिया है तो मेरे पर आरोप लगाकर बतायें और उन्हीं पर लोकायुक्त की जांच है। क्या कारण है कि ईमानदार मुख्यमंत्रीजी सात-सात मंत्रियों के ऊपर लोकायुक्त की जांच चल रही है और लोकायुक्त को काम नहीं करने दिया जा रहा है। अगर आप ईमानदार हैं तो सारे मंत्रियों को बाहर करो।

अध्यक्ष महोदय :- आप समाप्त कीजिये।

श्री जीतू पटवारी :- अध्यक्ष महोदय, मैं अनुरोध करना चाहता हूं कि मंत्री या कांग्रेस का विधायक या भारतीय जनता पार्टी का विधायक पार्टी की बात न करके ईमानदारी से उनकी बात करे जिनके परिवार के साथ यह यह हुआ है, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इसमें सी.बी.आई. की जांच करायी जाये।

श्री यशपाल सिंह सिसौदिया(मंदसौर):- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापम के कथित घोटाले को लेकर कांग्रेस ने इसको एक मुद्दा बना रखा है। कांग्रेस की लोकसभा और विधान सभा की व्यापक पराजय, उस व्यापक पराजय का गुस्सा कहां उतारे कैसे उतारे। व्यापम का सहारा लेकर के कांग्रेस इन दिनों बौखलाई हुई है विचलित है। अध्यक्ष महोदय, खिसयानी बिल्ली खम्बा नौचे। अध्यक्ष महोदय, व्यापमं घोटाले के आरोपों के बाद भी भारतीय जनता पार्टी के 230 में से 165 विधायक जीतकर आ गये अभी माननीय मंत्री भूपेन्द्र सिंह जी ने भी बताया कि लोकसभा में भी 29 में से 27 सांसद चुनकर आ गये ।

अध्यक्ष महोदय, इस सदन में चार पांच सदस्य ऐसे भी विराजित हैं जो व्यापक का सहारा लेकर के जनता के बीच गये और लोकसभा का चुनाव लड़ा और पराजित होकर के आज विधान सभा में सदस्य के रूप में विराजित हैं। अध्यक्ष महोदय, उन सदस्यों से यह भी पूछना चाहूंगा, शायद मेरी जानकारी कम हो, क्या वह अपने क्षेत्र को भी लोकसभा चुनाव में बचा पाये जिस क्षेत्र से वे विधायक हैं, अगर उनमें नैतिकता है तो उन्हें विधान सभा पद से त्यागपत्र दे देना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय:- आप विषय पर आईये ।

श्री यशपालसिंह सिसोदिया - माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं विषय पर आ रहा हूं. उनको इस विधान सभा की सदस्यता से भी त्यागपत्र दे देना चाहिये. व्यापम का घोटाला ये "सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली" वाली कहावत को चरितार्थ कर रहा है. A से लगाकर Z तक व्यापम से भी बड़े घोटाले इस देश में हुए हैं. 26 अक्षरों के कांग्रेस ने किये. केंद्र में यू.पी.ए. की सरकार में हुए. मैं कांग्रेस के सदस्यों से पूछना चाहूंगा. "छलनी कहे सुई से तेरे पेट में छेद" माननीय मुख्यमंत्री जी को मैं धन्यवाद देना चाहता हूं, उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति को लेकर. व्यापम के घोटाले का जैसे ही विषय उठा. प्रारंभ से लेकर अब तक माननीय मुख्यमंत्री जी इस विषय को दोहरा रहे हैं और दृढ़ता से कह रहे हैं कानून अपना काम करेगा, कानून अपना काम कर रहा है. किसी को बख्शा नहीं जाएगा. इसमें कोई भी संदेह के घेरे में आ रहा है. सबसे पूछताछ भी की जा रही है वह रिमांड पर भी है, रिमांड की अवधि भी बढ़ रही है.वे जेल में भी हैं. एस.टी.एफ. पर कोई दबाव या दखल या न्यायालयीन प्रक्रिया के तहत नहीं किया है. पिछले एक दशक से कांग्रेस को शिवराज जी का फोबिया हो गया है. कुल मिलाकर शिवराजसिंह चौहान मुख्यमंत्री को कैसे

रोका जाए. रुक नहीं रहे हैं. मुझे तेरहवीं विधान सभा की वह घटना याद आ रही है जब मैं सदस्य था इस सदन का. मुरैना में एक पुलिस अधिकारी नरेन्द्र सिंह जी की मृत्यु हो गई. इसी सदन में प्रतिपक्ष ने मामले को बहुत उठाया. सी.बी.आई. से जांच कराओ. सी.बी.आई. से जांच कराओ. सी.बी.आई. ने जांच भी कर ली. ढाक के तीन पांत. जांच रिपोर्ट सामने आई. एक दुर्घटनावश उस अधिकारी की मृत्यु हुई. खनिज माफियाओं से संबंध भू माफिया से संबंध पता नहीं कैसे-कैसे आरोप मुख्यमंत्री जी के ऊपर लगाए गए लेकिन कांग्रेस को वहां मुंह की खाना पड़ी. पूर्व में भी कांग्रेस ने कई असत्य आरोप लगाए. हाईकोर्ट ने उन आरोपों को निरस्त किया है. कल से एक बात मेरे विचार में आ रही है बड़ी तकलीफ भी हो रही है, पीड़ा भी हो रही है शायद मध्यप्रदेश के इतिहास में पहला अवसर होगा जब किसी महामहिम राज्यपाल महोदय ने दुखी मन से इंटरव्यू में चैनल में कहा कि व्यापम के घोटाले से मुझको जोड़ा जा रहा है. पहले महामहिम होंगे जिन्होंने कहा होगा कि मुझे फांसी लग जाए लेकिन मेरा इसमें कोई दोष नहीं है. इससे बड़ी घटना नहीं हो सकती. एक राज्यपाल महोदय को प्रतिक्रिया देनी पड़ी. यही नहीं माननीय अध्यक्ष महोदय, वे आहत हैं कि उनका नाम कांग्रेस ने उछाला और माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से इस प्रकार के असत्य आरोपों को हम दृढ़ता से खारिज करते हैं. कांग्रेस ने पिछले विधान सभा चुनावों के पहले जो आरोप लगाए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के दो-तीन-चार मुखर सदस्यों ने भारतीय जनता पार्टी का उन्होंने पकड़ा है और कांग्रेस का दामन छोड़ा है. इसी सदन में तिवारी जी की सीट पर अभी तिवारी जी सीट पर नहीं हैं उनकी सीट पर एक कांग्रेस की एक महिला सदस्य बैठती थीं. वे बहुत बोलती थीं. उठ-उठ कर बहुत बोलती थीं, गर्भगृह तक जाती थीं. जमानत जप्त करा दी बहादुर सिंह जी ने. उस सीट पर बैठकर ज्यादा बोलना असत्य बोलना असंसदीय आचरण करना परिणाम सामने है. महिदपुर विधान सभा सीट से उनको पराजय का मुंह देखना पड़ा. माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापम के कथित घोटाले को लेकर जनता आहत है या नहीं है कांग्रेस जरूर व्यथित है क्योंकि कांग्रेस के पास कोई मुद्दा अब बचा नहीं है और जो मामला हाईकोर्ट के डायरेक्शन के आधार पर एस.टी.एफ. में चल रहा है. अध्यक्ष महोदय,आपने बहुत ठीक बात कही प्रारंभ में इस बहस को स्वीकार भी कर लिया. लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय, विषय चर्चा का नहीं था क्योंकि जो विषय हाई कोर्ट में चल रहा है या डायरेक्शन में चल रहा है. एस.टी.एफ. अपना काम कर रही है उसके बाद भी

माननीय मुख्यमंत्री जी ने बड़प्पन दिखाया और चर्चा को आपने स्वीकार किया और सारा कामकाज ठप्प करके चाहे तारांकित प्रश्न हों या बजट का मामला हो, जो आज की कार्यसूची है, उसमें बजट पर सामान्य चर्चा थी. बजट को आज दरकिनार किया गया. लेकिन आपने इस स्थगन को स्वीकार किया मैं समझता हूं सरकार की इससे बड़ी और कोई निष्पक्षता हो नहीं सकती. माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया बहुत-बहुत धन्यवाद.

अध्यक्ष महोदय – अपराह्न 2.30 के बाद यह चर्चा जारी रहेगी. सदन की कार्यवाही अपराह्न 2.30 बजे तक के लिये स्थगित.

अपराह्न 1.00 बजे विधान सभा की कार्यवाही 2.30 बजे तक के लिये स्थगित की गई.

(1.00 बजे से 2.30 बजे तक अंतराल)

2.38 बजे विधान सभा पुनः समवेत हुई

{माननीय अध्यक्ष (डॉ.सीतासरन शर्मा) पीठासीन हुए}

श्री रामनिवास रावत—माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाईंट ऑफ आर्डर है. हमारे दल के माननीय सदस्य श्री मुकेश नायक जी लंच के पहले खड़े हुए थे तब आसंदी की तरफ से कहा गया था कि आपका नाम नहीं है. माननीय सदस्य ने स्थगन प्रस्ताव दिया हुआ है कार्यालय से उसकी प्रति भी निकाली गई है स्वभूत उसमें नाम होना चाहिये अध्यक्ष महोदय, कृपापूर्वक उसमें सुधार कर लें. माननीय मुकेश नायक जी, कुंवर विक्रम सिंह जी नातीराजा, श्री जीतू पटवारी, श्री उमंग सिंघार के नाम हैं.

अध्यक्ष महोदय—नातीराजा के ही स्थगन पर दस्तखत हैं और पहला नाम विक्रम सिंह नातीराजा का है, वही नाम आया है यहां पर दल की ओर से नाम आ जाये तो मुझे नाम देने में कोई एतराज नहीं है.

श्री रामनिवास रावत—अध्यक्ष महोदय, नाम पूरे आने चाहिये एक ने लगाया है तो नाम पूरे आने चाहिये.

श्री मुकेश नायक—अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात आपसे विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं—

श्री रामनिवास रावत—ऐसे में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, वैसे स्थगन प्रस्ताव पर और ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर दल से नाम आते जाते हैं, अगर यह नई परम्परा बन रही है तो मुझे कोई एतराज नहीं है.

अध्यक्ष महोदय—ठीक है मुकेश नायक जी बोलेंगे, अभी इसमें कोई विवाद की बात नहीं है.

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री (श्री गोपाल भार्गव)—माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद दूंगा कि एक बहुत ही लोक महत्व के प्रश्न पर जिसको विपक्ष के सदस्यों के द्वारा इतना ज्यादा तूल, महत्व दिया जा रहा है आपने प्रश्नकाल को स्थगित करके उस पर चर्चा कराना उचित एवं मुनासिब समझा, अध्यक्ष महोदय आपकी इस अनुकम्पा के लिये आपको धन्यवाद देता हूं.

श्री गोपाल भार्गव--..(पूर्व जारी) मुख्यमंत्री जी ने बहुत ही बगैर किसी प्रतिरोध के, बगैर किसी आग्रह के मुख्यमंत्री जी ने तुरंत खड़े हो कर इसको चर्चा के लिये ग्राह्य करने का, बल्कि ग्राह्यता पर चर्चा ना हो इसलिये इस विषय पर पूरी संपूर्ण रूप से चर्चा करने का मुख्यमंत्री ने स्वयं पहल करके आग्रह किया अध्यक्ष महोदय. एक तार-तार छार छार और फाक-फाक प्रतिपक्ष जिसको शायद एक करने के लिये आज प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष भी हमारी अध्यक्षीय दीर्घा में बैठे हैं. अध्यक्ष महोदय, मुकेश भाई ने अपना कागज पतरा लिया और बाहर हो गये. मैं देख रहा था अध्यक्ष महोदय, यह क्षदम एकता जो है मैं मानकर चलता हूं कि कोई राज्य का भला नहीं करवा सकता. आपके पास विषय नहीं, आपके पास मुद्दे नहीं, आपके पास में कोई तथ्य नहीं, आपके पास में कोई सत्य नहीं अध्यक्ष महोदय, मैं विषय पर अगर आऊं सी.बी.आई. जांच की मांग हुई अध्यक्ष महोदय, सारे सदस्यों ने कहा सी.बी.आई. जांच मांगो. चीफ जस्टिस की डबल बैंच उनकी अध्यक्षता में डबल बैंच कह चुकी है कि एस.टी.एफ. मामले की सही जांच कर रही है और हम इस कारण से हम संतुष्ट हैं अध्यक्ष महोदय, अब यदि यहां शासन की तरफ से मैं आज यहां माननीय मुख्यमंत्री जी से भी कहना चाहता हूं यदि शासन की तरफ से कहा जाता है कि नहीं हम सी.बी.आई. जांच करवायेंगे इसका सीधा सा अर्थ यह होता है कि हमें हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस और उनकी बैंच की जांच पर भरोसा नहीं और हम नहीं कह रहे विपक्ष के दबाव से या किसी के भी कहने से अब हम इसके पक्ष में नहीं अध्यक्ष महोदय, क्योंकि न्यायालय उच्च न्यायालय ने इस बात को कहा है.

श्री सुंदरलाल तिवारी--(XX)

अध्यक्ष महोदय--आपका समय आयेगा बोलने का, यह बात ठीक नहीं है. तिवारी जी का बिल्कुल नहीं लिखा जायेगा, रिकार्ड में बिल्कुल भी नहीं आयेगा. यह बात बिल्कुल ठीक नहीं, आप अपने समय पर बोलिये.

(XX) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

श्री सुंदरलाल तिवारी--(XX)

अध्यक्ष महोदय--यह बात ठीक नहीं है तिवारी जी आप बैठें.

श्री गोपाल भार्गव--कैलाश जी ने इस बात को कहा था सर्वथा लागू है अध्यक्ष महोदय, यह जो प्रोपेगंडा बनाया जा रहा है, किसी एक व्यक्ति की प्रतिमा को खंडित करने का, किसी एक व्यक्ति की विश्वसनीयता के ऊपर प्रश्नचिन्ह लगाने का, मैं मानकर चलता हूं अध्यक्ष महोदय, यह लोकतंत्र के तो हित में है ही नहीं, हमारी विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका के भी हित में नहीं है अध्यक्ष महोदय, जैसा कि अभी कहा कि .01114 परसेंट यदि हम मान भी लें अध्यक्ष महोदय, तो इसमें गड़बड़ी सामने आई अध्यक्ष महोदय, यदि मान लो प्रीजंप्शन है अध्यक्ष महोदय, यह हमारा अनुमान है जैसा कि अध्यक्ष महोदय, परीक्षायें होती हैं बोर्ड के प्रश्नपत्र आउट हो जाते हैं, पी.एस.सी. और यू.पी.एस.सी. के भी हो जाते हैं अध्यक्ष महोदय, आपने देखा होगा हमेशा होता रहा है, लेकिन कभी यू.पी.एस.सी. के चेयरमेन से, पी.एस.सी. के चेयरमेन से या वहां के मुख्यमंत्री से या प्रधानमंत्रियों से कभी इस्तीफे नहीं मांगे जाते. यह बड़ा ही विचित्र विषय पैदा हुआ है अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि जो अभी चर्चा में आया था कि मध्यप्रदेश से जो चयनित हुए लाखों की संख्या में छात्र अध्यक्ष महोदय, जिन्होंने डाक्टरी की परीक्षा पास की है, जिन्होंने इंजीनियरिंग की परीक्षा पास की है, जिन्होंने शिक्षकों की परीक्षा पास की है अध्यक्ष महोदय, हम क्या देना चाहते हैं इस राज्य के लिये जब यह लड़के बाहर जायेंगे, क्या प्रश्नचचिन्ह उठाना चाहते हैं चर्चा करके टेलीविजन और अखबारों के माध्यम से हम करके यह प्रश्न उठाना चाहते हैं अपने बच्चों के ऊपर कि सारे लोगों की प्रमाणिकता .01114 परसेंट के लोगों के सामने सारे लोगों की प्रमाणिकता पर प्रश्नचिन्ह लग जाये निश्चित रूप से हम मानकर चलते हैं कि इस प्रकार का अपोजिशन शायद राज्य का हित नहीं कर रहा. हमें समग्र हित में सोचना चाहिये इसमें आपके भी बेटे होंगे, आपकी भी बेटियां होंगी कुछ का तो चयन हुआ

होगा. मैं मानकर चलता हूं कि हमें एक बहुत बड़े भाव के साथ में इसको सोचना चाहिये. पी.एस.सी. का अध्यक्ष कौन था, व्यापम में कौन था अध्यक्ष …

(XX)आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

……महोदय, मैं 85 में जब विधायक था, विनय शंकर जी दुबे मेरे साथ में विधायक थे नरसिंहपुर के और उसके बाद में वह विधायक नहीं बन पाये पी.एस.सी. का चेयरमेन बना दिया. अध्यक्ष महोदय मैं क्या विरोध करता हूं उनका ? पी.एस.सी. के चेयरमेन थे विनय दुबे जी आप सभी को जानकारी होगी लेकिन हम लोगों ने कभी इस तरह का प्रश्न नहीं उठाया. अध्यक्ष महोदय, आज पूरे देश के अंदर यही चयनित लोग जाते हैं डॉक्टरी करेंगे, सारे रोजगार के काम करेंगे और यदि हम प्रश्नचिह्न उठायेंगे, तो निश्चित रुप से अपने राज्य की प्रमाणिकता,विश्वसनीयता एवं योग्यता पर प्रश्न उठा रहे हैं. मैं इधर उधर की बात न करते हुए कहना चाहता हूं कि व्यापम का गठन करके इस व्यवस्था को सुधारने का ईमानदार प्रयास हुआ था और एक पूरी प्रक्रिया के अंतर्गत परीक्षायें आयोजित करके यह पूरा का पूरा प्रयास हुआ. इसमें यदि कोई प्वाइंट 12 या जो कुछ भी परसेंट है, यदि उसमें कहीं कोई त्रुटि आती है, तो हमें उसे त्रुटि सुधारने का अवसर दिया जाना चाहिये.

अध्यक्ष महोदय, मुझे स्मरण है. मेरे विभाग में जनपदों, जिला पंचायतों के द्वारा शिक्षा कर्मियों की नियुक्ति की गयी, पंचायत कर्मियों की नियुक्ति की गयी. उसमेंयह नियम बने थे कि एक ग्राम पंचायत कोई भी हो, अपनी पंचायत की साधारण सभा में, पंचायत की बैठक में प्रस्ताव पारित कर ले और पंचायत कर्मी की, उस समय पंचायत कर्मी कहलाते थे, अब सचिव कहलाते हैं, नियुक्ति हो गयी. 18000

पंचायत कर्मियों की इस तरह से नियुक्ति हो गयी. कोई 8 वीं पास, कोई 10 वीं पास, कोई 12 वीं पास, एक दादा मुझको मिले. 70 वर्ष की आयु के.

श्री सुखेन्द्र सिंह -- आपने उनको शासकीय कर दिया.

श्री गोपाल भार्गव -- मैं बता रहा हूं. नाम बता दूंगा. मैं कारण भी बता रहा हूं. मैंने कहा कि क्या करते हो. बोले मैं सचिव हूं. हमने कहा कि कब भर्ती हुए. बोले 52 वर्ष की आयु थी, तब भर्ती हुए. 52 वर्ष के बाद 18 वर्ष उन्होंने सेवा की. आयु का कोई बंधन नहीं, शिक्षा का कोई बंधन नहीं, कोई काम्पटीशन नहीं और कोई योग्यता की परीक्षा नहीं. ऐसे आपने पंचायत कर्मी भर्ती कर दिये. बाद में हमारे सिर पर आ गये, हमें उनको सचिव बनाना पड़ा. बहुत बड़ी संख्या थी और आपने गुणवत्ता नहीं देखी. शिक्षा कर्मी भर्ती किये. आपको मालूम है कि वर्ग 3 की नियुक्तियां जनपद का उपाध्यक्ष करता था. वर्ग 1 और 2 की नियुक्ति जिला पंचायत के अध्यक्ष करते थे. ऐसे लोग करते थे, मुझे कहते हुए दुख होता है. मैं शिक्षा की गुणवत्ता की बात कर रहा हूं. आज हमारा शिक्षा का अधिकार है. ऐसे लोग भर्ती कमेटी के अध्यक्ष थे, जनपदों के जो उपाध्यक्ष होते थे, वह शिक्षा समिति के अध्यक्ष थे. जिला पंचायतों के उपाध्यक्ष शिक्षा समिति के अध्यक्ष होते थे. जो लोग पढ़े लिखे नहीं थे, अंगूठे लगाते थे, दूसरी और तीसरी कक्षा पास थे. वह एमएससी, पीएचडी, फर्स्ट क्लास, मेरिट लड़कों के इन्टरव्यू लेते थे.

श्री रामनिवास रावत -- अध्यक्ष महोदय,यहां पर व्यापम पर चर्चा हो रही है. यह दूसरी बात कर रहे हैं.

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- आप लोग कृपया बैठ जायें.

..(व्वयधान)..

श्री कमलेश्वर पटेल -- अध्यक्ष महोदय, जो गड़बड़ियां हुई हैं, उस पर बात करें.

..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय -- कृपया बैठ जायें. मंत्री जी, कृपया संक्षिप्त कर दें.

श्री गोपाल भार्गव -- अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत प्रामाणिक बात करता हूं, इधर उधर की बात नहीं करता हूं. क्या यह सत्य नहीं है कि ऐसे 40 हजार शिक्षकों की नियुक्ति, जिनको बाद में रेगुलर करना पड़ा. ऐसे शिक्षा कर्मियों की नियुक्ति की गयी. यह कर्मी कल्चर शुरु हुआ. जिसके लिये रेगुलराइजेशन करना पड़ा. आज कल तो हम छठवां वेतनमान दे रहे हैं. ऐसी अपारदर्शी प्रक्रिया को खत्म करके एक पारदर्शी व्यवस्था के अन्तर्गत यह हो रहा है, यदि हम उस पर आरोप लगायें और उसमें यदि कोई अल्प त्रुटि हुई है, तो इतना बड़ा घोटाला कहा गया. अध्यक्ष महोदय, निश्चित रुप से कई बार अभी उल्लेख हो चुका है, पूर्व वक्ताओं ने कहा है. कोई प्रक्रिया ही नहीं थी. जूनियर पीएससी थी. जूनियर पीएससी को आपने क्यों खत्म किया. उसमें भी क्या होता था, इसके बारे में चर्चा नहीं करना चाहता. उसमें कौन कौन लोग पदाधिकारी थे, इसके बारे में भी नहीं कहूंगा. लेकिन जब यह हमारी संस्थाएं हैं, इन संस्थाओं में, कोई मुख्यमंत्री जी के पास में सीधी कॉपी नहीं आती या हमारे मंत्रियों के पास नहीं आती. लेकिन मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं कि तमाम प्रकार की परीक्षाएं चाहे पुलिस, शिक्षकों, फूड डिपार्टमेंट, ट्रांसपोर्टर डिपार्टमेंट की हों, सारी परीक्षाएं एक अपारदर्शी तरीके से की जाती थीं. आज की तारीख में यदि वह पारदर्शी व्यवस्था के अन्तर्गत आकर और हमने उसे एक बहुत ही अच्छा स्वरुप देने का काम किया है, तो ऐसे समय में

पूरी व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाना , मैं मानकर के चलता हूं कि यह मुख्यमंत्री जी पर नहीं , इस सरकार पर नहीं, बल्कि पूरे देश के करोड़ों नो-जवानों की योग्यता पर प्रश्नचिह्न लगाया गया जो कि बहुत ही ज्यादा शर्मनाक बात है.

श्री कमलेश्वर पटेल-- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने तो 40 हजार शिक्षाकर्मी भर्ती हुये हैं सब पर प्रश्न चिह्न लगा दिया. पुराने जनपद अध्यक्ष, जनपद उपाध्यक्ष जो सम्मानित जनप्रतिनिधि होते हैं उस समय वे कमेटी के अध्यक्ष थे उन्होंने भर्ती की तो सभी पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है.

श्री गोपाल भार्गव-- शिक्षाकर्मी पर नहीं उनकी भर्ती पर कहा है. उन्होंने तो भर्ती कर दिये थे लेकिन बाद में हम लोगों ने बीएड करवाया , डीएड करवाया, पढ़ना और लिखना सिखाया इसके बाद में योग्य बन पाये, आप लोगों ने तो दक्षिणा ले लेकर सारा का सारा माल रख लिया .

श्री कमलेश्वर पटेल -- इस सरकार ने भी दक्षिणा ली है तभी तो पूर्व मंत्री जेल में हैं.

श्री सुंदरलाल तिवारी-- आपकी दक्षिणा कहां है भार्गव जी. वो दक्षिणा कहा है जो आपने लेटेस्ट ली है.

श्री गोपाल भार्गव-- तिवारी जी मैं आपको चुनौती देता हूं और आपके दल को चुनौती देता हूं कि आप जब चाहे जिस एजेंसी से चाहे मेरी जांच करा लेना, मैं लगोटी लगाकर के हिमालय निकल जाऊंगा आपसे क्षमा मांगने नहीं आऊंगा.

श्री सुंदरलाल तिवारी-- आपके अकेले की बात नहीं है आप कहिये मुख्यमंत्री जी को कि सीबीआई से जांच करा लें.

अध्यक्ष महोदय-- तिवारी जी आप बैठ जायें.

श्री गोपाल भार्गव-- अध्यक्ष महोदय, इसलिये मैं कह रहा हूं व्यवस्था की जांच 100 से ज्यादा जनपद के सीईओ पर है, जिला पंचायत के सीईओ पर है, कार्यवाहियां हुई, लघु शास्ति, दीर्घ शास्ति, निलंबन और तो और बर्खास्तगी की भी कार्यवाही हुई है , आज तक फाइलें चली आ रही हैं , सन् 2000 की फाइल, 1998 की फाइल..

अध्यक्ष महोदय -- कृपया संक्षिप्त करें.

श्री गोपाल भार्गव -- इन सारी विसंगतियों को, यह जो सारे विषय हैं यह जो अपारदर्शिता थी , अब इसमें क्य हुआ दूसरी पास, तीसरी पास, अंगूठा छाप व्यक्ति ,एमएससी और पीएचडी लड़कों का इम्तहान ले रहा है, उनको नंबर दे रहा है, उनका चयन कर रहा है, वह बेहतर व्यवस्था थी या हमारी यह व्यापम की व्यवस्था बेहतर है.

श्री कमलेश्वर पटेल -- अध्यक्ष महोदय, सदन में जितने सदस्य बैठे हैं, इसमें से कई अशिक्षित लोग भी होंगे पर कहीं न कहीं जिस तरह से जनप्रतिनिधियों के ऊपर माननीय मंत्री जी प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं यह उचित नहीं है.

अध्यक्ष महोदय-- आपका बीच बीच में बोलना भी उचित नहीं है. कृपया बैठ जायें. उन्हें अपनी बात कहने दें.

श्री रामनिवास रावत-- क्या पुलिस आरक्षक भर्ती, परिवहन आरक्षक भर्ती अंगूठा टेक लोग करते थे ? क्या अंगूठा टेक व्यक्ति करते थे ?

श्री गोपाल भार्गव-- इस बात को पहले सिद्ध हो जाने दें.

श्री राम निवास रावत-- नहीं आप बतायें कि क्या पुलिस आरक्षक भर्ती, परिवहन आरक्षक भर्ती अंगूठा टेक लोग करते थे ? क्या अंगूठा टेक व्यक्ति करते थे ? प्रदेश में पूरे कर्मचारी और अधिकारी क्या अंगूठा टेक हैं ?

श्री गोपाल भार्गव -- आपका असत्य सामने आ तो गया. आप कह रहे हैं महाराष्ट्र का , एक भी व्यक्ति महाराष्ट्र का नहीं है. सभी तरफ से यह बात प्रमाणित हो चुकी है, कहीं कोई महाराष्ट्र का एक भी आदमी नहीं है, लेकिन आपके बार बार असत्य कहने से गोईवल्स जैसी कोई बात सत्य हो जायेगी क्या.

श्री रामनिवास रावत-- क्या भ्रष्टाचार नहीं हुआ ? क्या नियुक्तियों में बेईमानी नहीं हुई.

श्री गोपाल भार्गव -- मैं कह रहा हूं, नहीं हुआ.

श्री सुंदरलाल तिवारी -- मंत्री जी बोलिये कि हां. यदि नहीं तो फिर गिरफ्तारियां क्यों हो रही हैं.

श्री मनोज कुमार अग्रवाल-- भ्रष्टाचार तो हुआ है तभी तो गिरफ्तारियां हो रही हैं.

...व्यवधान...

श्री गोपाल भार्गव-- अध्यक्ष महोदय, यह इन लोगों का षड़यंत्र है और यह कहने को मजबूर कर रहे हैं जब जांच हो रही है Under Investigation है Under Enquiry है जांच हो रही है, एसटीएफ कर रही है, हाईकोर्ट के मार्गदर्शन में यह सब चल रहा है, इस पर हम यहां चर्चा करके क्या हाईकोर्ट के निर्णय या उनके निर्देशों को प्रभावित नहीं कर रहे हैं. क्या हम एसटीएफ की जो कार्यवाही चल रही है उसको प्रभावित करने का काम नहीं कर रहे हैं ?

श्री मनोज कुमार अग्रवाल -- हाईकोर्ट के निर्देशों का कितना पालन कर रहे हैं, अभी हम बतायेंगे.

श्री गोपाल भार्गव-- लेकिन मैं यह कह रहा हूं कि यहां पर चर्चा करके आप उस जांच का अहित कर रहे हैं, हित नहीं कर रहे हैं. अध्यक्ष महोदय , मैं कहना चाहता हूं कि आप (विपक्ष के सदस्य) मिले हुये हैं उन सारे षड़यंत्रकारियों के साथ में.

(विपक्ष के कई माननीय सदस्य एक साथ खडे होकर के अपनी बात कहने लगे)

...व्यवधान...

श्री मनोज कुमार अग्रवाल--(xxx)

अध्यक्ष महोदय-- यह रिकार्ड में नहीं आयेगा. कृपा करके बैठ जायें और व्यवस्था बनाये रखें बात पूरी हो जाने दें. चर्चा आपने ही मांगी है.

(xxx) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

(व्यवधान)

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- सुधीर शर्मा कहां है. भारत में है या विदेश में है, बताईये.

अध्यक्ष महोदय-- चर्चा आपने ही मांगी है. (व्यवधान)

श्री रामनिवास रावत-- और रोज आपसे बात हो रही है. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि चर्चा आपने मांगी है. आप बैठिये. उनको अपना भाषण पूरा करने दीजिए. आपका भी अवसर आयेगा. आप अपने अवसर पर बोलिये. बीच में टोका-टोकी मत करिये. कृपया इसको समय पर पूरा होने दीजिए.

श्री रामनिवास रावत-- अध्यक्ष महोदय, सत्तापक्ष के सदस्यों को कहें कि व्यापम पर बोलें. इधर-उधर की बातें न करें.

श्री गोपाल भार्गव-- अध्यक्ष महोदय, मैं इसलिए कह रहा हूं कि व्यापम का गठन क्यों हुआ, किस परिप्रेक्ष्य में हुआ, किस कारण से हुआ. आज भी इसका एक उद्देश्य है कि घर बैठे एक विभागीय परीक्षा करवा लो और जो कुछ भी गड़बड़-सड़बड़ कर लो. कोई पारदर्शी प्रक्रिया. कोई ऐसी एजेन्सी जिसमें नियम से काम होते हो, न हो. आप इसका विकल्प बतायें कि क्या हो सकता है. आप सुझायें.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- सीबीआई की जांच करायें.

श्री गोपाल भार्गव-- जब नेता प्रतिपक्ष अपना वक्तव्य दें तब इसका विकल्प सुझायें. आरोप लगाना बहुत आसान है लेकिन 50 लाख बच्चों की परीक्षा करवाने का हिंदुस्तान का सबसे बड़ा कार्य था. (व्यवधान) मैं इतना ही आग्रह करना चाहता हूं. आप कोई ऐसी व्यवस्था सुझायें. कोई नहीं चाहता कि गड़बड़ियां हों. मुख्यमंत्रीजी ने भी कहा है. ईमानदार था, ईमानदार हूं, ईमानदार रहूंगा.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- लक्ष्मीकान्त शर्मा के बारे में आपका क्या कहना है.

अध्यक्ष महोदय-- आप कृपया बैठ जायें.

श्री गोपाल भार्गव-- तिवारी जी, लक्ष्मीकान्त का अभी कोई फैसला नहीं हो गया.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- वह आपके साथ मंत्री थे. आप दोषियों का ठेका ले रहे हैं. उनका भी ठेका लीजिए.आपकी बगल में बैठते थे.(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- तिवारी जी बैठिये. आप आधे घंटे से ज्यादा समय ले चुके हैं. जब आप बोलेंगे तो फिर समय लेंगे. यह बात बिलकुल उचित नहीं है.(व्यवधान)

श्री गोपाल भार्गव-- जो लोग ज्यूडिशियल रिमांड पर हैं. जो न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिये गये हैं उनका फैसला न्यायालय करेगा. इसके बाद दूध का दूध-पानी का पानी हो जायेगा.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- जेल भिजवा दो और क्या करोगे. आप तो जाओगे नहीं. हम विपक्ष के लोगों को ही भेजोगे.

अध्यक्ष महोदय-- प्रतिपक्ष के नेताजी से आग्रह है कि यदि वह चाहते हैं कि इस गंभीर विषय पर बहस हो तो अपने माननीय सदस्यों को समझायें.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, जिनने प्रस्ताव दिया पहले उनकी चर्चा करवायें और जो सदस्य बोलते हैं उनको विषय तक सीमित रखें चाहे वे इधर के हों या उधर के हों. आप विषय से बाहर चले जाते हो तो समय तो जाया ही होगा.

अध्यक्ष महोदय-- लेकिन आपके एक ही माननीय सदस्य बार बार बोलते हैं उनको तो समझा सकते हैं आप.

श्री सत्यदेव कटारे-- हां जरुर.(व्यवधान)

श्री गोपाल भार्गव-- अध्यक्ष महोदय, मैं पूछना चाहता हूं कि इनको मध्यप्रदेश के उच्च न्यायालय, चीफ जस्टिस और न्यायिक व्यवस्था पर विश्वास है अथवा नहीं.

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- है.

श्री गोपाल भार्गव-- यदि है तो फिर आपको सीबीआई की जांच की मांग करना ही नहीं चाहिए. क्योंकि यदि सीबीआई की जांच हुई तो इसका अर्थ यह है कि आपको उन पर अविश्वास है. जब उच्च न्यायालय की विशेष निगरानी में जांच हो रही है तो मैं मानकर चलता हूं कि हमें प्रतीक्षा करना चाहिए. विपक्ष बहुत जल्दबाजी में है. मैं मानकर चलता हूं कि ऐसी जल्दबाजी से लाभ किसी को होने वाला नहीं है. राज्य का ही नुकसान होगा. खासतौर से नौजवानों का नुकसान होगा. व्यापम की जितनी परीक्षाएं प्रतीक्षा में होंगी, उनमें विलंब होगा और नौजवानों का भविष्य अंधकार में होता जायेगा. इसलिए मैं चाहता हूं कि पूरी जिम्मेदारी का परिचय देते हुए इस चर्चा को आगे बढ़ायें.

श्री बाला बच्चन-- अध्यक्ष महोदय, मेरा भी नाम है.

अध्यक्ष महोदय – हां, है उनका नाम वक्ताओं में दिया गया है. लेकिन जिनके हस्ताक्षर पहले हैं. उनको बुला लें इसके बाद में जो पार्टी की तरफ से नाम आये हैं उनको संक्षेप में बोलने के लिए आग्रह करेंगे. विक्रम सिंह नातीराजा और मुकेश नायक जी का दूसरे नंबर पर नाम है.

श्री मुकेश नायक (पवई) – माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे अपने कर्तव्य के पालन का अवसर दिया. पिछली बार जानकारी में नहीं था कि स्थगन प्रस्ताव में नातीराजा के साथ में मेरा नाम भी है . इसलिए आपने कहा कि पार्टी की तरफ से मेरा नाम नहीं आया है.

अध्यक्ष महोदय – आज सदन की दीर्घा में पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री अरूण यादव जी उपस्थित हैं सदन की ओर से उनका स्वागत है.

श्री मुकेश नायक—मान्यवर, मैं आपसे कह रहा था कि आपने कहा कि पार्टी की तरफ से आपका नाम नहीं आया है इसलिए अवसर नहीं दिया गया है. मैं बहुत विनम्रतापूर्वक आपको इस बात का आश्वासन देना चाहता हूं कि कैलाश विजयवर्गीय वरिष्ठ सदस्य मध्यप्रदेश विधान सभा ने जिस विधान सभा की पालिटिकल एक्सीलेंस की बात कही थी कि मध्यप्रदेश की विधान सभा अपने संसदीय अनुशासन, अपनी उत्कृष्टता, नियम संचालन और प्रक्रिया के लिए जानी जाती है. हम सभी सदस्यों का यह दायित्व है कि अपनी विधान सभा की इस गरिमा को बनाकर रखें. मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि स्थगन प्रस्ताव में, ध्यानाकर्षण प्रस्ताव में , अल्पकालीन प्रश्न में, प्रश्न में, पार्टी की तरफ से ऩाम आने का नियम नहीं है, न ही यह परंपरा है. मेरा अधिकार इसलिए बनता है कि मैंने स्थगन प्रस्ताव में मैंने अपना नाम दिया था. नहीं बोल पाने की पीड़ा के कारण मैं थोड़ा सा असहज हुआ, इसलिए विधान सभा से चला गया था. इसके लिए मैं खेद प्रकट करता हूं.

माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापम जैसे गंभीर विषय पर सदन में चर्चा हो रही है. जो सम्मानित मंत्री यहां पर बैठे हैं और बहुत बड़े संख्या बल के साथ में हमारे सत्ता पक्ष के लोग यहां पर सदन में बैठे हैं. वह बार बार हमारी कम संख्या पर हंसी उड़ाते हैं और उंगली उठातेहैं और जनादेश के बारे में कहते हैं. यहां विधान सभा में कम या ज्यादा संख्या पर चर्चा नहीं हो रही है. यह लोक महत्व के ऐसे विषय पर बातचीत

हो रही है, जो 1 करोड़ 27 लाख परीक्षार्थियों के संपूर्ण जीवन, उनके भविष्य, उनके सपने, उनकी कल्पनाओं को स्पर्श करता हुआ सवाल है . जब यहां पर चर्चा हो रही है तो जिस तरह से सम्मानित मंत्री महोदय इस सदन में इस विषय पर चर्चा कर रहे हैं. मैं उनको बहुत ही विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि जो कुछ भी उन्होंने बोला है वह विधान सभा की तरफ से सम्मानित सदस्यों को दिया जाता है. जब उनको मिले तो वह अपने बच्चों के साथ में उसे शेयर करें कि इस विषय पर मध्यप्रदेश की विधान सभा में इतना गैर गंभीर इतना अनुत्तरदायी वक्तव्य दे रहे थे.

माननीय अध्यक्ष महोदय, मध्यप्रदेश में 168 परीक्षाएं हुई हैं इसमें1 करोड़ 27 लाख परीक्षार्थी इसमें शामिल हुए . प्रदेश में 1 लाख 47 हजार नियुक्तियां हुई और माननीय मुख्यमंत्री जी मैं आपको बहुत ही विनम्रतापूर्वक यह स्मरण कराना चाहता हूं कि आपने मध्यप्रदेश की विधान सभा में यह कहा था कि एक हजार परीक्षार्थी ऐसे हैं, प्रारम्भिक जांच में, जिनका अनियमितता के द्वारा, करप्शन के द्वारा, और एक प्रतिस्पर्धा की आपा धापी के द्वारा चयनित किया गया है. माननीय मुख्यमंत्री जी ने मध्यप्रदेश की विधान सभा में कहा था, सारा सदन इस बात का साक्षी है. माननीय मुख्यमंत्री जी आप सदन की कार्यवाही उठाकर देख लें. मैं बहुत ही विनम्रतापूर्वक आपसे पूछना चाहता हूं कि 1 करोड़ 28 लाख परीक्षार्थी शामिल हुए . आपने मध्यप्रदेश की विधान सभा में स्वीकार किया कि एक हजार परीक्षार्थी प्रारम्भिक जांच में ऐसे पाये जो गलत तरीके से , अनुचित तरीके से परीक्षा में जिनका चयन हुआ. मुझे आप एक बतायें आप मध्यप्रदेश के मुखिया हैं. इस सदन के नेता हैं. हजारों लोगों के साथ में अन्याय होता रहा. यह बात आपकी जानकारी में नहीं आया. अगर आपकी जानकारी में नहीं आया तो आप अक्षम हैं, अगर आपकी जानकारी में यह बात आयी है तो आप कटघरे में खड़े हुए हैं.

श्री के. के. श्रीवास्तव – अध्यक्ष महोदय, तब ही तो कार्यवाही हो रही है जब जानकारी में आया है. यह अक्षमता और सक्षमता का सवाल नहीं है. सक्षम हैं इसलिए कार्यवाही कर रहे हैं...(व्यवधान)...

श्री मुकेश नायक - हमारे तीन वरिष्ठ मंत्री इस विषय पर बोल चुके हैं. डॉ. शेजवार जी प्रतिपक्ष के नेता रहे हैं. दो बार केबिनेट मंत्री रहे हैं. हमारे श्री कैलाश विजयवर्गीय जी लम्बे समय से केबिनेट मंत्री हैं. श्री गोपाल भार्गव जी केबिनेट मंत्री हैं. आप बार-बार कहते हैं कि हमें हाईकोर्ट पर भरोसा नहीं है. किसने आपसे कहा कि हमें हाईकोर्ट पर भरोसा नहीं है? मैं इस पूरे सदन में आपसे यह कहना चाहता हूं कि हाईकोर्ट पर हमें पूरा भरोसा है और हाईकोर्ट ने अगर इसमें इंटरविन नहीं किया होता, हाईकोर्ट ने अगर

फटकार नहीं लगाई होती और मध्यप्रदेश सरकार से यह न कहा होता कि हम इसकी डे-टू-डे मॉनिटरिंग करना चाहते हैं. रजिस्टार स्तर का एक आदमी उन्होंने तैनात किया और हाईकोर्ट इसका सुपरविजन कर रहा है, इसकी मॉनिटरिंग कर रहा है. हमें हाईकोर्ट पर पूरा भरोसा है. लेकिन श्री गोपाल भार्गव जी, श्री कैलाश विजयवर्गीय जी....

श्री गोपाल भार्गव - अध्यक्ष महोदय, बार-बार यह मांग की जाती है कि सीबीआई से जांच से करवाएं तो इसका अर्थ ही यह है कि हाईकोर्ट पर विश्वास नहीं है.

श्री मुकेश नायक - माननीय मुख्यमंत्री जी, हाईकोर्ट पर हमें पूरा भरोसा है, हमें एसटीएफ पर भरोसा नहीं है. कभी संसार में आपने ऐसा सुना कि एक हवलदार एक डीआईजी की जांच करें? एसटीएफ का एडीजी लेवल का अधिकारी इस पूरी जांच का मुखिया है. जिस घोटाले की वर्दी में प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं. पूरा मंत्रिमंडल है. ये सरकार में बैठे महत्वपूर्ण लोग हैं. एक पूर्व मंत्री जो पिछले समय आपकी नाक का बाल था, वह जेल में है. इतने बड़े-बड़े लोग इस जांच के कठघरे में हैं. एक एडीजी लेवल का आदमी उसकी जांच कर रहा है? हम क्या उम्मीद रखें कि यह जांच निष्पक्ष होगी. हम क्या उम्मीद रखें कि यह जांच सही तरीके से होगी और इसीलिए हम मांग कर रहे हैं कि सीबीआई इनक्वायरी होना चाहिए ताकि विस्तार से इसकी जांच हो. (मेजों की थपथपाहट)..इसकी एक-एक परत को उत्कीर्ण किया जाय, इसकी एक-एक फलक को निकाला जाय और दूध का दूध, पानी का पानी किया जाय. मध्यप्रदेश के प्रतिभाशाली बच्चे गुणवत्ता पर आधारित इस प्रदेश की सामाजिक संरचना और प्रतिभा पर आधारित पूरे प्रदेश का ऐश्वर्य, उसकी उत्कृष्टता आज दांव पर लगी है. आप बार-बार कहते हैं तो क्या प्रतिपक्ष ने इंस्टीट्यूशनल वर्क की साख बिगाड़ी है? कोई पीएमटी, पीईटी, व्यावसायिक परीक्षा मंडल की साख, कोई कांग्रेस के विधायक दल ने बिगाड़ी है क्या? मैं आपको एक पत्र पढ़कर सुनाता हूं, आपको पता लग जाएगा कि यह साख किसने बिगाड़ी है?

अध्यक्ष महोदय - आप रिफरेंस दे सकते हैं.

श्री मुकेश नायक - अध्यक्ष महोदय, मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं? मैं रिफरेंस दे रहा हूं, मैं पढ़ नहीं रहा हूं. मैं कागज केवल बता रहा हूं और बताने के पहले मैंने सदन के पटल पर अपने आवेदन के साथ इसको रख दिया है, जो नियम संचालन और प्रक्रिया के अंतर्गत आता है.

अध्यक्ष महोदय - आप संदर्भ दे सकते हैं.

चौधरी मुकेश सिंह चतुर्वेदी - अध्यक्ष महोदय, पीएमटी का जो उल्लेख किया जा रहा है, उसमें जो व्यक्ति पकड़े गये हैं, वे वर्ष 1993 और वर्ष 1990 से पहले घोटाले कर रहे थे.

श्री मुकेश नायक - अध्यक्ष महोदय, एसटीएफ के अधिकारी यह जो जांच कर रहे हैं, उनका यह पत्र है. उसका रिफरेंस में कोट कर रहा हूं. इस रिफरेंस में जो नाम आएंगे, वह सुनकर सम्मानीय सदस्य थोड़ा धीरज रखें क्योंकि मेरा उद्देश्य किसी पर व्यक्तिगत...

अध्यक्ष महोदय - जो व्यक्ति सदन के सदस्य नहीं हैं, उनका नाम नहीं लिया जाना चाहिए, यही परम्परा है.

श्री मुकेश नायक - मैं नहीं ले रहा हूं. आपने कैसे जान लिया कि मैं नाम ले रहा हूं.

अध्यक्ष महोदय - आपने एक पत्र यहां पर रखा है. जो पत्र आपने यहां लिखकर दिया है, आपके दस्तखत से आया है मैं क्या उसको भी नहीं जान पाऊंगा?

श्री मुकेश नायक - आपने कैसे जान लिया कि मैं उनका नाम लूंगा?

अध्यक्ष महोदय - आपने अभी कहा है.

श्री मुकेश नायक - मैं रिफरेंस कोट कर रहा हूं. मैं नाम नहीं ले रहा हूं.

अध्यक्ष महोदय - आपने नाम की बात बोली थी. अब आप कहकर बदल जाएं तो बदल जाएं.

श्री मुकेश नायक - मैं जो रिफरेंस दे रहा हूं यह रिफरेंस देने के पहले सम्मानीय सदस्यों से विनम्रतापूर्वक यह कहना चाहता हूं कि मेरी किसी पर व्यक्तिगत आक्षेप लगाने की न तो मंशा है, न ही इस तरह का मेरा कोई चरित्र है.

मैं उन बच्चों की बात कर रहा हूं जिन्होने अपना भविष्य खो दिया है और जो कुछ भी मेरे विचार हैं, जो कुछ भी मेरे मन्तव्य हैं, जो कुछ भी मेरे वक्तव्य हैं उनसे प्रेरित होकर हैं ,जिसके लिए मध्यप्रदेश के लोगों ने प्रतिपक्ष में मुझे विधायक चुन कर भेजा है और मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूं.जिस तरह से शासन चलाने के लिए मध्यप्रदेश की जनता ने आपको बिठाया है उसी तरह से आपकी जनविरोधी नीतियों को उजागर करने के लिए मध्यप्रदेश की जनता ने मुझे इस विधान सभा का सदस्य बनाया है और मैं अपने उस कर्तव्य का पालन कर रहा हूं. मैं आपसे यह कहना चाहता हूं , एस.टी.एफ. ने एक स्पष्टीकरण दिया कि जांच में फलाने फलाने लोगों का नाम नहीं है. एस.टी.एफ. को इस तरह का वक्तव्य देने का क्या अधिकार है? और किस उद्देश्य से उन्होंने यह वक्तव्य दिया? जरा एस.टी.एफ. से यह सदन जानना चाहता है. दूसरी बात, जिन लोगों.. एक परीक्षार्थी का नाम तो अध्यक्ष महोदय ले सकता हूं ना? क्योंकि व्यापमं की चर्चा हो रही है. मिहीर नाम के एक परीक्षार्थी हैं, एस.टी.एफ. के एक उप अधीक्षक स्तर के अधिकारी जिनका नाम भूरिया जी है उनका यह पत्र है और इसमें मिहीर का स्टेटमेन्ट है. जिसमें एक देश के बहुत तपोनिष्ठ, बहुत महत्वपूर्ण और इस पूरे देश में अपने चरित्र, ईमानदारी के लिए जाने जाने वाले एक व्यक्ति के नाम को कोड किया है. उनकी मृत्यु हो चुकी है. इसलिए उनका सम्मान रखते हुए मैं उनका नाम इस सदन में नहीं लेना चाहता. लेकिन दूसरे व्यक्ति का नाम लिया है जो बहुत महत्वपूर्ण है और पूरे देश में....(व्यवधान)

श्री तरूण भनोत— (xxx)

अध्यक्ष महोदय—यह जो कह रहे हैं लिखा नहीं जाएगा. (व्यवधान)

श्री विश्वास सारंग—अध्यक्ष जी, पाईन्ट ऑफ आर्डर है..

श्री मुकेश नायक—(xxx)

अध्यक्ष महोदय—यह नहीं लिखा जाएगा. उनका पाईन्ट ऑफ आर्डर आने दें.

श्री विश्वास सारंग—माननीय अध्यक्ष महोदय, मुकेश भाई नेअपना वक्तव्य शुरू करने से पहले बहुत अचछी साहित्यिक भाषा में यह बोला कि सदन की गरिमा रखनी चाहिए.

(xxx) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने उनके पत्र पढ़ने से पहले इस बात का जिक्र किया कि किसी का नाम न आए. हमारे युवा साथी तरूण भनोत जी, ये जितने स्मार्ट हैं बाकी लोग भी उतने ही स्मार्ट हैं. अध्यक्ष महोदय, इनका कहा विलोपित होना चाहिए और इस पर इनको कहीं न कहीं निर्देशित करना चाहिए. यह कोई ऐसा ही सदन नहीं है जिसके हर कोई कुछ भी बात बोलें. मेरा आपसे निवेदन है...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—यह जो आपने पॉइन्ट ऑफ आर्डर उठाया है , मैने पहले भी अनुरोध किया था कि जो व्यक्ति इस सदन में नहीं है, सदस्य नहीं है. उनके खिलाफ कोई बात नाम लेकर के नहीं होना चाहिए. मुकेश जी आपने मेरी बात मानी. पर जिन माननीय सदस्य ने यह कहा वे न कहते तो अच्छा था. माननीय मुकेश नायक जी से मेरा अनुरोध है , सामान्यतः दो घंटे की चर्चा होती है और तीन घंटे से ज्यादा हो चुके हैं कृपया पांच मिनट में अपनी बात समाप्त करें. (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, इसमें हम एक चीज समझना चाहते हैं जैसे सरकारी दस्तावेज में किसी का नाम आया है वह सदन का सदस्य नहीं है तो उसका उल्लेख किया जायेगा या नहीं?

अध्यक्ष महोदय—पटल पर आना चाहिए, प्रमाणित होना चाहिए.

श्री सत्यदेव कटारे—सरकारी दस्तावेज है. अगर सरकारी दस्तावेज में है तो मुकेश जी नाम लीजिए और अगर सरकारी दस्तावेज में नहीं है तो नाम मत लीजिए.

श्री मुकेश नायक- अध्यक्ष महोदय, देखिये मैं इसका समाधान करता हूं.

श्री राम निवास रावत—अध्यक्ष महोदय, किसी छात्र के साक्ष्यों में वक्तव्य में जो उन्होंने लिया है उसको वे बता रहे हैं कि ये जांच के विषय है..

श्री मुकेश नायक—मैं कोई अलग थोड़े ही कोड कर रहा हूं. अध्यक्ष महोदय, ये व्यापमं पर चर्चा हो रही है...

अध्यक्ष महोदय—कृपया 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करें. कृपया बैठ जायं, उनको बोलने दें. कृपया अपनी बात जारी रखें.

श्री विश्वास सारंग—माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रूफ करें कि आर.टी.आई. के तहत यह जानकारी निकाली है. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपया बैठ जाईये. माननीय नायक जी आप जारी रखिए.

श्री मुकेश नायक—अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी बात से सहमत हूं कि जो इस सदन का सदस्य नहीं है, उसका नाम नहीं लिया जाना चाहिए. एक करोड़ अट्ठाईस लाख परीक्षार्थियों के भविष्य पर चर्चा हो रही है, यह कोई साधारण विषय नहीं है और जब इतनी बड़ी संख्या में छात्र प्रभावित हुए हैं तो उन्हें जो दुख पहुंचा, उनके सपने चकनाचूर हुए हैं, उसके नाम सदन में आए बगैर यह चर्चा कभी पूरी नहीं हो सकती. इसलिए यह रिलेवेन्ट रिफ्रेन्सेज हैं, यह बिलकुल प्रासंगिक दस्तावेज हैं, जो इस जांच से संबंधित हैं. पूरी प्रकिया से संबंधित हैं. वैसे तो लक्ष्मीकांत शर्मा जी का नाम भी हमें नहीं लेना चाहिए, वह इस सदन के सदस्य नहीं है, वह जेल में हैं.

अध्यक्ष महोदय—नहीं, अगर आप प्रश्न पूछ रहे हैं तो मैं उसका उत्तर दे दूंगा और यदि आप भाषण दे रहे हैं तो दीजिए.

श्री मुकेश नायक—मैं प्रश्न नहीं पूछ रहा हूं, न भाषण दे रहा हूं. देखिए इस सदन में जब तक आप इस चर्चा को पक्ष और विपक्ष तक लिमिटेड करेंगे न तो कभी न्याय नहीं कर पाएंगे. आप बता दीजिए कि क्या आप सच्चाईयों के साथ खड़े हैं.

अध्यक्ष महोदय—आप कृपया विषय पर आईये और अपनी बात समाप्त करें. आप धार जितनी तेज करना हो तो करें और 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करें. आपको बोलते हुए 15 मिनट हो गए हैं.

श्री मुकेश नायक—अध्यक्ष महोदय, एक बहुत गंभीर विषय की तरफ जो व्यापम के घोटाले से संबंधित है, मैं सदन का ध्यान आपके माध्यम से आकर्षित करना चाहूंगा और अपनी बात करना चाहूंगा.

अभी बात आई शिक्षकों की भर्ती की जो कांग्रेस के जमाने में हुई थी. यह सदस्य कोई तैयारी करके नहीं आते, कोई जानकारी लेकर नहीं आते और सबसे बड़ी दुर्भाग्यजनक बात है कि सरकार के मंत्री बहुत गैर गंभीर होकर विधानसभा में आते हैं. प्रिपेयर होकर नहीं आते. मुझे बताईये आपने 20 हजार से ज्यादा शिक्षक जिन्हें 15-15 साल का शैक्षणिक अनुभव था. आपने उनसे कहा कि आप व्यापम की परीक्षा में बैठिये और उसके माध्यम से अपनी योग्यता सिद्ध कर दीजिए और 20 हजार शिक्षकों को आपने हटा दिया, जिनकी शादी हो गई थी, जो ओवर एज हो गए थे, जिनके बच्चे हो गए और जिनके पास एक दिन का भी शैक्षणिक अनुभव नहीं था, व्यापम के माध्यम से पैसे लेकर इस सरकार में बैठे लोगों ने उन्हें भर्ती करा दिया.

सहकारिता मंत्री (श्री गोपाल भार्गव)—माननीय अध्यक्ष महोदय मेरा व्यवस्था का प्रश्न है कि शिक्षा के अधिकार में एक नियम आवश्यक हो गया, जो आपकी सरकार ने बनाया कि उसके लिए पहले डी.एड, बी.एड. आवश्यक है, वह नहीं थे और इस कारण से उनके लिए डी.एड. और बी.एड. करके उसके बाद में अनुभव प्राप्त हो जाय.

श्री मुकेश नायक—आपकी समस्या यह है कि आप पालिसी वह बनाते हैं, जिसमें घपले करने के लिए फ्रेम के अंदर आदमी आ जाय. समझ गए नहीं. 15 साल का जिसको शैक्षणिक अनुभव है, उनसे आप कह रहे हो कि डी.एड. और बी.एड. करो और उनको आप नौकरी से निकालते हो.

श्री गोपाल भार्गव—अध्यक्ष जी, मुकेश जी स्कूल शिक्षा मंत्री भी रहे हैं, मुकेश भाई को जानकारी होगी कि पहले शिक्षक भर्ती कर लिये जाते थे, बाद में उनको बी.टी.आई. और बी.एड. करवाया जाता था, सालों पढ़वाने के बाद भी वह मेन्डेटरी थी, आपको स्मरण है कि पहले सरकारी बी.एड. और बी.टी.आई. कालेज होते थे, आपको जानकारी है कि यह किस व्यवस्था के अंतर्गत आपकी सरकार में होते थे. आप बताएं.

श्री मुकेश नायक—मैं बताता हूं. आप पूरी बात कर लीजिए.

अध्यक्ष महोदय—आप अपने विषय पर बोलें और अपनी बात समाप्त करें.

श्री मुकेश नायक—अध्यक्ष महोदय, यह क्या व्यवस्था का प्रश्न है.

श्री गोपाल भार्गव—इसलिए है कि आपने इस ओर इंगित किया था. मैं यह बात कहना चाहता हूं कि आपने जो शिक्षा का अधिकार का कानून बनाया उसमें प्रशिक्षित शिक्षक की बात लेकर आप आए.

अध्यक्ष महोदय—आपकी बात आ गई.

श्री मुकेश नायक—आपकी सरकार ने यह पालिसी बनाई....

श्री मुकेश नायक—आपकी सरकार ने पालिसी बनायी और आपने बीएड और डीएड के नाम पर.. (व्यवधान)... आन लाइन परीक्षा का घपला आने वाला है.

श्री गोपाल भार्गव-- उस पर चर्चा मांगिये न.

श्री मुकेश नायक—चर्चा मांगेंगे. आपने अभी बीएड और डीएड की आनलाइन परीक्षा करा दी और आपके शिक्षा मंत्री ने बीएड और डीएड वाले कालेजों के अध्यक्षोंको अपने घर पर बुलाया और उसके बाद उस फाइल में एक लाइन डाल दी और क्या लाइन डाल दी पूछो जरा..

श्री गोपाल भार्गव—यह अलग विषय है. आप विषय से हट के बोल रहे हैं.(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप कृपया बैठ जाएं. आपस में वाद विवाद नहीं करें. माननीय सदस्यों से निवेदन है कि बीच में व्यवधान न डालें. आप कृपया दो मिनट में समाप्त करें.

श्री मुकेश नायक—माननीय अध्यक्ष महोदय, दो मिनट में तो मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मोटी चमड़ी वाली इस सरकार पर हमें कोई भरोसा नहीं है . ये कभी भी न्याय नहीं करेंगे. ये उनके साथ खड़ी हुई सरकार हैं जिन्होंने घपले किये हैं. बच्चों के भविष्य को चकनाचूर किया है. अपने पैरों से रौंदा है. जिन्होंने पूरे मध्यप्रदेश की गुणवत्ता पर आधारित सामाजिक संरचना को चकनाचूर कर दिया है.(x x x) (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- ये शब्द इनके भाषण से निकाल दें.(व्यवधान)

(x x x) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

कुंवर विक्रम सिंह(राजनगर)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद. व्यावसायिक परीक्षा मंडल द्वारा अपने स्थापना के वर्ष 1982 से लेकर के 2007 तक जितनी भी परीक्षाएं होती रही हैं .उनमें पारदर्शिता रही. परन्तु 2007 से लेकर के आज तक के परिणाम परीक्षाओं के आए हैं औरि फिर जसकी वजह से मध्यप्रदेश विधानसभा का इतिहास आज पूरे भारत में देखा जा रहा है और सबसे चर्चा का विषय बना हुआ है . माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से केवल दो तीन चीजें ही पूछना चाहता हूँ कि जो 1100 फर्जी डाक्टर इसमें पकड़े गए उनकी एफआईआर दर्ज हुई हैं या नहीं हुई हैं,यह मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहता हूँ (व्यवधान) आप कह दें कि हम (xx)के साथ हैं तो हम चर्चा बंद कर देंगे.(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय-- आप कृपया उनको अपनी बात बोलने दीजिए.

कुंवर विक्रम सिंह—माननीय अध्यक्ष महोदय, इस व्यापम की परीक्षाओं में 293 सरकारी और 193 गैर सरकारी लोगों के फार्म रिजेक्ट हुए परन्तु माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह पूछना चाहता हूँ कि मध्यप्रदेश में ऐसी कौन सी व्यवस्था की गई और किस तरीके से, व्यावसायिक शिक्षा मंडल के 1982 के नियमों में परिवर्तन किया गया ताकि यह गोरखधण्धा जारी रह सके और गोरखधण्धा करने वाले लोग कटघरे में आ जाएं . माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे ये दो सवाल हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी मेरे सवालों का जवाब दें.घन्यवाद.

अध्यक्ष महोदय—बहुत से नाम हैं और चर्चा में काफी समय हो चुका है. जिन माननीय सदस्यों ने स्थगन प्रस्ताव पर दस्तखत किये थे, उनके नाम लगभग हो चुके हैं. डॉ. गोविन्दसिंह जी और सुन्दरलाल तिवारी जी रह गये हैं. वे आयेंगे अभी.मेरा अनुरोध यह है कि.

(xxx) विलोपित

दोंनों दलों के माननीय सदस्यों के कुछ नाम कम कर दें अथवा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध यह है कि वह बहुत कम समय में दो या तीन मिनट में अपनी बात बोल सकें तो बड़ी कृपा होगी. अब एक सदस्य उधर का ले लें, यहाँ से लगातार दो सदस्य हो गये हैं , यदि आप अनुमति दें तो. श्री विश्वास सारंग जी अपनी बात कहें और बहुत संक्षेप में अपनी बात रखें.

श्री विश्वास सारंग(नरेला)--- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत महत्वपूर्ण विषय पर कांग्रेस के सदस्य स्थगन लेकर आए पर बड़ी हास्यास्पद स्थिति सुबह बनी, हमने सबने देखा और माननीय अध्यक्ष महोदय, उसी का परिणाम निकला कि मुकेश भाई हर समय आपके बगल से जो दर्शक दीर्घा है, वहाँ से जाते थे पर आज जब वह नाराज हुए तो यहाँ से सामने से गये और उससे पता लगा,और बाहर जाते ही उन्होंने जिसको फोन किया, वह हमें देखने को मिल रहा है ,अरुण भाई भी यहाँ पर आ गये हैं. कांग्रेस के विधायक दल का विघटन यहाँ हमें अलग देखने को मिला और ...(व्यवधान)...

श्री सचिन यादव-- अध्यक्ष महोदय, यह विषय पर आ जाएं.

अध्यक्ष महोदय--- कृपया विषय पर आएं...(व्यवधान)..बिल्कुल संक्षेप में बात रखें.

श्री तरुण भनोत—अध्यक्ष महोदय, विषय पर चर्चा होनी चाहिए.आप निर्देश दे दें कि विषय पर बोलें.

अध्यक्ष महोदय--- विषय पर दो मिनट में अपनी बात समाप्त करें.

श्री विश्वास सारंग--- माननीय अध्यक्ष महोदय,बहुत सारी बातें हुई हैं..

श्री तरुण भनोत--- विश्वास भाई, विषय पर ही बोलना.

श्री विश्वास सारंग--- जी हाँ. आप जो बोलोगे वह ही बोलूंगा मैं कि कटारे जी और बाकी सबके मामले में जो बोला ना, वही बोलूंगा. माननीय अध्यक्ष महोदय, सभी वक्ताओं ने बोला बहुत रिपीट करने की बात नहीं है पर इस पूरी चर्चा में लब्बोलुआब जो निकलकर आया है वह शायर की दो पंक्तियों से कहना चाहता हूं, शायर ने कहा है कि **जबकि मालूम था दरबान है सूरज फिर भी, मोम के लोग मेरे घर को जलाने आये.**माननीय अध्यक्ष महोदय, **हाथ कंगन को आरसी क्या और पढ़े लिखे को फारसी क्या** . 2013 के विधानसभा चुनाव के पहले माननीय मुख्यमंत्री जी के संज्ञान में कोई विषय आता है, माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे देश की राजनीति में उठाकर देख लीजिये कोई नेता चुनाव के ऐन वक्त पहले सरकार के मामले यदि कोई विषय आता है तो क्या उसको जाँच में देता है? हम चाहते तो जाँच नहीं करवाते, वह लैटर ऐसे ही चले जाते जैसे कांग्रेस की सरकार में चले जाते थे...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय--- (कांग्रेस पक्ष के कई माननीय सदस्यों के एक साथ बोलने पर) कृपया आप बात सुनिये. यह बात ठीक नहीं है. उनको अपनी बात रखने दीजिये, आप कृपया बैठ जाइए. ..(व्यवधान)....

श्री विश्वास सारंग—माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसा कैलाश विजयवर्गीय जी ने, शेजवार जी ने, गोपाल भार्गव जी ने कहा कि सही मायने में तो मुख्यमंत्री जी का स्वागत होना चाहिए कि उन्होंने यदि कोई विषय संज्ञान में आया तो उसकी जाँच के लिए एक एसटीएफ गठित की और जो पूर्व वक्ताओं ने बताया कि इतने बड़े मामले में यदि कहीं कोई गड़बड़ हुई है तो हम सहर्ष इस बात को स्वीकार करते हैं और उसकी जाँच हो रही है . परन्तु जो गोपाल भार्गव जी ने कहा मैं उसमें एक बात और जोड़ना चाहता हूं कि क्या कांग्रेस के सदस्य इतनी बातें कर रहे हैं, कमलेश्वर पटेल जी ने बोला कि युवाओं की राजनीति करते हैं , युवाओं का भविष्य बिगड़ रहा है. मैं उनसे पूछना चाहता हूं, कांग्रेस के विधायक दल से पूछना चाहता हूं कि क्या जो पास हुए हैं, जो सही ढंग से पास हुए हैं क्या उन पर आप प्रश्नचिह्न नहीं लगा रहे हैं, क्या वह एसटीएफ के अधिकारी जो कि निष्पक्ष रूप से जाँच कर रहे हैं, क्या आप उनको हतोत्साहित नहीं कर रहे , क्या न्यायालय प्रक्रिया पर आप प्रश्नचिह्न नहीं लगा रहे? माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत सी बातें हुई हैं किन्तु जो सही बात है वह आनी चाहिए और इस बात के लिए हम कटिबद्ध हैं . माननीय मुख्यमंत्री जी को

मैं बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं ,उनको बहुत बधाई देना चाहता हूं . निश्चित रूप से उन्होंने एक साहसिक कदम उठाया और उसी कदम का आज इस पूरी चर्चा के बाद पटाक्षेप होगा, दूध का दूध और पानी का पानी पता लगा जाएगा. माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा स्पष्ट आरोप है जैसा गोपाल भार्गव जी ने कहा कि कहीं ना कहीं एसटीएफ की जाँच को गुमराह करने के लिए कांग्रेस यह मामला उठा रही है क्योंकि आप उठाकर देख लीजिये इस पूरे मामले का जो मास्टर माइंड है, यह बात मैं यहाँ पर बोलना चाहता हूं कि नितिन महिन्द्रा को उस कुर्सी पर किस शासन में बिठाया गया, यह जाँच का विषय है जिसने सबसे ज्यादा घोटाला किया है, जिस नितिन महेन्द्रा की कुर्सी के नीचे ही इस पूरे घोटाले की साजिश हुई है. माननीय अध्यक्ष महोदय, उसकी नियुक्ति केवल और केवल काँग्रेस के शासन में हुई थी. इसकी जाँच..(व्यवधान)..तो निश्चित रूप से काँग्रेस के शासन में जाएगी.

एक माननीय सदस्य-- नियुक्ति तो काँग्रेस के शासन में हुई है लेकिन घपला तो आपके शासन में हुआ है...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- आप बात सुनिए वे विषय पर बोल रहे हैं.

श्री विश्वास सारंग-- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुकेश नायक जी ने बहुत अच्छी बात की. निश्चित रूप से, मुझे लगता है कि, यहाँ पर काँग्रेस के सब पर्यवेक्षक बैठे हैं, अगले सत्र में निश्चित रूप से उनका प्रमोशन होगा वे अगली कुर्सी पर आने वाले हैं. लेकिन अध्यक्ष महोदय, मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि उनके भी नेता रहे. मध्यप्रदेश में काँग्रेस के शासन काल में दिवंगत नेता हैं, जिक्र हुआ था, पूर्व मुख्यमंत्री हैं, नई प्रशासनिक भाषा चली थी. सभी नियमों को शिथिल करते हुए इनको नियुक्ति दी जाए. अध्यक्ष महोदय, वह किस शासनकाल में हुआ?..(व्यवधान)..आप हम पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं. आप उस मुख्यमंत्री पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं जिसने आदेश दिए...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- कृपया अपनी बात समाप्त करें...(व्यवधान)..

श्री विश्वास सारंग-- जिसमें ऐसी कोई बात सामने आई तो उन्होंने उसकी जाँच कराने की बात की...(व्यवधान)..

श्री तरूण भनोत-- अध्यक्ष जी, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- नहीं, कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं. मैं उनसे समाप्त करने का बोल रहा हूँ... (व्यवधान)..

श्री तरुण भनोत-- जो दिवंगत हैं या सदन में नहीं हैं...

अध्यक्ष महोदय-- उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया. आप कृपया बैठ जाइये...(व्यवधान)..आप नाम लिवाना चाहते हैं क्या? आप अपनी बात आधे मिनट में समाप्त कर दें.

श्री विश्वास सारंग-- अध्यक्ष महोदय, पूरा मामला केवल पेपर में छपने का है. केवल अपनी कुर्सी बचाने का है. केवल मेरी दिल्ली के दरबार में नेतागिरी चलती रहे इसलिए है यह मामला जाँच के दायरे में है. मैं सदन से निवेदन करना चाहता हूँ कि जिस मामले को सीधे सीधे माननीय उच्च न्यायालय अपनी निगरानी में जाँच करवा रहा है. उस पर हमें प्रश्न चिन्ह नहीं लगाना चाहिए. हमें प्रदेश के युवाओं के भविष्य के लिए..(व्यवधान)..हम सबको गंभीरता रखते हुए दलगत राजनीति से ऊपर उठकर मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद देना चाहिए और मुख्यमंत्री जी को मैं कहना चाहता हूँ कि निश्चित रूप से आपने एक बहुत अच्छा काम किया है और मैं इतना ही कह कर अपनी बात समाप्त करूँगा कि आरिफ भाई,

फानुस बन कर जिसकी हिफाजत, खुद खुदा करे...(व्यवधान)..

वो शमा क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे.

श्री मुकेश नायक-- (xxx)

अध्यक्ष महोदय-- यह सब कार्यवाही से निकाल दें.

डॉ.गौरीशंकर शेजवार-- अध्यक्ष महोदय, यह जो छलनी है यह सूजी से कह रही है कि तुझ में छेद है. मुकेश भाई, जरा अपने गिरेबान में झांको बार बार (xxx) कह रहे हों और किससे कह रहे हों, क्या कह रहे हों, आप से जब कहेंगे तब आपकी स्थिति का पता लगेगी. मेहरबानी करें.

श्री मुकेश नायक-- अध्यक्ष महोदय, आप जब चाहें मेरे बारे में जो जानकारी हो, इतने बड़े सार्वजनिक जीवन में अकेला नेता हूँ जिस पर कोई आरोप नहीं लगता...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- ऐसे बहुत से लोग हैं...(व्यवधान)..माननीय नायक जी, अपनी बात सुधार लें. बहुत से लोग हैं ऐसे...(व्यवधान)..कृपया शांति रखें...(व्यवधान)...

(xxx) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

श्री महेन्द्र सिंह कालूखेड़ा (मुंगावली)—माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापम के प्रकरण में माननीय मुख्यमंत्रीजी ने यह स्वयं स्वीकार किया था कि एक हजार नियुक्तियों में गडबड़ियां हुई हैं उसके बाद भी सत्तापक्ष की ओर से जो बड़े-बड़े वकील खड़े हुए हैं उसमें से कोई 200 की संख्या बता रहा है कोई 250 की संख्या बता रहा है कोई 000.2 प्रतिशत बता रहा है. यह तो Tip of the iceberg है, पता नहीं कितने लोगों ने गड़बड़ की है यह तो अभी प्रमाणित नहीं हुआ है जांच चल रही है. बार-बार वकीलों ने और सत्तापक्ष ने हाई कोर्ट का इन्टरप्रिटीशन दिया कि हाईकोर्ट ने बड़ी तारीफ की है यह बिलकुल गलत है हाईकोर्ट ने कतई तारीफ नहीं की है अगर हाईकोर्ट तारीफ करता तो हाईकोर्ट अपनी निगरानी में जांच क्यों करवाता. हाईकोर्ट अपनी निगरानी में जांच करवा रहा है इसका मतलब है कि उनको एसटीएफ पर विश्वास नहीं था उनको आप पर भी विश्वास नहीं था उन्हें लगा कि आप एसटीएफ पर बेजा दवाब डालेंगे इसलिये हाईकोर्ट मॉनिटर कर रहा है. आप लोग कोर्ट के बड़े-बड़े डिसीजन्स को कोट कर रहे हैं और गलत Interpret कर रहे हैं कि हाईकोर्ट तारीफ कर रहा है. आपके दो तर्क ध्वस्त हो चुके हैं.

अध्यक्ष महोदय, अब मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि **"Caesar's wife should be above suspicion."** यह मत भूलिये आप यह मामला बहुत महत्वपूर्ण है. श्री रसीद मसूद, पूर्व मंत्री, केन्द्र सरकार द्वारा मेडिकल के मामले में गड़बड़ करने पर उन्हें संसद की सदस्यता त्यागनी पड़ी थी और वे जेल भी गये हैं. पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला भर्ती की गड़बड़ी में आज जेल में हैं. इसको आप गंभीरता से क्यों नहीं ले रहे हैं. आप उन लोगों का पक्ष ले रहे हैं इतने बड़े घोटाले में जिनको डिफेंड नहीं किया जा सकता उनको आप डिफेंड कर रहे हैं और जब आप डिफेंड करते हैं तो बड़ा हास्यास्पद लगता है. आप पर पत्रकार दीर्घा में बैठे हुए लोग और सारे अधिकारी सब हंसेंगे, जैसे आपने तर्क दिये हैं इन लोगों को बचाने के लिये यह बहुत गलत हैं मेहरबानी करके आप इसको गंभीरता से लीजिये. सवाल यह नहीं है कि हमको हाईकोर्ट पर विश्वास नहीं है, हमको एसटीएफ पर विश्वास नहीं है. क्या आपकी जांच करेगा एसटीएफ ? मेरा आपसे अनुरोध है कि हाईकोर्ट से आप अनुरोध करिये कि चूंकि मेरे पर चार्ज लग रहा है, मेरे साथियों पर चार्ज लग रहा है इसलिये मैं चाहता हूँ कि सीबीआई इसकी इंक्वायरी करे. आप अपनी तरफ से बड़ा दिल

रखिये. एक तरफ आप कहते हैं कि सीबीआई केन्द्र का तोता है पता नहीं आप कौन सा डिसीजन कोट कर रहे थे. अगर सीबीआई कांग्रेस का तोता थी सीबीआई तो वह अब तो आपका तोता है.

श्री के.के. श्रीवास्तव—माननीय अध्यक्ष महोदय, सुप्रीम कोर्ट ने कोट किया है, यह सुप्रीम कोर्ट ने कहा है.

श्री मधु भगत—(xxx)

श्री के.के. श्रीवास्तव—(xxx)

श्री मधु भगत—(xxx)

श्री के.के. श्रीवास्तव--(xxx)

श्री मधु भगत—(xxx)

अध्यक्ष महोदय—यह विलोपित करें. सीधी बातचीत न करें यह उचित नहीं है.

श्री महेन्द्र सिंह कालूखेड़ा—मैंने तो ऐसा कुछ नहीं कहा है.

डॉ. मोहन यादव—आपके पीछे जो कुछ लोग बैठे हैं उन्हें हम सबेरे से देख रहे हैं सबेरे से हम बड़ी संख्या में सबका सम्मान कर रहे हैं लेकिन लगातार जिस ढंग का माहौल सदन में बन रहा है यह नितांत निंदनीय है और यह अशोभनीय व्यवहार है अपनी मर्यादा में सब अपनी बात कहें जिसको जैसा कहना है वह कहने के लिये स्वतंत्र है. लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे फिर निवेदन करना चाहता हूँ. व्यवस्था का प्रश्न उठाते हुए जिस प्रकार से के.के. श्रीवास्तव जी को डांटकर बिठाया गया, कोई किसी की नौकरी करने नहीं आये हैं यहां, यह मर्यादा का सवाल है. यह संसदीय भाषा और संसदीय तरीका नहीं है.

अध्यक्ष महोदय—माननीय सदस्य आपने भाषा का थोड़ा बेजा इस्तेमाल किया है उसको विलोपित कर दिया है. सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि भाषा का संयम रखें. माननीय कालूखेड़ा जी अपनी बात कहें.

(xxx) आदेशानुसार विलोपित

श्री गोपाल भार्गव—माननीय अध्यक्ष महोदय, कालूखेड़ा जी से एक बात पूछना चाहता हूँ कि इस बात की क्या गारंटी है जैसा कि आप सीबीआई की जांच की मांग कर रहे हैं आज केन्द्र में भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार है. इसके पहले जैसा आप लोग या हम लोग कहते रहे हैं कि यदि निर्लिप्तता पायी जाती है कोई दोषी नहीं पाया जाता है तो इसमें क्या आप यह नहीं कहेंगे कि यह सीबीआई भी गड़बड़ कर रही है.

श्री महेन्द्र सिंह कालूखेड़ा—आप जांच करवा लीजिये, हम नहीं कहेंगे...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, यह मामला वर्ष 2004 से शुरू हो गया था। 2009 में पारस सखलेचा जी निर्दलीय विधायक थे उन्होंने मुख्यमंत्री जी से मिलकर पूरा डिटेल बताया था कि क्या-क्या अनियमितता व्यापम में हो रही हैं। मुख्यमंत्री जी याद करें, उसके बाद में दो और विधायकों ने प्रस्तुत किया, तो यह बहुत पुराना मामला है नया मामला नहीं है। एक बात और है व्यापम की विभिन्न परीक्षाओं में गड़ब़डियां हो रही हैं उसमें प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट के तहत आप कार्यवाही क्यों नहीं कर रहे हो। आई.पी.सी. की धारा 420, 467, 648, 471, 120 में तो कार्यवाही हो रही है। लेकिन पी.सी. एक्ट में सुनवाई का अधिकार स्पेशल जज

को है, तो इस बात की गंभीरता को और अच्छी तरह से लिया जा सकता है। यह ठीक नहीं है क्योंकि जो प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट बनाया गया है। इसके तहत भी आरोपियों के ऊपर कार्यवाही होना चाहिये इससिये हमको इसके ऊपर और आप पर विश्वास नहीं है क्योंकि आप प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट के तहत कार्यवाही नहीं कर रहे हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस पूरे प्रकरण को गंभीरता से लें और अगर इससे 1000 बच्चे अपने अधिकारों से वंचित हुए हैं तो यह महापाप है। जिन बच्चों में मोमबत्ती में, आईल लैंप में अपनी परीक्षा की तैयारी में तैयारियां की, उन बच्चों के बारे में आप सोचिये की उनके ऊपर क्या गुजरी होगी , यह आप मुझे बताईये। मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं कि कुल मिलाकर सिस्टम की गड़बड़ी तो है तो इसकी जिम्मेदारी तो किसी को लेनी पड़ेगी। क्योंकि 2004 के बाद यह सब गड़बड़ियां हुई हैं। अगर आप जिम्मेदारी नहीं लेंगे तो कौन जिम्मेदारी लेगा। आप हमारा मजाक उड़ा रहे हैं कि हम अनावश्यक विषय उठा रहे हैं। पूरे हिन्दुस्तान के अखबारों में टीवी चेनल्स में आ चुका है, मध्यप्रदेश इन घोटालों को लेकर बदनाम हो चुका है, आप कह रहे हैं कि हम यहां चर्चा नहीं करेंगे, क्यों चर्चा नहीं करेंगे। हम क्यों चर्चा नहीं करें, हमें भी जनादेश मिला है कि हम आपकी विरोधी नीतियों को रोकें इसलिये आप इस मामले को गंभीरता से लें और इस मामले को गंभीरता से लें। मैं मुख्यमंत्री जी की वेदना समझ सकता हूं आप पर आरोप लगे हैं। आपके मंत्रियों पर आरोप लगे हैं। लेकिन आप उन पिताओं के बारे में सोचिये, जो आपकी व्यवस्था का शिकार होकर, बेगुनाह होने के बावजूद आधी रात को तमाम सबूत देने के बावजूद जेल में ठूंस दिये गये । आप उनकी भी वेदना सोचिये, बच्चे अपने पिता के सामने, पिता अपने बच्चों के सामने शर्मसार थे, उनकी शादी नहीं होगी। आगे उनको नौकरियां नहीं मिलेंगी, जो लाचार हैं उनका कोई सुनने वाला नहीं है। इसलिये हम आपके जमी़र को जमाने के लिये इस विषय पर चर्चा चाहते थे। आप मेहरबानी करके इसको गंभीरता से लीजिये पूरे परिवार आंसू बहा रहे हैं। उनकी मदद के लिये कोई नहीं आ रहा है, मेहरबानी करके उनकी वेदना को समझिये और मैं मुख्यमंत्री जी से अपेक्षा करता हूं कि आप खुद ऑफर करें अपने आप को, क्योंकि **Caesar's wife should be above suspicion** क्योंकि एस.टी.एफ. का तो प्रमाणित हो गया है क्योंकि जहां डी.आई.जी जेल में है वहां ए.आई.जी क्या जांच करेगा। आप कई लोगों पर भी आरोप है कई लोगों ने पर्चियां भेजी, आपका पर्सनल स्टाफ, आपका पी.एस. जिसने अपनी बच्ची को

मेडिकल में पास कराया है, वह वहां से पर्चिया भेजता था। मुझे नहीं पता कि आपकी जानकारी में भेजता था या नहीं लेकिन अगर आपके स्टाफ से जाती तो उसका बहुत गंभीर मतलब है। इस प्रकार से पर्चियां भेजकर पास कराना इससे गंभीर अपराध क्या हो सकता है। यह तो महा घोटाला नहीं महा महा घोटाला है।

राजस्व मंत्री (श्री रामपाल सिंह) :- अध्यक्ष महोदय, आज इस विषय पर चर्चा के आपको धन्यवाद,माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी तुरन्त इसको स्वीकार करके चर्चा के लिये रखा उनको भी बहुत-बहुत धन्यवाद। नेता प्रतिपक्ष को मैं धन्यवाद दूं या क्या कहूं सुबह पलायन कर रहे थे, ऐसी स्थिति सुबह बनी हुई थी। लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय, बरसों से हम विधान सभा के पवित्र सदन में हैं 10 साल हम लोग विपक्ष में भी रहे, उस समय कांग्रेस का शासन था.....

श्री रामपाल सिंह - कई मामले हमने उठाए. माननीय भार्गव जी ने जो विषय रखा. पंचायत में जब हम गये जनपद में तो वे पढ़े-लिखे लोग नहीं थे. वे एम.ए.,बी.ए. वालों का इंटरव्यू ले रहे थे. सामान्य सभा के लोगों को दस अंक का इन्होंने अधिकार दिया हुआ था और लेनदेन के बगैर कोई काम होता नहीं था. इसी तरह पंचायत सचिवों की नियुक्ति वहीं होती थी. आठवीं तक के पंचायत सचिव बना दिये गये थे.

श्री कमलेश्वर पटेल – XXX

अध्यक्ष महोदय – कमलेश्वर जी आप बैठिये.

श्री रामपाल सिंह – माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा जो विषय है. पूरी चीज मध्यप्रदेश की जनता के सामने व्यापम की बात आने के बाद लोकसभा चुनाव में जनता ने उसे खारिज कर दिया.

श्री गोपाल भार्गव - माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे आपत्ति है. ये भारत सरकार या राज्य के मंत्री स्वयं कोई किसी प्रकार का, इंटरव्यू नहीं लेते हैं बेकार की बात कर रहे हैं. आप लोग भी मंत्री रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय – उसको कार्यवाही से निकाल दें.

श्री रामपाल सिंह - मेरा निवेदन है जब मामला उठाया. हजारों मामले फर्जी भर्ती के हमने विधान सभा में उठाए और तत्कालीन मुख्यमंत्री, मंत्रियों ने उस पर चर्चा नहीं की. रिकार्ड में लिखा हुआ है. पुलिस में जो बैठते थे उनकी भर्ती नहीं होती थी दूसरों की भर्ती हो जाती थी. सिगरेट की पर्चियों पर भोपाल से पर्ची जाती थी. महाघोटाले दस सालों में जो हुए हैं मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन और प्रार्थना करना चाहूंगा कि जिस तरह से इस मामले की जांच की है दस सालों में हुए कामों की आप जांच करवाएं.

श्री रामनिवास रावत - जांच करा लें. कौन मना कर रहा है.

श्री जीतू पटवारी – जांच करवाएं.

(..व्यवधान..)

XXX आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

श्री रामपाल सिंह – माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी जो आप बात कर रहे हैं आपको पता ही नहीं जांच में आप लोगों के भी नाम आने वाले हैं.

श्री रामनिवास रावत – सभी के आने चाहिये जो भी दोषी हो.

श्री जीतू पटवारी – निकलवाईये ना आप, किसने मना किया है. माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है.

अध्यक्ष महोदय – क्या कहना चाहते हैं आप.

(..व्यवधान..)

श्री जीतू पटवारी – हमें तो पता चला रामपाल जी आपका भी नाम है.मध्यप्रदेश सरकार के जिम्मेदार मंत्री यह कह रहे हैं कि जांच चल रही है.

(..व्यवधान..)

अध्यक्ष महोदय – कृपया विषय पर बोलें.

श्री जीतू पटवारी - माननीय अध्यक्ष महोदय, गंभीर विषय है.

अध्यक्ष महोदय – मैंने उनको निर्देश दे दिये आप बैठ जाएं.

श्री जीतू पटवारी – गंभीर विषय है और यह कह रहे हैं कि इनको पता है कि एस.टी.एफ. में किसके नाम आने वाले हैं तो फिर एस.टी.एफ. की कैसे निष्पक्ष जांच हो रही है. ये मंत्री जी को पता है.

श्री सत्यदेव कटारे - अध्यक्ष महोदय, हमारा व्यवस्था का प्रश्न है. हमें अव्यवस्था होती सदन में इसलिये दिख रही है इसलिये मैंने व्यवस्था का प्रश्न उठाया कि सदन के जितने भी मंत्रीगण खड़े हुए इन सबने बड़े जोर-शोर से बोला कि हाईकोर्ट की निगरानी में एस.टी.एफ. जांच कर रही है और मंत्री जी सर्टिफिकेट जारी कर रहे हैं कब कांग्रेसियों के नाम आने वाले हैं तो या तो XXX XXX घर में बैठ जाओ या हम लोगों को गिरफ्तार करो.

अध्यक्ष महोदय – कृपया बैठ जाएं. यह कोई प्वाइंट आफ आर्डर नहीं है. माननीय मंत्री जी.

XXX आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

(..व्यवधान..)

श्रीमती ललिता यादव – XXX कहां से आ गई. XXX क्या कमजोरी का प्रतीक है. आप लोग XXX की बात कर रहे हैं.

(..व्यवधान..)

एक माननीय सदस्या – यह गलत है. महिलाएं कोई कमजोर नहीं हैं.

अध्यक्ष महोदय – उसको कार्यवाही से निकाल दिया.

(..व्यवधान..)

अध्यक्ष महोदय – कृपया बैठ जाएं.

श्रीमती ललिता यादव – नेता प्रतिपक्ष ने XXX के बारे में बात कैसे बोली.

एक माननीय सदस्या – यह महिलाओं का अपमान है.

(..व्यवधान..)

अध्यक्ष महोदय – कृपया आप बैठ जाईये.

एक माननीय सदस्य – महिलाओं को अपमानित कर रहे हैं नेता प्रतिपक्ष.

अध्यक्ष महोदय – कार्यवाही से निकाल दिये शब्द. बैठ जाएं कृपया.

श्रीमती ललिता यादव – माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद.

श्री रामपाल सिंह - माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करूंगा थोड़ा सुनने की क्षमता आप रखें. मैं जो कहने वाला था. यह संजीव सक्सेना कौन है जो हमारे गुप्ता जी से चुनाव लड़े थे. यह कौन है. आपकी पार्टी के नहीं हैं.

श्री जीतू पटवारी – हाऊसिंग बोर्ड का भी हिसाब है संजीव सक्सेना के पास.

श्री रामपाल सिंह - लगाईये हिसाब लेकिन यह आप साहस के साथ बताएं औरपुराने घोटालों की जांच कराने की बात आती है आपको कष्ट हो रहा है. महाघोटाले आपके जमाने में हुए.

एक माननीय सदस्य – जांच कराईये.

(..व्यवधान..)

XXX आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

श्री रामपाल सिंह - मैं मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि जिस तरह बहादुरी के साथ निष्पक्ष जांच आपने एस.टी.एफ. से कराई है लेकिन निष्पक्ष जांच कराएं और दस सालों में जो घोटाले, महाघोटाले हुए .यह तो 200-250 की नियुक्ति में आप कर रहे हो लेकिन मैं चैलेंज करता हूं कि एक भी नियुक्ति बगैर रिश्वत के आपके जमाने में हुई हो तो मैं आपको बता सकता हूं. हर जनपद में शिक्षा कर्मियों से पैसा लिया आपने. इतना सरल कर दिया उसको. और इसी को सुधारने के लिये माननीय मुख्यमंत्री जी ने व्यापम बनाया.

श्री रामनिवास रावत—अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है कि स्थगन प्रस्ताव की विषय वस्तु केवल व्यावसायिक परीक्षा मंडल में हुई अनियमितताएं हैं और जिस तरह से सत्तापक्ष और सत्तापक्ष के मंत्री विषयान्तर कर रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय—आपकी बात स्वीकार है.

(व्यवधान)

श्रीमती ललिता यादव—आप कह रहे हैं विषयान्तर हो रहे हैं आप अपना तो सोचिये आप लोग तो चूड़ियों की बात कर रहे हैं.

(व्यवधान)

श्रीमती प्रमिला सिंह—कांग्रेस के भाईयों का तथा नेता प्रतिपक्ष का यहां पर प्रशिक्षण कराना चाहिये कि माताओं एवं बहिनों से किस तरह से बातचीत की जाये. क्या आपकी माताएं एवं बहिनें विधवा के रूप में रहती हैं बिना चूड़ियों के, बिना मांग के सिंदूर के,क्या विधवा के रूप में रहती हैं इतने जिम्मेदार नेता प्रतिपक्ष के पद पर होते हुए इस तरह की अशोभनीय भाषा का प्रयोग करते हैं.

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपया शांति रखें आप अपनी बात रखें. कृपया विषय पर बोलें.

श्रीमती ममता मीणा—क्या महिलाएं कमजोर रहती हैं क्या. झांसी की रानी भी महिला थीं. महिलाओं ने अच्छे अच्छों को मुंह की खिलाई है. जब जब पुरूष वर्ग पीछे चला गया तब महिलाओं ने आकर के तलवार उठायी है.

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आपकी भावनाएं आ गई हैं.

श्रीमती योगिता बोरकर—अध्यक्ष महोदय, सदन प्रारंभ हुआ है तब से विपक्ष गलतियों पर गलतियां करता जा रहा है और अपमान करता जा रहा है सदन में आप उनको मर्यादा में रहने के लिये निर्देश दें.

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप विषय पर आ जायें.

श्री रामपाल सिंह—अध्यक्ष महोदय, मेरे विषय सभी आ गये हैं मेरी तो आपके माध्यम से मांग है तथा माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद है लेकिन जो 10 साल की कांग्रेस के समय की शिकायतें दी हैं उसमें बहुत से शिक्षाकर्मियों के प्रकरण लोकायुक्त में लंबित हैं तत्कालीन लोकायुक्त ने, जब आपकी सरकार थी, उस समय आपको लिखा था कि यह सीधी भर्ती है, उसको रोकिये 22 मंत्रियों के खिलाफ पुरानी सरकार

के खिलाफ लिखा हुआ था उन मामलों को भी निकाला जाये ताकि मध्यप्रदेश की जनता देख सके यह बड़े घोटालों को दबाने के लिये व्यापम व्यापम कर रहे हैं. जनता ने इसको निरस्त कर दिया है, माननीय न्यायालय ने भी कर दिया है. पुरानी सरकार के एक एक आंकड़े दे सकता हूं मेरे पास में लिखे हुए हैं, इस पवित्र सदन में आप भी जनती की भावनाओं का आदर करें यही निवेदन करना चाहता हूं. आपने समय दिया धन्यवाद.

डॉ.गोविन्द सिंह—माननीय अध्यक्ष महोदय, आप एक व्यवस्था बनवा दीजिये, अभी तक सदन में परम्परा रही है कि जो माननीय सदस्य स्थगन प्रस्ताव की पहले अपनी सूचना देते हैं उनको पहले आपके सचिवालय की तरफ बोलने के लिये बुलाया जाता है. मैंने 25.6.14 को सबसे पहले सूचना दी है और विस्तार से दी है और आपके सचिवालय से मुझे पत्र भी मिला है कि आपकी सूचना एसटीएफ के व्यावसायिक परीक्षा मंडल के घोटाले में मानवाधिकार हनन के बारे में है, इससे आपको अवगत कराया जायेगा, लेकिन मुझे खेद है कि और आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि क्या आपके आने के बाद यह व्यवस्था बदल गई है अगर बदल गई है तो हमको स्वीकार है, लेकिन आप व्यवस्था दे देते तो मैं अपनी बात को प्रारंभ करूं.

अध्यक्ष महोदय—आपका जो स्थगन प्रस्ताव आया था वह मूलतः जो प्रदेश के बच्चे गिरफ्तार किये गये हैं उनके बारे में था कृपा आप उसको पढ़ लें, पहली ही दो लाईनों को पढ़ने से यह क्लियर हो जायेगा और वह गृह विभाग से संबंधित था, इसलिये उसको अभी पेंडिंग किया था उसको भी उत्तर के लिये शासन के पास भेजा गया है, आपके स्थगन प्रस्ताव का विषय दूसरा है और आज का विषय दूसरा है.

डॉ. गोविन्द सिंह--माननीय अध्यक्ष महोदय,पहले हम लोगों ने जिक्र किया लेकिन नीचे हमारा है पुलिस की भर्ती का है आरक्षकों की भर्ती का है.

अध्यक्ष महोदय--यह आपने बाद में लिखे. आपकी पहली 2 लाइन पढ़ दीजिये आप.

डॉ. गोविन्द सिंह--अब 2 लाइनें ..पहले है तो व्यापम नहीं है तो व्यवसायिक परीक्षा मंडल का ही.

अध्यक्ष महोदय--अब यह तो कोई बात नहीं हुई माननीय सदस्य, आप वरिष्ठ सदस्य हैं.

डॉ.गोविन्द सिंह--अब आपकी व्यवस्था इस प्रकार है तो ठीक है.

अध्यक्ष महोदय--गिरफ्तारी और भर्ती में बहुत फर्क है.

डॉ. गोविन्द सिंह--नहीं, बाद में नहीं है क्या ?

अध्यक्ष महोदय---स्थगन प्रस्ताव के नियमों का पढ़ लें. एक स्थगन प्रस्ताव में एक ही विषय उठाया जायेगा यह लिखा है, यह किताब देख लीजिये, आप पढ़ लीजिये. एक विषय में एक स्थगन प्रस्ताव में 4 विषय नहीं उठा सकते, यह भी नियमों में लिखा है यह मेरी व्यवस्था है.

डॉ.गोविन्द सिंह--ठीक है, आपका आदेश स्वीकार है माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवसायिक परीक्षा मंडल के संबंध में सबसे पहले इसका सरगना हमें जो जानकारी मिली थी, 2009 में, भिंड जिले का निवासी डा. जगदीश अग्रवाल थाऔर उसने भिंड जिले में तमाम गरीब लोगों के जिनके पास 2-2, 3-3 बीघा जमीन थी, उनको बिकवा कर किसी को डाक्टर बनवाया था, किसी को दुग्ध संघ में भर्ती कराने का काम किया और मैंने उसी समय तत्कालीन चिकित्सा शिक्षा मंत्री और माननीय मुख्यमंत्री जी को पत्र लिखा था परंतु पहले परंपरा रही थी पुराने समय में कि जो माननीय विधायक या सांसद मंत्री या मुख्यमंत्री जी को पत्र लिखते हैं तो उसके पत्र का जवाब दे दिया जाता था लेकिन जबसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई, विधायकों के पत्रों का उत्तर नहीं दिया जाता है और मंत्री विधायकों सांसदों के पत्र का स्वयं दस्तखत से जवाब देता था, यह परंपरा जब तक कांग्रेस सरकार रही , तब तक थी क्योंकि आपका तो प्रजातंत्र में इनका विश्वास नहीं है, मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि इस प्रकार की की परंपरा पुन : प्रारंभ की जाये ताकि पता चले कि मामले में क्या हुआ है और हम क्या जानना चाहते हैं आज तक कोई जवाब मिलता नहीं है. माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी गोपाल भार्गव जी ने और विजय वर्गीय जी ने बड़े जोर से कहा

जोरदार आवाज के साथ कि पटवारी परीक्षा बड़े ही निष्पक्ष रूप से हुई है बड़ी पारदर्शिता हुई. पूरा चर्चा हो गई देश विदेश में टी.वी. पर,रेडियो पर सब जगह लेकिन मैं जानना चाहता हूं माननीय सरकार मुख्यमंत्री जी से और आप सबसे इस सदन के और अध्यक्ष महोदय आपकी ओर से मैं कहना चाहता हूं, नाम किसी का नहीं ले रहा हूं लेकिन चाहे मंत्री हों जिन्होंने गड़बड़ की है एक आपकी केन्द्र की मंत्री है वर्तमान मंत्रीमंडल में में है उनके रिश्तेदार उनके बड़े भाई के समधी छतरपुर में एक ही घर में सगे समधी के दो बेटे, एक बेटियां चौबे मोहल्ला छतरपुर, वहां पर एक ही दिन 2008 की परीक्षा में भर्ती हुए उसी गांव बगल में रहने वाले 8 अन्य पटवारी उसी समय 2008 की परीक्षा में 5 और 3 आठ क्या यह एक ऐसा संवर्ग है कि इस पटवारी की परीक्षा में एक ही घर में एक ही पड़ोस के रहने वाले 8 व्यक्ति पटवारी बन जाते हैं और उनकी पोष्टिंग आज भी छतरपुर में है अगर आप आदेश दे अध्यक्ष महोदय, तो मैं क्रम से उनके नाम भी पढ़ कर रख सकता हूं.

अध्यक्ष महोदय--नहीं ठीक है, आपने बतला दिये.

डा.गोविन्द सिंह--8 व्यक्ति क्या उनकी ईमानदारी पर प्रश्न नहीं लगता ? क्या उस मंत्री पर यह संदेह की सुई नहीं है उस मंत्री पर और मैं बड़े ही खेद और दुख के साथ कहना चाहता हूं कि जिस समय मैं गृह विभाग में राज्यमंत्री था उस समय डी.जी.पी. का बड़ा सम्मान था, बड़ी इज्जत थी, मैं भी सम्मान करता था लेकिन उन्होंने तो अपनी सारी लिहाज (xxx) ही खो दी. उनके यहां जाते हैं कहते हैं कि भाई आज तक के इतिहास में ऐसा कभी हुआ कि जिस पर आरोप लगा, डी.जी.पी. उनके घर जाये और घर जाकर यह कहे कि मैं आपसे खेद व्यक्त करता हूं आपका नाम इसमें शामिल नहीं है, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या इसकी जांच आप करायेंगे क्यों आज तक इसके पटवारियों की जांच नहीं हुई, एक ही परिवार में, एक ही घर में आपके नाते रिश्तेदार जहां आप हमेशा रुकती थीं छतरपुर में उसके घर में 4-4 दिन रूका जाता था, उन पर आरोप लगाना मेरा कर्तव्य और धर्म नहीं बनता ?.....

.

(xxx) विलोपित

श्रीमती ललिता यादव -- तो पटवारी का रिश्तेदार होना पाप है क्या.

डॉ. गोविन्द सिंह -- आप बैठ जायें.

श्रीमती ललिता यादव -- हम सही तो बोल रहे हैं. तो पटवारी का रिश्तेदार होना पाप है क्या.

डॉ. गोविन्द सिंह -- तो आप बोलो फिर. मैंने नाम तो लिया नहीं. मैंने नाम लिया क्या.

श्रीमती ललिता यादव -- किसी का रिश्तेदार पटवारी नहीं हो सकता क्या.

श्रीमती योगिता बोरकर -- महिलायें क्यों नहीं बोल सकती हैं. महिलाओं को बार बार चूड़ी पहनना और महिलाओं को बोलने नहीं देना,यह क्या है.

अध्यक्ष महोदय -- माननीय सदस्य, कृपया बैठ जायें, उनको बोलने दें.

डॉ. गोविन्द सिंह -- अध्यक्ष महोदय, परम्परा है नाम नहीं लिया जाता है, मैंने नाम नहीं लिया है. लेकिन क्या यह सच पूरा प्रदेश नहीं जानना चाहता, शक उस व्यक्ति पर नहीं उठता है कि आखिर ये भर्तियां एक ही घर में कैसे हो गयी. यह संदेह की सुई है. मैं मुख्यमंत्री जी से मांग करता हूं कि आप इन पटवारियों की भर्ती के मामले की निष्पक्ष रुप से जांच करायें और विजयवर्गीय जी, आपने जब इस तरह की बात की है, तो उसमें आप पहल करें और इनकी जांच करायें. इसके बाद मैं यह भी कहना चाहता हूं कि एसटीएफ द्वरा न्यायालय में एक सूची पेश की गयी है, जिसमें जो पटवारियों की भर्ती हुई है, संविदा शिक्षक वर्ग- दो, उस सूची में 15 संविदा शिक्षकों की भर्ती एक वर्तमान केंद्रीय मंत्री हैं, उनके द्वारा कराई गई है. इसके अलावा राज भवन से भी 5 लोगों की भर्तियां हुई हैं. यह सूची वहां एसटीएफ ने प्रस्तुत की है. पहली बार एक नई परम्परा चालू हो गयी. कभी ऐसी परम्परा नहीं रही कि अपराधी को बचाने के लिये सरकार की तरफ से, अगर मंत्री पर आरोप लगता है , किसी पर, मुख्यमंत्री पर, तो सरकार की तरफ से जाकर डीजीपी और वहां पुलिस की तरफ से निर्देश जाता है, पत्र जाता है समाचार पत्रों में कि इनके नाम नहीं हैं. यह आप कौन सी परम्परा शुरु करना चाहते हैं. आप क्या अपराधी के पक्ष में बोलेंगे. अगर आप न्याय की कुर्सी पर बैठे हैं, सवा सात करोड़ जनता ने आपको प्रदेश का मुखिया बनाया है, तो आपका दायित्व, कर्तव्य एवं धर्म बनता है कि आपके ऊपर जो आरोप

लगे हैं, तो दूध का दूध पानी का पानी करो. मुख्यमंत्री जी, आप कहते हैं कि मैं ईमानदार था, ईमानदार हूं और ईमानदार रहूंगा. आपको लोगों के सामने सिर झुकाने की जरुरत नहीं पड़ेगी. अगर आप ईमाननदार थे और हैं, तो विपक्ष की लगातार चार माह से मांग चल रही है, आप जब दूध के धुले हैं, आपके ऊपर आरोप नहीं हैं, तो फिर क्या परेशानी है. आप इसकी सीबीआई से जांच करायें. जब सीबीआई से हम जांच की मांग कर रहे हैं और हमें पूरा विश्वास है कि

एसटीएफ और पुलिस मुख्यमंत्री जी के दबाव में काम कर रही है. आजादी के बाद मध्यप्रदेश के इतिहस में जब से यह विधान सभा बनी है, एक भी सरकार का उदाहरण हो कि सरकार ने, पुलिस ने जाकर अपराधी का पक्ष लिया हो. यह नया उदाहरण पेश किया है. इसलिये हमें शक है कि एसटीएफ सही जांच नहीं कर पा रही है. दबाव में काम कर रही है. इसलिये मैं चाहता हूं, तो फिर ठीक है मुख्यमंत्री जी ईमानदार हैं, काम करने वाले हैं. अगर आपने मेरे पत्र का जवाब 4 वर्ष पहले दे दिया होता, यह 2008 का पत्र है, तो यह इतना बड़ा घोटाला लगातार बढ़ता नहीं. मुख्यमंत्री जी, हम नहीं कहना चाहते, लेकिन अगर मुख्यमंत्री जी के अधिकारी, अधीनस्थ लोग इस भ्रष्टाचार में इनवाल्व हैं, पीए आदि जो भी हों. आपकी सरकार में हो रहा है. जो प्रदेश का मुखिया होता है, प्रदेश चलाने वाला होता है, अगर वह सक्षम है, तो उनको पकड़कर जेल में भेजना चाहिये था, उनके खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिये थी. अगर नहीं है तो मुख्यमंत्री जी, आपको एक क्षण भी इस प्रदेश की कुर्सी पर बैठने का अधिकार नहीं है. ..(व्यवधान).. मुख्यमंत्री जी, आप के जो बुजुर्ग नेता हैं, उनसे आपने बहुत कुछ सीखा है. आपने उनके मार्गदर्शन में काम किया है, मैं भी उनका सम्मान करता हूं. जब उन पर एक हवाला का आरोप लगा था, उस नेता ने तत्काल इस्तीफा दिया था और जब न्यायालय से उनको दोष मुक्त किया गया, तब वे दोबारा चुनाव लड़े थे. उसके पहले उन्होंने पद त्याग दिया था. आप भी उनके साथ रहे हैं, आपने उनसे मार्दर्शन लिया है, आपने उनसे बहुत कुछ सीखा है. क्या उनसे आपने यह परम्परा नहीं सीखी, यह ज्ञान नहीं सीखा कि नैतिकता होनी चाहिये. लोक राज है, लोक राज में लोक लाज भी होनी चाहिये. जिस व्यक्ति में, जिस सरकार में लोज लाज नहीं है, उस सरकार को तत्काल हट जाना चाहिये. एक मिनट भी नहीं रहना चाहिये. मुख्यमंत्री जी, आप तो बड़े एक्सपर्ट, चतुर हैं, सब मामले दबाने में आपकी महारत हासिल है

इसलिये आप सीबीआई से जांच कराईये, अगर आपकी महारत लोकायुक्त में भी चल जाती है , एसटीएफ में चलती है, सब जगह चलती है तो कृपा करके आप सीबीआई में भी चला लेना लेकिन आप सीबीआई से जांच कराये, जब आप सीबीआई से दोषमुक्त हो जायेंगे तो हम आपका सम्मान करेंगे, आपका अभिनंदन करेंगे, अन्यथा आप पर जो दाग लगा है वह दाग मिटेगा नहीं. अध्यक्ष महोदय, मेरा आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी कहना है कि आप पर आरोप लगा है जब तक आप जांच में दोषमुक्त नहीं हो जाते तब तक आप मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा दे दें, और मुख्यमंत्री पद किसी दूसरे को दे दें.

श्री महेन्द्र सिंह कालूखेडा-- मुख्यमंत्री जी एसटीएफ को आपने क्यों बुलाया है. अश्विनी कुमार Law Minister का इस्तीफा इसलिये हुआ था कि कोयला विभाग के अधिकारियों को बुलाया था और फाईल बुलाई थी. मुख्यमंत्री जी आपने एसटीएफ के लोगों को क्यों बुलाया. हाईकोर्ट के अधीन जांच हो रही है आप इन्टरफेयर कर रहे हैं.

श्री गोपाल भार्गव--अध्यक्ष महोदय, एक साईंस समझ में नहीं आई. कई सदस्य बोलते तो बहुत गुस्से में हैं माईक पर और फिर बैठकर के हंसने लगते हैं.

श्री शैलेन्द्र जैन (सागर) -माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे पूरा विषय ध्यान है, सारे विषय आ चुके हैं.मैं संक्षेप में अपनी बात रखूंगा. माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने बहुत ही महत्वपूर्ण विषय को, लोकहित के महत्व को आपने संज्ञान लिया, लेकिन जिस तरीके से विपक्ष के सदस्यों ने बहुत हल्के ढंग से, बहुत गैर गंभीरतापूर्वक इस पूरे विषय को लिया है मुझे निश्चित रूप से कहते हुये अत्यंत क्षोभ हो रहा है कि ऐसा उन्हें नहीं करना चाहिये. यह अकेले कुछ मुट्ठीभर आरोपियों का विषय नहीं है.यह लाखों करोडों युवाओं के श्रम, परिश्रम और उनकी ईमानदारी का आपने उपहास उड़ाया है, मैं आपकी निंदा करता हूं. आपने कुछ मुट्ठीभर आरोपियों की आड़ में और कहां से कैसे तार जुड़े हुये हैं यह किसी से छिपा हुआ नहीं है, यह सदन में बैठे हुये सदस्यों को भी पता है. मैं कहना चाहता हूं विपक्ष के साथियों से कि :-

काबा किस मुंह से जाओगे ग़ालिब,

शर्म तुमको मगर नहीं आती

आपको शर्म आनी चाहिये .

श्रीमती इमरती देवी-- तकलीफ तो आपको भी है पर क्या करों असत्य मुंह से बोलना पड़ रहा है.

श्री शैलेन्द्र जैन-- मैं मुग्ध कंठ से माननीय मुख्यमंत्री जी की प्रशंसा करना चाहता हूं उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूं कि इतने संवेदनशील विषय को उन्होंने स्वयं संज्ञान लिया, आप राजनैतिक रोटियां सेंकना चाहते हैं, आपने इतना बड़ा विषय स्वयं आगे आकर के क्यों नहीं उठाया, आपने उठाया नहीं, मुख्यमंत्री महोदय ने स्वयं संज्ञान लेकर और उसके बारे में एसटीएफ से जांच कराने का निर्णय लिया. मैं तो पूरे के पूरे हमारे पूर्व वक्ताओं का समर्थन करना चाहता हूं कि पूरे सदन को एकमत होकर के माननीय मुख्यमंत्री जी का अभिवादन करना चाहिये.

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि यह विषय कुछ चुनिंदा मुट्ठीभर लोगों का नहीं है . यह भारत देश के करोड़ों युवाओं का विषय है. उनके मान सम्मान का विषय है. अंत में मैं माननीय मुख्यमंत्री जी की ओर से सदन में कहना चाहता हू. मुख्यमंत्री महोदय की मंशा बहुत ही पाक है. मुख्यमंत्री महोदय की इच्छा है कि आरोपियों को सजा मिलनी चाहिये और इस दिशा में एसटीएफ काम कर रही है. हमारे हाईकोर्ट के माध्यम से उसका सुपरवीजन हो रहा है. मैं स्वर्गीय हरिवंशराय बच्चन जी की कविता में से दो लाईनें कहकर के अपनी बात को समाप्त करूंगा-

"कभी नहीं जो तज सकते हैं अपना न्यायोचित अधिकार

कभी नहीं जो सह सकते हैं, शीश नवाकर अत्याचार

एक अकेले हों या उनके साथ खड़ी हो भारी भीड़

मैं हूं उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़. "

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमें बोलने के लिये अवसर प्रदान किया उसके लिये आपको बहुत बहुत धन्यवाद.

श्री बाला बच्चन (राजपुर) -- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने हम सब विपक्ष के विधायकों के व्यापम घोटाले वाले स्थगन प्रस्ताव को स्वीकार किया और इस सदन में चर्चा कराई इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं.

अध्यक्ष महोदय, यह चर्चा का विषय केवल प्रदेश का ही नहीं है, पूरे देश का यह चर्चा का विषय है और यह सत्ता पक्ष के साथियों का हम आप यह आरोप गलत है कि कांग्रेस चाहती है, अकेले कांग्रेस नहीं पूरा प्रदेश और देश चाहते है और आज पूरा प्रदेश और देश देख रहा है और यह केवल हम अकेले नहीं चाहते हैं. मैं आपको बताना चाहता हूं कि आपकी वर्तमान में जो केन्द्रीय मंत्री हैं उन्होंने दिसम्बर में यह कहा है कि व्यापम घोटाला देश के चारा घोटाले से भी बड़ा घोटाला है. यह आपकी केन्द्रीय मंत्री ने दिसम्बर में कहा है. ds.....

श्री बाला बच्चन (जारी)

मैं बताना चाहता हूं कि आपके केन्द्रीय मंत्री ने दिसम्बर में यह कहा है कि प्रदेश का व्यापम घोटाला देश के चारा घोटाला से भी बड़ा है. 15 जनवरी को माननीय मंत्रीजी ने इस सदन में कहा था कि एक हजार फर्जी नियुक्तियां हुई हैं. उस समय से लेकर अभी तक आपने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अंतर्गत जो अधिकारी-कर्मचारी शामिल हैं उन पर कार्रवाई क्यों नहीं की?

अध्यक्ष महोदय, आप जिस जांच एजेन्सी की बात कर रहे हैं. वह जांच एजेन्सी के लोग निर्दोष परिजनों को फोन करते हैं और उनके परिजनों को फोन करके बुलाते हैं और उनसे वसूली कर रहे हैं. पीएमटी में जिन विद्यार्थियों ने जमानत करायी वहां तक तो ठीक है किन्तु ऐसे भी विद्यार्थी हैं, जिनके परिजनों को न बुलाते हुए उनके रिश्तेदारों को बुलाया जा रहा है. अध्यक्ष महोदय, बहुत सारी चीजें आ चुकी हैं. व्यापम घोटाले में सरकार शामिल है. कैसी है. किनके द्वारा है. कितनी है. कम समय होने के कारण हम स्पष्ट नहीं कर पा रहे हैं. ऐसा भी एक विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हुआ है जिसने मात्र 60 अंक का प्रश्न पत्र किया है. क्या 60 में से 60 नंबर पूरे सही होंगे और वह मेरिट में सातवें नंबर पर आता है. जो पूर्व मंत्रीजी अभी जेल में हैं उनके द्वारा नाम दिये जाते थे और नियंत्रक मेरिट में उनको फिट करते थे.

अध्यक्ष महोदय, हमारी जो आशंका है वह इन बातों को स्पष्ट और पुष्ट करती है कि सरकार इसमें शामिल है और जब तक मुख्यमंत्री बने रहेंगे तब तक दूध का दूध और पानी का पानी नहीं हो पायेगा. अभी एक सप्ताह पहले की बात है यूपी में पीएमटी घोटाला हुआ है. वहां भारतीय जनता पार्टी विपक्ष में है जैसे आज हम यहां पर विपक्ष के नाते सीबीआई से व्यापम घोटाले की जांच की मांग कर रहे हैं, यूपी पीएमटी घोटाले में भारतीय जनता पार्टी सीबीआई से जांच की मांग कर रही है. माननीय मुख्यमंत्रीजी अगर आपके ऊपर कोई बात आयी है और जब तक आप नहीं हटेंगे तब तक मैं नहीं समझता हूं कि साफ जांच रिपोर्ट होगी. जांच को कैसे प्रभावित कर रहे हैं. जो प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है. आप उस एजेन्सी को बुलाकर बैठक ले रहे हैं. आपने ऐसे कितने इश्यूज़ में बैठक ली है जो न्यायालय में विचाराधीन है और उस जांच एजेन्सी को आपने बुलवाया हो. इससे स्पष्ट है कि आप उनको प्रभावित कर रहे हैं. यह साफ साफ बात है. जब तक आप इससे हटकर जांच नहीं कराते तब तक दूध का दूध और पानी का पानी नहीं होगा. मैं आपसे जानना चाहता हूं कि जो पीएमटी का पुराना सिस्टम था कि जब तक विद्यार्थी मध्यप्रदेश से 10 वीं और 12 वीं पास नहीं करते थे, तब तक वे इन परीक्षाओं में शामिल नहीं हो सकते थे. ऐसा आपने क्यों किया है?

अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी जानना चाहता हूं कि परिवहन आरक्षक भर्ती की भी परीक्षा हुई है. उसमें भी बड़ा घोटाला हुआ है. उसकी एक्सल शीट को हटा दिया गया है. वह गायब कर दी गई है. आज तक उसकी FIR दर्ज नहीं हुई है क्या कारण है? अध्यक्ष महोदय, निर्दोष परिजनों को बुलाया जा रहा है और ऐसे विद्यार्थी जो इस परीक्षा में फेल हुए हैं उनको भी जमानत कराना पड़ रही है. उनको किस आरोप में पार्टी बना रहे हो और मुलजिम बना रहे हो और उनको भी जमानत कराना पड़ रही है. ये सब कमजोर तबके के विद्यार्थी हैं. इन बातों की ओर आपको ध्यान देना पड़ेगा नहीं तो जिस तरह से केवल हमारा ही आरोप नहीं है इस पर पूरे प्रदेश और देश का ध्यान है. मैं कह चुका हूं कि यह चारा घोटाला से बड़ा घोटाला है. बहुत सारे तथ्य और मुद्दे मेरे पास है लेकिन समय कम देने के कारण मैं उन सारी बातों को बोल नहीं पा रहा हूं. आपने समय दिया. धन्यवाद.

(व्यवधान)

श्री सुन्दरलाल तिवारी (गुढ) – माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष जी ने आज सुबह जब मांग की कि व्यापम पर चर्चा होना चाहिए तो बहुत जल्दी से मुख्यमंत्री जी अपनी कुर्सी पर खड़े हो गये, खड़े होकर उन्होंने कहा कि मैं प्रस्ताव ला रहा हूं और व्यापम पर चर्चा होना चाहिए. यह बात जब मुख्यमंत्री जी ने कही तो हम भी बहुत उत्साहित हुए, हमने सोचा कि मुख्यमंत्री जी एक लाइन और आगे कह देंगे, कि हम व्यापम की जांच सीबीआई को सौंप रहे हैं. लेकिन उस लाइन पर आगे मुख्यमंत्री जी नहीं बढ़े , क्यों ? क्योंकि घोषणा राजनीति से प्रेरित थी. वह हृदय से नहीं थी , वह अपराधियों को पक़ड़वाना नहीं चाहते थे, नहीं तो मुख्यमंत्री जी उसमें एक लाइन और जोड़ देते कि हम इसकी जांच सीबीआई को दे रहे हैं.

माननीय अध्यक्ष महोदय, आगे हमारा कहना है कि स्वर्णिम मध्यप्रदेश की कल्पना हम लोग करते हैं, स्वर्णिम मध्यप्रदेश बनाने की बात आपने कही है. क्या यह ही प्रतिभाओं की हत्या करके स्वर्णिम मध्यप्रदेश बनाने की बात कही है. जिनको आज डॉक्टर होना चाहिए वह आज रोते हुए घर में पड़े हैं, जिनको इंजीनियर होना चाहिए, जिनको बड़े पद पर होना चाहिए, आज वह विक्षिप्त रूप में अपने घर में पड़े हुए हैं, उनका पूरा जीवन नष्ट हो गया है. जो चपरासी नहीं हो सकते थे वह आज डॉक्टर बनकर बैठे हुए हैं, जो बाबू नहीं बन सकते थे वह बड़ी बड़ी कुर्सियों पर बैठे हुए हैं. क्या इस तरह से स्वर्णिम मध्यप्रदेश का निर्माण होगा. क्या यह कल्पना माननीय मुख्यमंत्री जी आपकी थी. यह किसी एक दल का विषय नहीं है. यह विषय न कांग्रेस का है न भाजपा का है. यह उन अपराधियों का है जिन्होंने भ्रष्टाचार किया है. आप कह रहे हैं कि हमने मण्डल बनाया है यह कौन सा मंडल है, जिसमें केंडिडेट पहले तय हो जाते हैं, परीक्षाएं बाद में होती हैं. मेरा यह कहना है कि अगर हमने रूपया पहले ले लिया, पहले हमने केंडिडेट सिलेक्ट कर लिया है, फलां फलां आदमी को हमको डॉक्टर बनाना है, फलां फलां आदमी को हमें पुलिस में लेना है, हमें इस आदमी को ट्रेफिक पुलिस में भर्ती करना है, हमें इनको इंजीनियर बनाना है. त्रिवेदी जी की तो तिजोरी भर गई अब वह वहां से मंत्री जी के घर आ गई, मंत्री जी की तिजोरी में वह पैसे आ गये. यह जो व्यापम की परीक्षा थी आपकी यह पूरा ढकोसला था. नियुक्तियां पहले हो जाती थीं पैसा तिजोरियों में आ जाता था. उसके बाद में परीक्षा होती थी. आज भी यह पोल खुलने से बचे पूरा मंत्रिमण्डल, यहां पर वरिष्ठ मंत्री आज

यहां पर शेजवार जी नहीं हैं, विजयवर्गीय जी हैं माननीय मंत्री जी यह तो ऐसा बोल रहे थे कि कल रात को आपने उनको ट्रेनिंग दी हो, रटवाया हो, कि आपको ऐसा ऐसा बोलना है...(व्यवधान)... मेरा आपसे कहना है कि जब आपने ड्राफ्ट गलत लिये हैं, जब आपने उन गरीब विद्यार्थियों से गलत पैसे लिये. जब पहले आप नियुक्ति कर चुके थे तो आप यहां पर घोषणा करें कि 1 करोड़ 27 लाख बच्चों ने जिन्होंने ड्राफ्ट जमा किया है जिनके साथ में धोखा हुआ है, उनके सारे पैसे लौटाये जायेंगे. यह आज यहां पर घोषणा होना चाहिए.

माननीय अध्यक्ष महोदय, आगे मेरा कहना है कि हाई कोर्ट के बारे में बहुत से लोगों ने कहा कि मेटर सबज्यूडिस है, कतई मेटर सबज्यूडिस नहीं है. अदालत ने यह रोक नहीं लगाई है कि माननीय मुख्यमंत्री जी सीबीआई से जांच की घोषणा नहीं कर सकते हैं. सरकार का अधिकार सरकार के पास है, कहते हैं कि मानेटरिंग हो रही है इसलिए सीबीआई से जांच नहीं होना चाहिए.

माननीय मुख्यमंत्री जी मध्यप्रदेश के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि सरकार ने आदेश किया हो और अदालत ने यह कहा हो कि मानिटरिंग हम करेंगे इस जांच एजेंसी पर हमें विश्वास नहीं है. 10 वर्ष से आप मुख्यमंत्री हैं. इसके पहले भी लोग रहे होंगे.

इसके भी पहले लोग रहे होंगे. मैं पूरे दावे से कह सकता हूं कि सरकार के निर्णय पर किसी जांच पर कोई मॉनिटरिंग का आदेश हुआ हो, यह मध्यप्रदेश के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ. मुख्यमंत्री जी, पहली बार आपके मुख्यमंत्री बनने से पूरे प्रदेश का सिर (xxx) से झुका है और पहली बार हाईकोर्ट ने यह आदेश किया है कि मॉनिटरिंग हम करेंगे, इन अधिकारियों पर हमें कोई भरोसा नहीं है. फिर भी आप जांच सीबीआई को देने के लिए तैयार नहीं हैं.

श्री विश्वास सारंग - अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है. माननीय सदस्य ने कहा है कि उच्च न्यायालय ने कोई निर्णय दिया है. इस तरह का कोई निर्णय नहीं आया है. यह सदन में निर्णय की असत्य व्याख्या करना मुझे नहीं लगता है कि यह ठीक है. इस बात को वापस लेना चाहिए. कहीं न्यायालय ने यह नहीं बोला है कि इन अधिकारियों पर हमें विश्वास नहीं है.

श्री सुंदरलाल तिवारी - माननीय अध्यक्ष महोदय, मेडिकल कॉलेज के डीन की शिकायत पर वर्ष 2009 में एक कमेटी बनाई गई है. इसी सरकार ने कमेटी बनाई थी और उसमें यह कहा गया था कि 20 से 25 लोग गलत पाये गये हैं. वर्ष 2009 में ही इसकी जांच सीबीआई को दे देना था या माननीय मुख्यमंत्री जी, आपको गंभीर रूप से इस पर ध्यान देना चाहिए था. लेकिन आपने ध्यान नहीं दिया. जब बेबस लोग, मजबूर लोग हाईकोर्ट में गये और बीसों पिटीशन हाईकोर्ट में लगीं, विभिन्न तरह के वहां तर्क रखे गये. वकीलों ने यह कहा कि सरकार पर हमको कोई विश्वास नहीं है. सरकार निष्पक्ष जांच नहीं कराएगी. तब आपकी तरफ से जो डर के मारे रिप्लाई गया है, वहां आपके सरकारी वकील ने लिखकर दिया है कि सीबीआई से जांच मत कराइए, एसटीएफ से जांच कराने का निर्णय हमने लिया है और वर्ष 2013 में आपने यह निर्णय लिया है. वर्ष 2009 और वर्ष 2013 में 4-5 साल का फर्क है. इन 5 सालों के बाद जब आपको मालूम पड़ गया कि हाईकोर्ट चुप बैठने वाली नहीं है, होईकोर्ट कोई फैसला करेगी. हाईकोर्ट सीबीआई से जांच के लिए कोई ऑर्डर न कर दे, तब आपने इस एसटीएफ का सहारा लिया. एसटीएफ का गठन आपने नहीं किया, सरकार ने नहीं किया है. एसटीएफ पहले से गठित थी. यह कोई नयी एसटीएफ गठित नहीं हुई है. एसटीएफ को अलग से यह काम आपने सौंपा है. एसटीएफ की जो बात कर रहे हैं, बड़ी महत्वपूर्ण बात आप नहीं कर रहे हैं. एसटीएफ का गठन पहले से था. क्या बात कर रही है सरकार? बच्चों को लूट लिया. मुख्यमंत्री जी, गरीबों को लूट लिया. एक रुपया आज तक आपने नहीं पकड़ा. एक रुपया उन बच्चों को लौटाया नहीं है और लम्बी-लम्बी बात यह सरकार कर रही है. मुख्यमंत्री जी (xx) मैं कह रहा हूं (xx)

अध्यक्ष महोदय - इसे विलोपित कर दें. (व्यवधान)...कृपया समाप्त करें.

श्री सुंदरलाल तिवारी - अगर मेरी भाषा में कोई त्रुटि हो तो मैं क्षमा चाहता हूं. लेकिन यह जरूर पीड़ा है. यह अरबों रुपयों का घोटाला और एक रुपया आज तक जप्त नहीं हुआ. हमारे लायक साथी ने यह कहा है कि 'प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट' के तहत आज तक कोई मामला पंजीबद्ध नहीं हुआ और किसी के यहां कोई छापा नहीं लगा. लेकिन मास्टर माईंड श्री सुधीर शर्मा, जिनके साथ पूरी सरकार के नाम जुड़े हैं. आपके नाम पहले से जुड़े हुए हैं. कई बार अखबारों में यह आया है. वह आज हिन्दुस्तान में है या हिन्दुस्तान के बाहर है. यह सरकार सदन में यह बताए कि वह कहां है? उस पर 5000 रुपया इनाम घोषित है. बेचारा

वह कितना गरीब आदमी है, उसके खिलाफ 5000 रुपया घोषित किया है. यहां डीजीपी साहब बैठे हैं. यह डीजीपी साहब सबको क्लीन चिट दे रहे हैं. सबको बोल रहे हैं, चाहे (XX) हों या अन्य, उनको छोड़िए, अब वह दुनिया में नहीं हैं. यह बहुत बड़ा जाल है. मैं यह कहता हूं मुख्यमंत्री जी कि शायद यह जाल की जानकारी आपको है. लेकिन इस जाल में कहीं न कहीं (xxx) की बहुत बड़ी भूमिका है.

अध्यक्ष महोदय - यह विलोपित कर दें. (व्यवधान)...माननीय तिवारी जी, आप बजाय तथ्यों पर बोलने के भाषण दे रहे हैं. कृपा करके एक-दो तथ्य आप दो मिनट में रख दें और बात अपनी समाप्त करें. आपको बहुत समय दे चुके हैं.

(xx) आदेशानुसार विलोपित.

(व्यवधान)

श्री सुन्दरलाल तिवारी —माननीय अध्यक्ष महोदय, गोंदिया के 19 लोगों के नाम आए हैं. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—यह बात कई बार आ चुकी है, आप उसी बात का रिपीटीशन कर रहे हैं. अनेक बार यह बात आ चुकी है.

श्री सुन्दरलाल तिवारी—ये 19 लोग कौन हैं. इस बात की तहकीकात होनी चाहिए. परिवहन मंत्री जी ने यह बात कही है कि ये मध्यप्रदेश के रहने वाले हैं. इनकी पांचवी,आठवीं और दसवीं की मार्कशीट पटल पर रखी जाय, तब आपकी बात पर विश्वसनीयता होगी. ..(व्यवधान) मैं यह बात कहना चाहता हूं कि डी. जी. पी. ने क्लीन चीट दी है. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—सब कृपया बैठ जायें. इस मामले पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है. अब मैं श्री तिवारी जी सहित किसी अन्य सदस्य को चर्चा की अनुमति नहीं दे रहा हूं. मननीय श्री सत्यदेव कटारे नेता प्रतिपक्ष अपनी बात प्रारंभ करें.

श्री सुन्दरलाल तिवारी—(XXX) (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय— जो माननीय तिवारी बोल रहे हैं वह कुछ नहीं लिखा जाएगा. अब उनका समय पूरा हो गया है. मैं माननीय नेता प्रतिपक्ष से अनुरोध करता हूं (व्यवधान) कांग्रेस पक्ष के लगभग 12 लोग बोल चुके हैं. अब मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है .. तिवारी जी आप जो कुछ भी बोल रहे हैं वह नहीं लिखा जा रहा है. कृपया अब आप नेता प्रतिपक्ष को बोलने दें, व्यवधान न डालें. माननीय प्रतिपक्ष के नेताजी अपनी बात प्रारंभ करें. जिनके नाम रह गये हैं वे बजट पर बोलेंगे.

श्री राम निवास रावत—माननीय अध्यक्ष महोदय, आपसे अनुरोध है...

अध्यक्ष महोदय—नहीं अब नहीं, जिनके नाम रह गये हैं वे बजट पर बोलेंगे. माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी बोलेंगे, बाकी बजट में अवसर आएगा, उस समय अपनी बात रखेंगे.

(XXX) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया

डॉ.मोहन यादव—माननीय अध्यक्ष जी आपसे विनम्र अनुरोध है. हमारी सबकी बात भी आनी चाहिए. यह बहुत गलत बात है अध्यक्ष जी आप इनकी बात लगातार सुन रहे हो, हम लोगों को नजरअंदाज कर रहे हैं. मेरा विनम्र निवेदन है..(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप सुन लें, कृपा करके बैठें.

डॉ.मोहन यादव—अध्यक्ष जी हम लोगों को भी मौका मिलना चाहिए. सिर्फ विपक्ष के लोग ही बोल रहे हैं. हम लोगों को भी मौका मिलना चाहिए. यह गलत बात है. (व्यवधान)

श्री जीतू पटवारी—अध्यक्ष महोदय, यह अध्यक्ष जी से बात करने का तरीका नहीं है? इनको बाहर किया जाय. (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—दो दो मिनट में सब अपनी बात पूरी कर लेंगे.

अध्यक्ष महोदय—आप सब लोग बैठ जाएं. बहुत टाईम हो गया है. 11 बजे से यह शुरू हो चुका है, मेरा आपसे अनुरोध है कि दो मिनट में नहीं मानते हैं, वह सत्तापक्ष के सदस्य नहीं मान रहे हैं. कृपा करके बैठ जाएं.

डॉ.मोहन यादव—हम लोगों को भी बोलने का अवसर दिया जाय. (डॉ.मोहन यादव व्यवधान के बीच बोलते रहे)

अध्यक्ष महोदय—डॉ. मोहन यादव कृपया बैठ जाएं. आप कृपया बैठ जाएं. आपकी बात मैंने सुन ली.

डॉ.मोहन यादव—यह गलत व्यवहार करते रहें तो कुछ भी दूसरा बोले तो सुनने को तैयार नहीं. जरा अपने व्यवहार को देखो दिन भर से सुन रहे हैं हम लोग तो बोलने के लिए तरस रहे हैं. मौका नहीं दिया जा रहा है, भेदभाव किया जा रहा है. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—डॉ.मोहन यादव कृपा करके बैठ जाएं. यह बात ठीक नहीं है आपकी. यह बात आप ठीक नहीं कर रहे हैं. आप बैठ जाईये. डॉ. मोहन यादव जी ने बार बार यह आक्षेप लगाया. 10 सदस्य विपक्ष के बोले हैं और 8 सत्तापक्ष के तो कोई भेदभाव किसी के साथ नहीं किया जा रहा है. आप सुन लीजिए. आप ऐसा आरोप बिलकुल मत लगाईये. मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि अब बहुत समय हो चुका है. सामान्यतया आप नियम पढ़ लें, दो घंटे का समय स्थगन प्रस्ताव के लिए नियत रहता है. अभी 11 बजे से 1 बजे तक दो घंटे और ढाई बजे से साढ़े चार बज गए हैं और अभी माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय मुख्यमंत्री जी का वक्तव्य रह गया है. इसके पहले बी.एस.पी. के माननीय सदस्य ने कहा है, उनको मैं दो मिनट के लिए समय देता हूं, उसके बाद प्रतिपक्ष के नेता जी बोलेंगे. आपके नेता जी खड़े हैं, आप लोग बैठ जाएं.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, एक निवेदन है, आपने जो बताया नियम में बिलकुल वह सही है और दो घंटे बाद स्थगन प्रस्ताव स्वतः समाप्त हो जाता है. यह सच है, लेकिन जिन सदस्यों ने स्थगन प्रस्ताव दिया हुए हैं, आपकी कृपा हो जाएगी तो मैं यह अनुरोध करेंगे कि एक एक मिनट में वह अपनी बात पूरी कर लें.

अध्यक्ष महोदय—कोई भी सदस्य एक मिनट में अपनी बात समाप्त नहीं करता है. यह आपको भी मालूम है.

श्री सत्यदेव कटारे—कर देंगे, नहीं तो आप रोक देना.

अध्यक्ष महोदय—फिर माननीय सदस्य व्यवधान पैदा करते हैं, आपसे विनम्र अनुरोध है कि चर्चा को सार्थक होने दें और चर्चा सार्थक तभी होगी, जब प्रतिपक्ष के नेता जी और मुख्यमंत्री जी अपना समय लेकर बोल सकेंगे. मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि चर्चा को अगर सार्थक होने देना चाहते हैं तो आप होने दें. सत्यप्रकाश सखवार जी एक मिनट के लिए बोलेंगे. अब मैं किसी को मौका नहीं दूंगा. सत्यप्रकाश सखवार चूंकि बी.एस.पी. के सदस्य हैं इसलिए आप संक्षेप में अपनी बात दो मिनट में समाप्त कर लें.

श्री सत्यप्रकाश सखवार(अम्बाह)—माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे सदन में बोलने का मौका दिया. माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सम्मानीय मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि यह व्यापमं घोटाला पूरे देश में छाया हुआ है और सरकार के मंत्री इसमें फंसे हैं. मैं तो कहता हूँ कि पूरी सरकार कटघरे में है. यदि सच्चाई की परीक्षा करनी है तो सीबीआई से जांच कराना चाहिए,ऐसा मेरा कहना है.सम्मानीय अध्यक्ष महोदय, मैं इतनी ही बात कहना चाहता हूँ कि सीबीआई से इसकी जांच हो. अगर यह सरकार सच्ची परीक्षा से गुजरना चाहती है तो फिर सीबीआई जांच से क्यों बचना चाहती है इसलिए इसकी सीबीआई से जांच करायें. धन्यवाद.

श्री रामनिवास रावत—माननीय अध्यक्ष महोदय, दो दो मिनट अगर माननीय सदस्यों को दे दें तो बड़ी कृपा होगी.नये नये सदस्य हैं.

अध्यक्ष महोदय-- आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप सहयोग करें. सदन के संचालन में सभी माननीय सदस्यों का सहयोग अपेक्षित है. समय की अपनी मर्यादाएँ हैं. विषय की अपनी सीमाएँ हैं. आपसे विनम्र अनुरोध है कि अब इस विषय की चर्चा को समापन की की ओर जाने दें और माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी और माननीय सदन के नेता जी बोलेंगे.इसके बाद बात समाप्त करें.मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि जिन जिन माननीय सदस्यों के इसमें नाम रह गए हैं उन सब को बजट पर चर्चा में समय दूंगा.

श्री अनिल फिरोजिया(तराना)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका संरक्षण चाहिए, मेरा आपसे एक निवेदन है कि इतने सीनियर लीडर होकर के इतना समय दिया, हम लोगों के लिए आपने प्रबोधन कार्यक्रम किया , प्रशिक्षण वर्ग लगाया. हम लोगों को बोलने का मौका तो दें.

अध्यक्ष महोदय-- आपको बजट में समय देंगे.

नेता प्रतिपक्ष (श्री सत्यदेव कटारे)-- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले तो आपको इस बात के लिए धन्यवाद दूंगा कि आपने इस प्रदेश के ज्वलंत विषय पर जिसमें एक करोड़ से अधिक नौजवान प्रभावित हुए , कई लाख परिवार प्रभावित हुए उस पर चर्चा के लिए आपने पूरा दिन निर्धारित किया. जिस तरह से भी किया पर आपने समय निर्धारित किया उसके लिए पूरा प्रतिपक्ष आपका आभारी है. अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी को भी धन्यवाद देंगे कि उन्होंने चर्चा को स्वीकृत करने में अपनी सहमति दी. यह जो व्यावसायिक परीक्षा मण्डल का जिसको घोटाले का नाम देंगे, कुछ भी कहेंगे, अब हम तो यह नहीं कहेंगे कि घोटाला कहां से शुरु हुआ, कहीं से भी शुरु हुआ हो, घोटाला हो गया लेकिन अगर आपको याददाश्त करानी हो तो मैं एक चीज बता सकता हूँ कि आपकी ही पार्टी की नेता पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती जी जब भोपाल आयीं थीं, तब उनके ही शब्द थे कि व्यापमं घोटाला चारा घोटाले से भी बड़ा घोटाला है और उसके बाद यह व्यापमं घोटाला शुरु हुआ. उन्होंने सीबीआई जांच की भी मांग की थी. अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्यमंत्री जी से पिन प्वाइंटेड एक प्रश्न यह करना चाहता हूँ और उसके बाद अपनी बात शुरु करुंगा, मैं बैठ जाऊंगा. मुख्यमंत्री जी, आप सिर्फ यह बता दीजिए, इस घटना की, जिसको व्यावसायिक परीक्षा मण्डल घोटाले के नाम से जानते हैं, गड़बड़ी हो रही है इसकी प्रथम सूचना आपके संज्ञान में कब आई, कौन से महीने में आई? दिनांक मत बताओ. प्लीज इतना बता दीजिए. (व्यवधान)

श्री गोपाल भार्गव—यह कोई प्रश्नोत्तरकाल नहीं है.

अध्यक्ष महोदय—वे जो कह रहे हैं उनको कहने दें. अभी उसका उत्तर कोई जरुरी नहीं है.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, मेरी एक प्रार्थना और है क्योंकि बहुत सारे वकील हैं, बहुत दिनों से तैयारी कर रहे हैं और ये सब बीच बीच में खड़े होंगे तो फिर आप देख लें, हमें कोई दिक्कत नहीं है.

श्री गोपाल भार्गव-- ऐसे ही नहीं वकालत हो जाती, आपसे बहुत सीनियर हैं. सीनियर एड्व्होकेट हैं सुप्रीम कोर्ट वाले.

श्री सत्यदेव कटारे—कौन?

श्री गोपाल भार्गव-- हम लोग (हंसी)

श्री सत्यदेव कटारे—मुख्यमंत्री जी, हम आपसे निवेदन करेंगे कि आप इतने सीनियर एडव्होकेट के होते हुए उन पुष्पेन्द्र कौरव को लगा रखा है ,इनको हाईकोर्ट में ले जाकर के खड़ा करो न, इनको यहां क्यों बैठाल रखा है ?

श्री गोपाल भार्गव-- अच्छा कटारे जी, मेरी और आपकी हाईकोर्ट में दोनों लोग चलो, वहीं दूध का दूध पानी का पानी कर देंगे.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, अब यह क्या कर रहे हैं . आप यदि हमें संरक्षण नहीं देंगे तो हम बैठ जाएंगे.

अध्यक्ष महोदय-- आप बोलिये.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, फिर इसको तो आपको रोकना पड़ेगा.

अध्यक्ष महोदय—कृपा करके आप बैठ जाएं.यह बात उचित नहीं है.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, पहला तो हमारा सवाल मुख्यमंत्री जी से यह है कि मुख्यमंत्री जी कृपा करके यह बतायें ,जब भी भाषण दें तब बता दें,अभी बताने में आपको दिक्कत हो रही है, आपकी सरकार पूरी मना कर रही है कि अभी मत बताओ गजब हो

जाएगा. बताओगे तो वही जो आपको पता है तो बाद में बताओगे तो अभी बता दे और ऐसे कोई आप और आप ऐसे कोई बुरे आदमी भी नहीं हैं, बड़े भले आदमी हो,अभी बता दों. मैं दो मिनट बैठकर सुन लेता हूं.

अध्यक्ष महोदय--- आप विषय पर आ जाएं, आगे बढ़े.

श्री सत्यदेव कटारे--- बोल तो मैं विषय़ पर ही रहा हूं. अध्यक्ष महोदय, डीजीपी, चीफ सेक्रेटरी जो प्रशासन को हेड करते हैं, अपने अपने डिपार्टमेंट में, उऩके अंतर्गत एजेंसी रहती हैं, काम करती हैं. इंटेलीजेंस ने आपको बताया होगा ,पहली सूचना कब मिली, एक तो यह आप बता देना. अब जब आप बतायें तो तारीख और बताना. अध्यक्ष महोदय, मेरा पहला सवाल यह है कि एसटीएफ जो जांच कर रही है, एक अपराध क्रमांक 12/13,14/13, एफआईआर नंबर बता रहा हूं, 15/13, 16/13, 17/13, 18/13 , 19/13 , 20/13 और 21/13. इन एफआईआर में एसटीएफ जांच कर रही है. अध्यक्ष महोदय, अभी सरकार के एक मंत्री ने अपना वक्तव्य दिया था तब उन्होंने उल्लेख किया था कि मुख्यमंत्री के संज्ञान में इन्दौर से यह घटना आई. इन्दौर में कुछ परीक्षार्थी पकड़े गये और वहाँ पहली एफआईआर दर्ज हुई और उसके बाद यह केस बढ़ा औऱ उन्होंने जो सन् उल्लेख किया था वह सन् था 2013. बिल्कुल सही बात है . इस घटना में 2013 में इन्दौर में छात्र पकड़े गये थे और उसके बाद डॉ. सागर पकड़े गये और उसके बाद यह स्कैंडल खुलना शुरु हुआ लेकिन अध्यक्ष महोदय, हमने सदन के पटल पर भी रखा दिया है . मैं एक और एफआईआऱ का उल्लेख करना चाहता हूं , दिनाँक है 5 जुलाई 2009 और एफआईआर कर्ता हैं श्री नितिन महिन्द्रा पुत्र जे के महिन्द्रा और यह वह सज्जन हैं, जो आज जेल में बंद हैं औऱ उन्होंने व्यापमं के अंदर हुई गड़बड़ियों के लिए एफआईआर करवाई. एफआईआर जो रजिस्टर्ड हुई थी वह धारा 419, 420 के अंतर्गत हुई थी.अध्यक्ष महोदय, एक सवाल यह उठता है कि जब एसटीएफ निष्पक्ष जांच कर रही है तो यह एफआईआर और यह प्रकरण एसटीएफ की जांच में क्यों नहीं हैं और अगर यह जांच में नहीं हैं तो वह कौनसी निष्पक्षता है यह मुख्यमंत्री जी प्रतिपादित कर दें या सदन के लोग अपने जेहन पर हाथ रखकर पूछ लें. अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी और हम और गोपाल भार्गव जी, राजनीति में लगभग समकालीन हैं, हमें सीनियरिटी या जूनियरिटी के झगड़े से कोई फायदा नहीं है. गोपाल भार्गव जी मुझसे 15 साल सीनियर हो सकते हैं, हमें

कोई दिक्कत नहीं है. पर मुझे इतना ज्ञान है कि 1985 में पहली बार एमएलए बनकर वह भी आए थे और मैं भी आया था और लायब्रेरी में पूरा रिकार्ड रखा है. मुख्यमंत्री जी, एक बात पूछना चाहता हूं कि जब हम राजनीति में आए थे तो ये ही सपना लेकर आए थे , यही सपना था , आपका भी यही सपना था. क्या हम इसलिए राजनीति में आये थे.यह प्रदेश को कहाँ पहुंचा दिया है हमने? भोपाल में एक डॉ. जो वह सफेद कोट पहनता है जिसको एप्रन कहते हैं , उसके पीछे उसने काला पेंट करवाया है और लिखा हुआ है , मैं व्यापमं से पास किया हुआ डॉक्टर नहीं हूं. अखबार में छपा है. अध्यक्ष महोदय, उसको कितना ह्यूमीलेशन होता होगा कि उसको बेचारे को यह लिखकर चलना पड़ रहा है, यह बताना पड़ रहा है कि मैं व्यापमं से पास हुआ डॉक्टर नहीं हूं. हमें लोग वैसा ना समझे. यह हमारे प्रदेश की छवि बन रही है, इसी के लिए हम राजनीति में आए थे. आप बड़े गर्व से बोलते हैं कि प्रदेश की लड़कियाँ आपकी भाँजी हैं, लड़के भाँजे हैं, बहनें हैं. मुख्यमंत्री जी, वह बहनें आज आपके बारे में क्या सोच रही होंगी , जिनके लड़के धोखा देकर के व्यापमं से फेल कर दिये गये. जिनकी लड़कियाँ व्यापमं में तीन-तीन बार परीक्षायें दे चुकी और पास नहीं हो पाई क्योंकि उनको ना कोई नितिन महिन्द्रा मिला , ना कोई ओ पी शुक्ला मिला, ना कोई लक्ष्मीकांत शर्मा मिला और ना आप मिल पाये उनके मामा. अध्यक्ष महोदय, एक बात और उठाई गई थी यहाँ कि इसमें मुख्यमंत्री कहाँ से दोषी हो जाएंगे. मुख्यमंत्री जी दोषी कहाँ से हो जाएंगे यह बात भी सही है. अध्यक्ष महोदय, 2009 में पहली एफआईआर हुई थी. एक और एफआईआर हुई है, जो आज मेरे हाथ में नहीं है उसका उल्लेख इसलिए नहीं कर रहा हूं. पर स्मरण कराने के लिए कर रहा हूं. शाहपुरा थाने में सन् 2006 में एक एफआईआर हुई थी , तब भी आप मुख्यमंत्री थे, तब भी एमबीबीएस में एडमीशन में हुए घोटाले से संबंधित एफआईआर हुई थी. वहाँ भी कुछ दलाल पकड़े गये थे . अध्यक्ष महोदय, यह प्रकरण बहुत दिनों से चल रहा था और इसने घोटाले का रूप तो बहुत बाद में लिया , जब इसका ब्लास्ट हो गया. उसके पहले धीरे-धीरे चलता जा रहा था और जिसको इसकी भनक लगी वह इसमें शामिल हो जाता था. जिसको भनक लगी वही शामिल हो जाता था. अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी चिकित्सा शिक्षा विभाग के मंत्री भी थे. जब जब सदन में सवाल पूछे गए मुख्यमंत्री जी ने इन्कार कर दिया. हमने वह दस्तावेज पटल पर रखे हैं इसलिए हम उनकी तारीख का उल्लेख करेंगे. उनके साथ हमने

विधान सभा के प्रश्न और उत्तर और विभाग द्वारा जारी किए गए आदेश, वह भी रखे हैं. आप कहें तो फिर पढ़ कर सुना दूंगा. समय तीन घंटे लगेगा. आप सहमत हैं?

अध्यक्ष महोदय-- नहीं, आप पढ़ कर मत सुनाइये, बस रिफ्रेंस दे दीजिए.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, विधान सभा में दिनाँक 31 मार्च 2011 को मुख्यमंत्री जी द्वारा बताया गया कि फर्जी अभ्यार्थी की पहचान नहीं की गई. जबकि फर्जी अभ्यार्थियों की पहचान इसके पहले हो गई थी और किसी मेडिकल कॉलेज के अधिकारियों ने लिख करके जाँच के लिए ऊपर भेजा हुआ था. जबकि 9 छात्रों के विरुद्ध थाना महाराणा प्रताप नगर में, यही नितिन महेन्द्रा ने एफ आई आर करवाई थी जिसमें 9 छात्रों के नाम हैं. अध्यक्ष महोदय, एफ आई आर हो रही है जुलाई में और मुख्यमंत्री जी इन्कार कर रहे हैं 31 मार्च को. अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से 12 जुलाई को मुख्यमंत्री जी ने फिर इन्कार कर दिया. अध्यक्ष महोदय, विधान सभा में दिनाँक 29 नवंबर 2011 को मुख्यमंत्री जी ने जवाब में 114 फर्जी छात्रों को, लिस्ट प्रस्तुत कर भविष्य में फर्जीवाड़ा रोकने के लिए अभ्यार्थियों की बायो मैट्रिक्स थंब्स इंप्रेशन की व्यवस्था करने का आपने आश्वासन दिया था, उत्तर दिया था और यह प्रश्न था श्री पारस सखलेचा जी का. अब तक भी आपके ध्यान में नहीं आया था कि यह क्या हो रहा है. कैसे कह देंगे कि आपको पता नहीं था. हम यह नहीं कहते कि पर्ची आपके भी घर से आती थी. हम यह नहीं कहना चाहते पर पर्ची तो वहाँ जाती थी. अध्यक्ष महोदय, इसमें 4 तरह के लोग शामिल थे. एस टी एफ की जाँच बहुत अच्छी हो रही है. हम मान लेते हैं. एस टी एफ का जो अधिकारी हेड कर रहा है, सुधीर शाही, वह बहुत अच्छा ऑफिसर है, उसका कैरियर बहुत अच्छा है. उसका कैरियर आय बी, सी बी आई लायक है. लेकिन उसके नीचे जितना बैठा हुआ अमला है, वह क्या करेगा. अपनी अलमारी में कॉल डिटेल और सबको ताला डाल कर कब तक रखेगा? जब फोटो कॉपी करवाता है तो अलमारी का ताला खोलता है सामने देता है, फोटो कॉपी मेरे सामने करो, वापस रखो, तब जाना. इतनी सुरक्षा वह करना चाह रहा है. लेकिन काम कैसे हो. अध्यक्ष महोदय, इसमें 5 तरह के अपराधी हैं. पहले तो छात्र और छात्राएँ हैं, छात्र छात्राओं ने, उनके पालकों ने, पैसा दिया. उन्होंने यह सपना देखा था कि हमारे बच्चे के नंबर कम आए, उसे डॉक्टर बनाने के लिए सारे दरवाजे बंद हो गए हैं. एक ही खिड़की खुली है तो 20, 25, 50 लाख जो लग रहे हैं सो दो और एडमिशन करवाओ. लड़का डॉक्टर बन कर तो निकलेगा. जो और दरवाजे खुले होते तो कोई सत्यदेव कटारे को ढूंढता, कोई मुख्यमंत्री जी के पास पहुँचता, कोई गौर साहब के पास जाता. कोई और कहीं जाता. सारी खिड़कियाँ बन्द थीं, खिड़की एक ही खुली थी, सिंगल विंडो प्रणाली, भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा आएगी तो वे छात्र छात्राएँ, इनको अध्यक्ष महोदय, यह पनिशमेंट दिया जा सकता था जिसको हम एडमिनिस्ट्रेटिव पनिशमेंट कहते हैं कि जिस छात्र ने 25 लाख रुपये देकर एम बी बी एस में एडमिशन लिया. अगर हम उसका एडमिशन निरस्त कर दें. जो 1050 छात्रों के आप कर चुके हैं तो उसको डबल पनिशमेंट मिलता. एम बी बी एस से निकल गया और जो पैसा गया वह तो गया ही. हम कर यह रहे हैं कि छात्र और छात्राओं को पकड़ कर जेल में डाल रहे हैं. दूसरी श्रेणी के अपराधी दलाल हैं. जिन्होंने इनसे पैसा लिया कुछ रखा और ऊपर पहुँचाया. तीसरी श्रेणी के अपराधी अधिकारी हैं. जिनमें से कुछ पकड़ कर अन्दर पहुँचा दिए हैं और बड़े बड़े सरगना, बड़ी मछलियाँ अभी भी यहाँ से वल्लभ भवन तक बैठी हुई हैं. कोई ने अपना रिश्तेदार तो कोई ने अपना

कुछ सब ने करवाया है. इस गंगा में स्नान करने वाले लोगों की संख्या बहुत है और न करने वालों की संख्या बहुत कम है. अध्यक्ष महोदय, इसके बाद चौथी श्रेणी के अपराधी वे थे जो पर्ची भेजते थे और पर्ची पर नाम लिखते जाते थे और वहाँ एडमिशन हो जाता था. अध्यक्ष महोदय, ये पर्ची भेजने वाले संरक्षणदाता भी थे, जो आज भी संरक्षण दे रहे हैं. अध्यक्ष महोदय, पाँचवी श्रेणी के अपराधी वे थे जिन्होंने ये परीक्षाएँ व्यावसायिक परीक्षा मंडल से करवाने के प्रस्ताव दिए. जैसे एक छोटा उदाहरण बता रहा हूँ. शिक्षा कर्मी वर्ग दो की शिकायत करते करते एक व्यक्ति पी एच क्यू पहुँचा. उसने डी जी को शिकायत की. डी जी ने शिकायत, उसको लिखा, डी आई जी को फारवर्ड कर दिया. जिस दिनाँक को शिकायत हो रही है उसके तीन महीने के बाद पुलिस भर्ती भी व्यापम को दे दी गई. अध्यक्ष महोदय, एक और बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि डीजीपी का केरियर भी बहुत अच्छा रहा है लेकिन दी महीने बाद रिटायर होने वाले अधिकारी से आप सर्टिफिकेट ले रहे हो कि आप निर्दोष हैं, आर एस एस निर्दोष है, सीएम हाउस निर्दोष है. आगे जाकर पता लग जायेगा कि क्या होने वाला है और आप क्या कर रहे हो.

अध्यक्ष महोदय, जिन्होंने नियमों में बदलाव किया, जिन्होंने परीक्षायें व्यापम को प्रस्तावित कीं वे भी इसमें अपराधी हैं और बड़े मगरमच्छ और मछलियां यही हैं. एसटीएफ बहुत अच्छी जांच कर रही है पर पकड़ किसको रही है जिसको छोड़ देना चाहिये. जिस छात्र को हम एडमिनिस्ट्रेटिव पनिशमेंट देकर छोड़ सकते थे और उसको ऐसे सरगनाओं के खिलाफ गवाह बनाकर खड़ा कर सकते थे उसको हम पकड़ रहे हैं और पूरा अमला कह रहा है कि जांच निष्पक्ष हो रही है, हाईकोर्ट के निर्देशन में हो रही है हाईकोर्ट को तो जो आप भेजोगे वही देखेगा.

अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात यह है कि नियमों में बदलाव करके जो खेल वहां खेला जा रहा था. जब इसका भांडा फूटा तो फूटते फूटते अब इतना खुलता चला जा रहा है कि अभी पता चला है कि नीमच में दो लड़के पकड़े गये. हम पूछना यह चाहते हैं कि इन छात्र-छात्राओं ने जिनको पैसा दिया ऐसे कितने दलाल एसटीएफ ने पकड़े, कितने अधिकारी पकड़े जिनके पास पैसा पहुंचा, कितने नेता पकड़े जो पर्चियां देते थे और संरक्षणदाता बने हुए थे और उसके बाद जिन्होंने नियमों में बदलाव किया, जिन्होंने व्यापम को परीक्षायें प्रस्तावित कीं वह कितने लोग पकड़े, जब यह नहीं पकड़े हैं तो छात्रों को पकड़कर आप पारितोषिक चाहते हो कि आपको नोबल पुरस्कार मिल जाये. (XXX) (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—इसे कार्यवाही से निकाल दें.(व्यवधान) उसे कार्यवाही से निकाल दिया है.

श्री सत्यदेव कटारे—मुख्यमंत्री जी मुख्यमंत्री बनने के पहले सांसद भी थे, विधायक भी थे जब यह सासंद थे तब इनका प्रिय पात्र एक व्यक्ति हुआ करता था उसका नाम प्रेम प्रकाश या

(XXX) आदेशानुसार नोट नहीं किया गया.

प्रेम प्रसाद असली नाम क्या है यह इन्हें मालूम होगा अभी कहां है यह इनको जानकारी हो सकती है हमें नहीं मालूम कहां है . अध्यक्ष महोदय, यह आज भी इनका पीए था इस बहती गंगा में इसने भी डुबकी लगाई. जब तक पर्चियां भेजता रहा तब तक तो नहीं पकड़ा गया जैसे ही उसने अपनी लड़की का एडमीशन करवा लिया तो वह भी फंस गया. जिस एसटीएफ की निगरानी हाईकोर्ट कर रहा हो उस एसटीएफ को जब मुख्यमंत्रीजी साउथ अफ्रीका से आते हैं तो समीक्षा करने के लिये किस हैसियत से बुलाते हैं, आपको क्या अधिकार है जब हाईकोर्ट निगरानी कर रहा है तो वह हाईकोर्ट को रिपोर्ट करेगा आपको रिपोर्ट नहीं करेगा. आपने कैसे बुला लिया और यह उस अधिकारी के केरियर पर बहुत बड़ा धब्बा भी है कि जो हाईकोर्ट की निगरानी में जांच कर रहा है वह आपको रिपोर्ट देने चला कैसे गया. यही नहीं होता है उसको फटकार लगाई जाती है कि गिरफ्तारी करने का यह तरीका ठीक नहीं है और डीजीपी साहब फरमान जारी करते हैं कि एसटीएफ को सहयोग करो, जल्दी गिरफ्तारी होनी चाहिये और 24 घंटे में मध्यप्रदेश भर से 300-400 लड़के लड़कियां पकड़े जाते हैं और रातोंरात उठाकर लाये जाते हैं चारो तरफ चीत्कार मच जाती है और तीन दिन बाद मुख्यमंत्रीजी फिर प्रकट होते हैं और कहते हैं यह ठीक नहीं है. हमें पता लगा कि कुछ लड़कियां यहां महिला थाने में चार दिन से बंद हैं जब हम वहां पहुंचे हमारे पहुंचने की खबर मिली मिलते ही उन सब को ले जाकर न्यायालय में पेश कर दिया. चलो अच्छा है जब कर दिया तब कर दिया हमारे जाने से उनका भला ही हो गया तो अच्छी बात है.

अध्यक्ष महोदय, सवाल यह नहीं है, सवाल यह है कि एसटीएफ की जांच निष्पक्ष कैसे है जब समीक्षा आप कर रहे हैं, आरोप आप पर है आपके साथियों पर है तो आप जिसकी समीक्षा कर रहे हैं वह कैसे आपके खिलाफ सबूत इकट्ठा करेगा उसे रिपोर्ट तो हाईकोर्ट को करना चाहिये.

अध्यक्ष महोदय,सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में किसी केस की जांच हो रही थी एसआईटी बनी थी, भारत सरकार के कानून मंत्री ने, जो जबाव सीबीआई सुप्रीम कोर्ट में प्रस्तुत करने वाली थी सिर्फ उन्होंने उस जवाब को बुलाकर पढ़ लिया, करेक्शन भी नहीं किया, उतने के आधार पर ही अश्विनी कुमार को

इस्तीफा देना पड़ा. मुख्यमंत्रीजी अगर नैतिकता है तो अश्विनी कुमार का अनुसरण करना चाहिये नहीं है तो आप बहुत भले आदमी हैं अध्यक्ष महोदय, अभी रशीद मसूद का भी नाम आया। उनको एक लड़के कि सिफारिश के पीछे इस्तीफा देना पड़ा और जेल जाना पड़ा।आपकी पार्टी के सांसद श्री सत्यनारायण जटिया जी हैं उनके ऊपर एक लड़के की सिफारिश के ऊपर सी.बी.आई ने केवल केस दर्ज कर लिया था बल्कि उनके घर पर छापा भी पड़ गया था और राजनीति के धुरंदर चौटाला जी ने सौ – दौ-सौ लोगों की सिफारिश कर दी तो उन्हें तो जेल ही जाना पड़ा।

अध्यक्ष महोदय, मेरा मुख्यमंत्री जी से अनुरोध है कि जिन एक हजार लोगों की फर्जी नियुक्ति आपने व्यापम के माध्यम से विधान सभा के पिछले सत्र में कबूल की थी, आप आज ही जवाब दे रहे हैं तो वे छात्र कौन हैं जिन्होंने फर्जी तरीके से नौकरी पायी, वे कहां पदस्थ रहे, आज कहां है, उनकी सिफारिश किन्होंने की और कितने पैसे लेकर नियुक्त हुए। आज तक शुरू से लेकर अभी तक इसमें इतना खेल होता रहा की आंकलन लगाना मुश्किल है। एस.टी.एफ में पैसे कि नियुक्ति कहीं नहीं मिल रही है। केस इसलिये हो रहा है कि अब यह खुल गया है, इसमें आगे पीछे ऐसी लीपापोती हो जायेगी कि छात्रों को 6-6 महीने की सजा हो जायेगी और बड़े-बड़े सब बच जायेगें और खेल खत्म हो जायेगा। एक बात और पूछ रहा हूं कि आर.टी.ओ में सिपाहियों की भर्ती भी व्यापक के माध्यम से हुई थी, उसको लेकर भी विभिन्न प्रकार के आरोप लगते रहे हमारे दल से भी कुछ बात कही गयी है। हम मुख्यमंत्री जी से एक बात करते हैं कि वह कृपा करके आपके पास सरकारी अमला है और उनका पूरा रिकार्ड आपके पास है। पुलिस के इंटेलीजेंस विभाग ने या जनरल पुलिस ने इनका एड्रेस कंफर्म किया होगा, हम आपसे दो चीज चाहते हैं कि जो पुलिस ने एड्रेस वेरीफेशन किया होगा, हम आपसे दो चीज चाहते हैं कि पुलिस ने जो एड्रेस वेरीफेशन किया 316 आर.टी.ओ. कांसटेबल हैं उनका और उनकी दसवीं और बारहवीं की मार्कशीट आप सदन के पटल पर रख दें, बस इतना ही मुख्यमंत्री से प्रार्थना है। अध्यक्ष महोदय, जांच सीबीआई को क्यों दी जाये यह मैंने अभी बताया, दूसरा निवेदन यह है कि एस.टी.एफ से 10 अक्टूबर, 2013 को हाई कोर्ट में शपथ पत्र प्रस्तुत किया इसकी हमारे पास है, कोई पूछे की आपके पास कहां से आयी, हमारे पास सूचना के अधिकार के तहत आयी है। आप चाहें तो इसकी एक कापी सदन के पटल पर रख दूं।

अध्यक्ष महोदय:- उसकी प्रक्रियाएं हैं उसके तहत आने दो।

श्री सत्यदेव कटारे:- अध्यक्ष महोदय, उसकी चिट्ठी में लिख चुका हूं। इस शपथ पत्र के पैरा 7 में एस.टी.एफ ने हाई कोर्ट को जो बताया, हाई कोर्ट ने कुछ फटकार लगायी होगी अब इनको कुछ समय लेना था तो टाईम लेने के लिये क्या करें , सच बोलना नहीं था तो क्या बोलें, उन्होंने अर्धसत्य बोल दिया, उन्होंने लिखा कि i say that at present the investigation is going on and as it deals with many students who are scattered in all part of MP, UP, Rajasthan ,Bihar etc., अध्यक्ष महोदय यह लिखकर एसटीएफ टाईम मांग रही है, येराज्य हैं, अतिरिक्त भी राज्य हो सकते हैं, इतने राज्यों के परीक्षार्थी शामिल हैं इसलिये हमें जांच करने में समय लगेगा, कृपया समय दिया जाये । हम मुख्यमंत्री जी से एक बात पूछना चाहते हैं कि आपकी पुलिस तो मध्यप्रदेश की है, उसकी सीमाएं तो मध्यप्रदेश में हैं यह इतने राज्यों में जाकर जांच कैसे कर लेगी। जब इतने राज्यों का इन्वाल्वमेंट हाईकोर्ट में स्वीकार कर रही है, तो आप जैसे ईमानदार आदमी को निष्पक्ष आदमी को यह जांच सीबीआई को देने में तकलीफ क्यों हो रही है या तो आपकी ईमानदारी पर शक है। अध्यक्ष महोदय मैं बिल्कुल साफ कह रहा हूं जब मैंने पहले दिन भी भाषण दिया था तब भी मुख्यमंत्री जी से बोला था कि इस अपराध के आरोपी सिर्फ केवल आप हैं, आज फिर कह रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं आज फिर कह रहा हूं कि अगर आप निष्पक्ष हैं , ईमानदार हैं, आपका दामन काला नहीं है,आपके बंगले पर बैठने वाले अधिकारियों के दामन पर दाग नहीं है तो आप जांच सीबीआई को दें। आज आपका सीबीआई का तोता आपके कब्जे में है हमें कोई डर नहीं है। हमें कोई डर नहीं है. हमारे लिये सी.बी.आई. तब भी ईमानदार थी आज भी ईमानदार हैं. अगर मेरी बात मानें तो सुप्रीम कोर्ट से रिक्वेस्ट करें. एस.आई.टी. बने सुप्रीम कोर्ट के सुपरवीजन में तो मेरी पहली मांग तो यह है लेकिन हम बीच में समझौता कर लेते हैं. सी.बी.आई. से जांच करवाने की बात पर तैयार हो जाते हैं. नहीं करेंगे तो आप मत करिये. ईमानदार हैं तो दे देंगे नहीं तो पता लग जायेगा दामन में क्या है. अध्यक्ष महोदय, इसमें बहुत सी चीजें थीं अब इसमें एक ही एफ़ीडेविट का उल्लेख करके मैं छोड़ रहा हूं नहीं तो बहुत टाईम लगेगा. अध्यक्ष महोदय, हमने मुख्यमंत्री जी को चिट्ठी लिखी थी और हमने कई बार जानकारी मांगी थी. मुख्यमंत्री जी को हमने 28.1.2014 को चिट्ठी लिखी.एक बात और यहां उल्लेख करना चाहेंगे कि मुख्यमंत्री जी इतने महान व्यक्ति हैं कि वे नेता प्रतिपक्ष के पत्रों का जवाब देना ही उचित नहीं समझते. क्योंकि उनको साईन बहुत

करने पड़ते होंगे कैसे साईन करेंगे. कहां तक करेंगे. आज दिन तक नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह जी रहे पहले उनके पत्रों का जवाब नहीं दिया और हमारे पत्रों का जवाब भी नहीं दिया और जब किसी सदस्य ने विधान सभा में सवाल लगाया तो सवाल यहां से अग्राह्य हो गया.

(5.00 बजे) **सदन के समय में वृद्धि**

अध्यक्ष महोदय – स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा पूर्ण होने तक सदन के समय में वृद्धि की जाए. मैं समझता हूं सदन इससे सहमत है.

सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई.

श्री सत्यदेव कटारे – अध्यक्ष महोदय, व्यापम के माध्यम से पी.एम.टी. होती है. पी.एम.टी. परीक्षा में जो लड़के पास हो जाते हैं वह एम.बी.बी.एस. पढ़ने जाते हैं डाक्टर बनने जाते हैं. पी.एम.टी. और एडमीशन के बीच में काउंसलिंग होती है. डी.एम.ई. काउंसलिग करता है या जो भी अधिकारी करते हों काउंसलिंग होती है. काउंसलिंग के बाद सीटों का अलाटमेंट होता है. मध्यप्रदेश में प्रायवेट मेडिकल कालेज भी हैं सरकारी मेडिकल कालेज भी हैं. एडमीशन होने के बाद डी.एम.ई. जो सूची जिस कालेज को भेजेगा उस कालेज में वह विद्यार्थी पढ़ेगा. हमने सिर्फ एक सूचना मांगी थी डी.एम.ई. से. इसके लिये हम थोड़ा पत्रों का उल्लेख करना चाहेंगे. हमने डी.एम.ई. को पत्र लिखा था 12 जनवरी,2014 को उसका जवाब हमें नहीं मिला उसके बाद हमने दूसरा पत्र मुख्यमंत्री जी को लिखा 28 जनवरी,2014 को फिर हमने मुख्य सचिव को पत्र लिखा 28 जनवरी,2014 को भी लिखा फिर 17 फरवरी,2014 को भी लिखा. उसके बाद भी जवाब नहीं मिला फिर मैंने मुख्य सचिव को डी.ओ. लेटर लिखा 20 मई,2014 को. इसके बीच में मैंने मुख्य सचिव को पत्र लिखा 24.3.2014 उसके बाद हमने 12 जून,13 जून को फिर मुख्य सचिव को चिट्ठी लिखी कि हम सूची चाह रहे हैं कि जो मध्यप्रदेश के प्रायवेट मेडिकल कालेज हैं उन मेडिकल कालेजों में डी.एम.ई. ने काउंसलिंग करके जिन छात्रों का एडमीशन करवाने की लिस्ट दी थी वह लिस्ट हमको अवगत करा दें. डी.एम.ई. की लिस्ट क्या नष्ट हो गई क्या. वह लिस्ट भी नहीं दे पा रहे हैं. कम्प्यूटर का एक बटन दबाओगे लिस्ट निकलकर बाहर आ जाएगी. अब अध्यक्ष महोदय, इसमें कैसे घोटाला होता है वह बताना चाहता हूं. प्रायवेट मेडिकल कालेजों को 63 सीटें सरकारी कोटे से अलाट होती है. यह लोग व्यवस्था यह करते हैं कि दूसरे

कालेजों के थर्ड ईयर, फोर्थ ईयर, सेकंड ईयर के स्टूडेंट्स को पी.एम.टी. में बैठाकर अपने यहां एडमीशन करवा देते हैं. चूंकि वह सेकंड थर्ड ईयर के स्टूडेंट हैं तो नेचुरल है उनका नालेज फर्स्ट ईयर में बैठने वाले स्टूडेंट्स से ज्यादा होगा. वह उनके कालेज में एडमीशन ले लेंगे. चूंकि रैंकिंग उनकी ज्यादा होगी तो एडमीशन उनकी च्वाईस से हो जाएगा. वह वहां एडमीशन लेकर सीट एंगेज कर लेंगे. अब 63 सीटें उस कालेज को मिलना है सरकारी कोटे से. डी.एम.ई. जो लिस्ट भेजता है चूंकि उनकी 63 में से 50 सीटें आलरेडी भर जाती है उसके बाद जैसे ही कटआफ डेट निकलती है आलमोस्ट सभी मेडिकल कालेज उसमें से 50,45,60 इतने स्टूडेंट्स विथड्रा हो जाते हैं. चूंकि उन्हें पढ़ना ही नहीं है, वह तो सीट एंगेज करने भर के लिये आए थे. और फिर जो सीटें खाली होती हैं उसमें सरकार का कोई दखल नहीं रहता. उसमें डी.एम.ई. कोई दखल देता नहीं है. चूंकि डी.एम.ई. और जो सराऊंडिंग आफीसर्स हैं उनकी भी मिलावट हो जाती है और फिर वह अपने मनमाने तरीके से भर्ती करते हैं और उसमें एक घोटाला और हो जाता है. अध्यक्ष महोदय, 6 महिने हो गये आज यह चिट्ठी हमारे पास आई है 30 जून,2014 को. संचालक, चिकित्सा शिक्षा की. इस चिट्ठी के थोड़े कंटेंट्स पढ़कर सुना रहा हूं. अध्यक्ष महोदय, इस संबंध में निजी चिकित्सा महाविद्यालयों को प्रवेशित/अध्ययनरत् छात्रों की सूची भेजे जाने हेतु समय-समय पर लेख किया गया है किन्तु जानकारी अप्राप्त है. इस संबंध में पुनः ए.एफ.आई.आर.सी. विश्वविद्यालय, निजी चिकित्सा महाविद्यालयों, ए.पी.डी.एम.सी. को भी लेख किया गया है अंतिम पैराग्राफ में लिख रहे हैं कि निजी चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रवेशित छात्रों की सूची उपलब्ध कराने के लिये दंडित करने हेतु माननीय सर्वोच्च न्यायालय में भी आई.ए.दायर की गई है. अध्यक्ष महोदय यह सरकार किस काम की है छः महीने में उसके यहां पर पढ़ रहे छात्रों की सूची नेता प्रतिपक्ष नहीं दे पा रही है अगर साधारण सदस्य मांगे तो कैसे मिलेगी आप यह जानकारी नहीं कर पा रहे हैं कि इस कालेज में जो डीएमई ने भेजा है वही पढ़ रहा है कि कोई और पढ़ रहा है हम जब चिट्ठी लिख रहे हैं, आप उसको रद्दी की टोकरी में डाल रहे हो. आपने चिट्ठी मे कागनीजेंस लिया होता मुख्यमंत्री जी तो इसका जवाब हमारे पास 30 दिन के अंदर आ गया होता. अब इसमें एक सवाल और है इसमें यह जानकारी देना जब आप खड़े हों तब कि इन्होंने सुप्रीम कोर्ट में आई.ए. दायर कब की है और मैं इस आई.ए.की कॉपी चाहता हूं उसमें कन्टेन्ट्स ऑफ आई.ए.क्या हैं, कॉलेजों को

बचाने वाला कन्टेन्ट्स हैं या उन पर कार्यवाही करने वाले कन्टेन्ट्स है, तीसरा आपने उनको दंडित करने के लिये क्या कार्यवाही की है यह तीनों चीजें आप सदन के पटल पर रख देना हमको मिल जायेंगी. अध्यक्ष महोदय, एफ.आई.आर 12/13 जिसमें बहुचर्चित श्री प्रेम प्रसाद जी का उल्लेख है इसमें सवाल यह है कि जब मुख्यमंत्री जी ने एस.टी.एफ को डांट पिलाई दूसरे दिन प्रेम प्रसाद की अग्रिम जमानत हो गई. अगर वह केस जो एस.टी.एफ ने कोर्ट में प्रस्तुत किया उसको देखा जायेगा तो केस ही ऐसा बनाया था उसमें अग्रिम जमानत होनी ही थी वरना मुख्यमंत्री जी बतायें कि जो आपका सबसे प्रिय आदमी था वह (XXX) जेल में चला गया लक्ष्मीकांत शर्मा आपका अत्यधिक ओबिडियंट था, अजय मेहता वह भी जेल में चला गया इसमें ऐसे क्या पंख लगे थे और ऐसी क्या खास बात थी. इस व्यक्ति में सिवाय इसके कि जब आप सांसद थे, वह आपका पीए रहा.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—उस शब्द को विलोपित करा दें.

अध्यक्ष महोदय—इसको विलोपित कर दें.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय हम जो कह रहे हैं उसमें कोई असंसदीय कहा हो तो उस शब्द को निकाल दो कोई दखल देने वाला हो तो कहकर निकाल दो आप चोरी छिपे मित निकालो इशारा करके मत निकालो आप हमको बताईये हम उसको मंजूर करेंगे.

अध्यक्ष महोदय—बोलकर के निकाला है. विलोपित हो गया है बोल दिया है.

श्री सत्यदेव कटारे—कौन सा शब्द.

अध्यक्ष महोदय—बेचारा शब्द. किसी को भी बेचारा अथवा दयनीय नहीं बोलना चाहिये.

श्री सत्यदेव कटारे—ठीक है दयनीय नहीं बोलना चाहिये. अध्यक्ष महोदय, हम आपसे यह पूछ रहे हैं जो जेल में बंद हैं आपके प्रिय पात्र हैं तो हम सब लोग यह जानना चाहते हैं कि इस लड़के में ऐसी क्या बात थी कि उसकी अग्रिम जमानत हो गई बिल्कुल न्यायालय ने जमानत दी हम उसको मानते हैं जमानत तो न्यायालय ही देगा आप तो दे नहीं सकते हैं, पर क्या बात थी.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—अध्यक्ष महोदय मैं दो बातें कहना चाहता हूं.

डॉ.गोविन्द सिंह—ऊपर से एन.ओ.सी मिल गई होगी.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—विलोपित करने की बात कही थी.

श्री सत्यदेव कटारे—अभी मंत्री जी आपको बीच में बोलने की अनुमति नहीं दी.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—मैं अध्यक्ष महोदय जी से अनुमति ले रहा हूं. आपसे नहीं ले रहा हूं.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय हमें रोकेंगे तभी तो आप बोलेंगे. अगर आपको अनुमति देनी होगी तो मुझको बिठा देंगे.

अध्यक्ष महोदय—एक मिनट के लिये बैठ जाएं.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—अध्यक्ष महोदय, मैंने विलोपित होने वाली बात यह कही थी कि इन्होंने कहा कि एस.टी.एफ को मुख्यमंत्री जी ने फटकार दिलाई और दूसरे दिन न्यायालय से जमानत ले ली क्या न्यायालय को एस.टी.एफ को प्रभावित करती है यह सरकार से प्रभावित होते हैं यह न्यायालय की प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिन्ह नेता प्रतिपक्ष को नहीं लगाना चाहिये.

अध्यक्ष महोदय—यह उनके विवेक पर छोड़ना पड़ेगा.

डॉ.नरोत्तम मिश्रा—इसमें मेरा यही कहना है, बार बार न्यायालय का उल्लेख कर रहे हैं और दबाव डालने वाली बात कर रहे हैं यही मेरा निवेदन है.

अध्यक्ष महोदय—यह उनके विवेक पर है कि वह माननीय न्यायालय के बारे में क्या कहते हैं.

श्री रामनिवास रावत—अध्यक्ष महोदय, न्यायालय की व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह नहीं है.

अध्यक्ष महोदय—वह बात समाप्त हो गई है.

श्री रामनिवास रावत—अध्यक्ष महोदय, पुलिस प्रस्तुतिकरण करती है, पुलिस ही चालान व केस डायरी भेजती है जिस तरह से पुलिस प्रस्तुतिकरण करती है उसके उपरांत न्यायालय जमानत पर विचार करती है.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, हमने तो साफ शब्दों में कहा कि जब एस.टी.एफ आरोप पत्र ही इस तरह का प्रस्तुत करेगी तो अग्रिम जमानत तो कोई भी दे देगा. मैं न्यायालय को दोषारोपण नहीं कर रहा हूं आप विषयान्तर करने की कोशिश मत करिये.

इधर उधर की बात मत करो आप तो यह बता दीजिये कि प्रिय पात्र लक्ष्मीकांत शर्मा ओबीडियेंट अजय शंकर मेहता और आपके खास खास लोग बेचारे अंदर पड़े हैं. कोई दाड़ी रखा रहा है, कोई पूजा कर रहा है,

आपने बहुत अच्छा काम किया वित्त मंत्री जी, (व्यवधान)आपने घंटी पर जो कम कर दिया बहुत अच्छा काम किया भले आदमी हो आप. उनको जल्दी पहुंचवा दीजिये. अच्छा वह अंदर हैं इसमें क्या खासियत थी कि यह बाहर हो गया. अध्यक्ष महोदय, दूसरी यह फाइल है, इसका उल्लेख कर दें आपको डर लगने लगा है आज से ही बहुत ज्यादा.

अध्यक्ष महोदय--संक्षेप में जो कुछ बोलना हो बोल दीजिये.

श्री सत्यदेव कटारे-- एफ.आई.आर. क्रमांक है 15/13 और धारायें तो हैं ही लंबी चौड़ी 420, 467, 468,471, 120-B यह धारायें हैं अध्यक्ष महोदय. अब इसमें बयान जो आ रहे हैं और जो इसमें एफ.आई.आर. में उल्लेख भी आ रहा है उसको मैं बता रहा हूं. एस.टी.एफ. की जांच निष्पक्ष हो रही है श्री पंकज त्रिवेदी का बयान है और बयान लंबा है 4-5 पेज का, मैं बीच में थोड़े कंटेंट पढ़ता हूं जो काम के हैं. अध्यक्ष महोदय यह बयान का पैराग्राफ भी कौन से नंबर का होगा देख लूं . दूसरे नंबर का पैराग्राफ है, दूसरे नंबर के पैराग्राफ की यह करीब 10 वीं या 12 वीं लाइन होगी.मंत्री जी के काफी करीब हैं, मंत्री जी लक्ष्मीकांत शर्मा के ओ.एस.डी. ओ.पी.शुक्ला ने बोला था कि यह मंत्री जी के काफी करीबी हैं इसलिये इन लोगों से 3-3 लाख रूपये के हिसाब से कुल 15 लाख रूपये प्राप्त हुए जो आफिस खर्च के लिये स्वयं रख लिये हैं. चूंकि श्री ओ.पी.शुक्ला हमारे विभाग के मंत्री जी के ओ.एस.डी. थे इसलिये मैंने उनसे पैसे मांगना उचित नहीं समझा. मिहिर कुमार के लिये मंत्री जी के कार्यालय से कहा गया था कि यह बहुत खास आदमी हैं इनके अलावा मुझे नितिन महेन्द्रा ने बताया था कि इसी शीट में उल्लेखित 13 अभ्यार्थी और भी हैं. अध्यक्ष महोदय, और लोग आते हैं और लोगों के उल्लेख के साथ साथ पैसे लेने की बात आती है. अब सवाल एस.टी.एफ. की जांच पर यह उठता है अभी हमने एफ.आई.आर. का उल्लेख करके बताया धारायें पढ़कर बताईं, जब इस एफ.आई.आर. में इस बयान में पैसे की लेनदेन की बात आ रही है तो इसमें प्रिवेंशन आफ करप्शन एक्ट क्यों नहीं लगाया ? वैसे सभी में लगना चाहिये था हर किसी में वह है लेकिन जिस एफ.आई.आर. में जुड़ने वाले बयान में स्पष्ट उल्लेख है लिखा जा रहा है कि इनसे इतने पैसे लिये और वह पैसा लगा कहां यह भी बता दिया और नीचे उन लोगों के भी बताये हैं उसके बाद भी पी.सी.एक्ट नहीं लग रहा है यह जांच को संदेह के घेरे में नहीं ले जा रहा है तो कहां जा रहा है ? यह जांच निष्पक्ष हो रही है ?

आपको सी .बी.आई. देने में बड़ी हिचक लग रही है और इस जांच को आप निष्पक्ष कहेंगे ? आपका अमला तो बहुत बड़ा बैठा है तैयारी करवा दी है, काहे को चिन्ता कर रहे हैं मुख्यमंत्री जी ? (श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री जी की ओर इशारा करते हुए)

हमको तो अभी अमला ही पूरा नहीं आया है जो तैयारी करवा सके.

श्री शिवराज सिंह चौहान--आप तो बोलते जायें.

श्री सत्यदेव कटारे--तो बोल रहे हैं ना, आप चिन्ता क्यों कर रहे हो ? परंतु हां, आप उस दिन जैसा जवाब मत देना. अध्यक्ष महोदय, एस.टी.एफ.के यह बयान हैं श्री मिहिर कुमार का जिनकी नौकरी अवैध तरीके से लगी गलत तरीके से लगी और जो जेल भी गये और आजकल जमानत पर हैं, नौकरी में शायद हैं कि नहीं अभी पता नहीं है, सस्पेंड चल रहे होंगे या तो क्योंकि सस्पेंड करना भी आपके बस में नहीं है इनको लेकिन इन्होंने अपने बयान में बड़ा साफ कहा था जिनका नाम ना लिया है और ना हम लेना चाहते हैं क्योंकि दुनिया में भी नहीं हैं महान आदमी थे इसमें कोई दो मत नहीं है, त्याग भी किया था लेकिन अध्यक्ष महोदय, उन्होंने नहीं सोचा होगा कि उनके सेवक को भर्ती करने के लिये इस तरीके की व्यवस्था की जायेगी लेकिन इसमें (XXX) का नाम आया. नाम भी नहीं लिया, (XXX) बोलल रहा हूं , अभी मैं यह कौन है ? इनको पूछताछ क्यों नहीं हो रही है, इनको एस.टी.एफ. क्यों नहीं बुला रही है ? इनको बुलाये.

डा. नरोत्तम मिश्रा---अध्यक्ष महोदय, लगातार रिपीटेशन हो रहा है.यह विषय तथ्य पढ़े जा चुके हैं.

(XXX) आदेशानुसार विलोपित.

इस पर चर्चा हो चुकी है. ये उद्धरण दे देकर, हम नेता प्रतिपक्ष से यह उम्मीद करते हैं कि ऐसा कोई तथ्य दें, जिससे कि अपराधियों को पकड़ा जा सके. कहने की कोई यह जरुरत नहीं है कि लक्ष्मीकांत शर्मा जी करीबी थे या दूसरे करीबी थे. सारे जेल में हैं. मुख्यमंत्री जी का कोई कितना भी करीबी हो, अगर उसने अपराध किया है, तो कानून अपना काम करेगा. किसी को बखशेंगे नहीं. इसलिये हमारा निवेदन है कि तथ्यात्मक बात करें.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- अध्यक्ष महोदय, सारे तथ्य वहां रखे हैं आपराधियों को पकड़ने वाले. आप वहां तथ्य दे दीजिये डीजीपी के पास.

अध्यक्ष महोदय -- एक तो ..... शब्द निकाल दें.

श्री सत्यदेव कटारे -- क्यों अध्यक्ष महोदय. हम पूरा बयान पढ़ देते हैं. मैंने यह दस्तावेज पटल पर रख दिये हैं.

अध्यक्ष महोदय -- अभी उसको स्वीकार नहीं किया है. मेरे पास आपका आवेदन आया है, मैंने उसको पढ़ा नहीं है. आप कितना और समय लेंगे. 45 मिनट हो गये हैं. 5-7 मिनट में समाप्त कर दें.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, समापन की ओर है. लगभग इतने ही समय में समाप्त हो जायेगा.

श्री गोपाल भार्गव -- नेता प्रतिपक्ष जी, समाप्त करने से पहले सुझाव देते जाइये कि क्या वैकल्पिक व्यवस्था इसमें आपकी तरफ से सुझाई जा रही है, जो कि त्रुटिहीन हो. मैंने पहले भी कहा था, अपने वक्त्व्य में भी कहा था. आप बतायें कि जिसमें एक प्रतिशत भी कहीं किसी प्रकार का दोष नहीं हो.

अध्यक्ष महोदय -- 5 मिनट में समाप्त कर रहे हैं, कृपया उनको बोलने दें.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, जब ये प्रश्न पूछने की जगह आ जायेंगे और मैं उत्तर देने की जगह आ जाऊंगा, तो तब दूंगा. अभी काहे को दूं.

श्री सुन्दरलाल तिवारी -- कमेटी बना दीजिये.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, एक सवाल यह उठता है कि श्री लक्ष्मीकांत शर्मा जी गिरफ्तार हुए. गिरफ्तार होते होते उन्होंने यह शब्द बोला कि अगर मेरे गिरफ्तार होने से बड़े

लोग बच जाते हैं, तो मैं गिरफ्तार होने के लिये तैयार हूं, मुझे ले चलो. अध्यक्ष महोदय, अब सवाल यह है कि मंत्री से बड़ा कौन होता है और आपके प्रिय पात्र थे, तो उनसे बड़ा कौन हो सकता है. अध्यक्ष महोदय, इतने सारे इंगित साफ हैं, इतनी सारी बातें साफ हैं. एक बात और बता दूं कि किस तरीके से संविदा शिक्षक में फर्जीवाड़ा किया जा रहा है. अध्यक्ष महोदय, थोड़ा उल्लेख संविदा शिक्षक का करना चाहूंगा. भारत सरकार ने मध्यप्रदेश की शैक्षणिक उन्नति के लिये पैसा दिया. उस पैसे के अनुसार, भारत सरकार के गजट के अनुसार, उनके गजट नोटिफिकेशन में मध्यप्रदेश सरकार को निर्देश दिये गये कि किस तरीके से भर्ती की जायेगी, उसकी क्वालिफिकेशन क्या होगी और वह किस वर्ग में चयनित होगा, उसके परसेंटेज किस सबजेक्ट में क्या होंगे, यह सब चीजें थी. इसके साथ में उन्होंने यह भी निर्देश दिया था, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्. यह इन मापदण्डों को निर्धारित करेगी, इसके अनुसार भर्ती की जायेगी. भर्ती शुरु हो गयी और भर्ती होने लगी. राज्य सरकार ने भर्ती भी की. भर्ती करने के बाद जो नियम थे, उसके अनुसार भर्ती करने की उम्र 40 वर्ष थी. 40 वर्ष तक के व्यक्ति को उसमें आवेदन करने की पात्रता थी. अध्यक्ष महोदय, भर्ती हो गये. भर्ती होने के बाद उनका कार्य शुरु हो गया. इसमें कुछ लोग 45 साल के भर्ती हो गये. यह जो मध्यप्रदेश सरकार का पहला आदेश जारी हुआ था- आदेश क्र.C 3-11/12/1/3, दिनांक 3 नवम्बर,2012. सीधी भर्ती के लिये निर्धारित अधिकतम आयु सीमा 35 वर्ष को बढ़ाकर स्थाई रुप से 40 वर्ष निर्धारित की जाय. यह कर दी. अध्यक्ष महोदय, यह पहले भर्ती हो गयी, यह पहला आदेश है 3 नवम्बर,2012 को. इस भर्ती में 45 साल के लोगों को भी भर्ती कर लिया और वह नौकरी भी करने लगे. चूंकि भर्ती इसी तरीके से हो रही थी, तो दूसरा संशोधित आदेश निकलता है क्रमांक F 1-4/20/3/20-1, दिनांक 8 मार्च,2013. इस आदेश के अनुसार उनकी उम्र बढ़ाकर के 45 साल कर दी जाती है. अध्यक्ष महोदय, आप एक बात बतायें कि जब आपने रिक्रूटमेंट निकाला, उसमें आपने एज निकाल दी, एज के अनुसार आवेदन आ गये, आवेदन के अनुसार भर्ती हो गयी और भर्ती होने के बाद वह लोग काम भी करना शुरु कर रहे हैं. एक साल बाद आप एज बढ़ा रहे हैं और वह भी पिछली डेट से. यह आदेश भी हमारे पास है. मध्यप्रदेश शासन का ही आदेश है. ..(जारी)

अध्यक्ष महोदय इस तरीके से घपले हो रहे हैं, इस तरीके से घोटाले भर्ती में हो रहे हैं जो एक नहीं है अनेक हैं.

अध्यक्ष महोदय--कृपया समाप्त करें.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष जी मैं समाप्त करने ही जा रहा हूं. बिल्कुल समापन के पास हूं. परिवहन में और पुलिस में भर्ती करने के लिये और जो किया सो किया . फिजिकल शिथिलता कर दी, जबकि फिजिकल फिटनेस पुलिस में एक तरीके से मेन्डेटरी रहती है. अगर पुलिस का जवान फिट ही नहीं होगा तो वह अपराधी के पीछे दौडेगा कैसे. इसको ही शिथिल कर दिया. जब फिजिकल फिटनेस ही शिथिल हो गई तो फिर पुलिस में बचा क्या.

अध्यक्ष महोदय, यह मध्यप्रदेश शासन का आदेश है.मध्यप्रदेश व्यवसायिक परीक्षा मंडल , कार्यालय परिवहन आयुक्त मध्यप्रदेश, ग्वालियर मध्यप्रदेश शासन परिवहन विभाग के अंतर्गत परिवहन आरक्षक सीधी भर्ती के रिक्त पदों पर भर्ती हेतु चयन परीक्षा 2012. यह विज्ञापन निकला. इस विज्ञापन में .182 (पाईंट 182) इसके पैराग्राफ में लिखा "लिखित परीक्षा की मैरिट सूची एवं शारीरिक अर्हता" तो लिखित का जो लिखा है वह है, मैं सिर्फ शारीरिक अर्हता वाला पढ़ रहा हूं. "उक्त परीक्षा में सफल परीक्षा अभ्यार्थियों द्वारा बिंदू 14 में उल्लेखानुसार शारीरिक अर्हता हेतु जिला मेडिकल बोर्ड से शारीरिक अर्हता के संबंध में प्रमाण पत्र, परिवहन आयुक्त कार्यालय मध्यप्रदेश ग्वालियर में प्रस्तुत किया जायेगा. शारीरिक दक्षता प्रमाण पत्र के लिये कोई अंक की गणना नहीं की जायेगी. उक्त प्रमाण पत्र के अनुसार योग्य होने पर उपलब्ध रीतियों के विरूद्ध प्राप्त चयन सूची के आधार पर परिवहन आयुक्त मध्यप्रदेश के द्वारा नियुक्ति आदेश जारी किये जायेंगे " यह आदेश आपने निकाल दिया और इसमें शिथिल कर दिया. और इसमें छूट क्या दे दी कि आप पहले भर्ती हो जाओ, भर्ती होने केवल जाईये, मेडिकल बोर्ड का सर्टिफिकेट ले आईये.

अध्यक्ष महोदय इसी तरह की शिथिलता पुलिस को भी दे दी. पुलिस के लिये भी आदेश निकाला. अब अध्यक्ष जी मैं आपकी 316 की सूची में से सिर्फ एक नाम आपसे पूछ रहा हूं . उस एक नाम का आप मुझे बता देना कि यह कहां का व्यक्ति है. और यह पता कहां का है.

अध्यक्ष महोदय-- लगभग 1 घंटा आपको बोलते हुये हो गया है.

श्री सत्यदेव कटारे -- अध्यक्ष महोदय, यदि आप मुझे अनुमति दें तो मैं बोलूं नहीं तो मैं बैठ जाऊंगा, इसमें क्या बात है. मगर आप मुझे बात तो पूरी करने दें.

अध्यक्ष महोदय-- बहुत समय हो गया है, समय की मर्यादा तो रखनी पडेगी.

श्री सत्यदेव कटारे-- आप देखिये न सब कागज हमने समेट लिये हैं. हटा दिये हैं. अध्यक्ष महोदय, आरक्षक भर्ती के 121 क्रमांक पर नाम है आनंद सिंह. क्रमांक में थोड़ा बदलाव इसलिये होगा कि हमने अपनी सुविधा से क्रमांक बनाये हैं, जिलेवार हमने कर दिया है तो आप सिर्फ नाम लिख लीजिये. आनंद सिंह, कमलाकर सिंह, विक्ट कम्प्यूटर कॉलेज, बनारस रोड, अटल चौक लटोरी सूरजपुर. मुख्यमंत्री जी यह मध्यप्रदेश के किस हिस्से में है, जब उत्तर दें तो कृपया जरूर बता दें. और यह वो सूची है जो परिवहन विभाग ने जारी की थी ,परिवहन मंत्री जी ने और परिवहन विभाग की साइड से हमने डाउनलोड की है . अगर नाम और पता आप नहीं लिख पाये हों तो मैं फिर से बोल दूं. आप सिर्फ इसका बता दें कि यह मध्यप्रदेश के किस हिस्से में है.

श्री दिलीप सिंह परिहार-- अध्यक्ष महोदय सुबह से यह कागज ही ढूंढ रहे हैं इनको कुछ मिल नहीं रहा है. अब स्थापित हो गये हैं .

श्री सत्यदेव कटारे -- जब कागज से बात की जायेगी तो कागज ढूंढे ही जाते है, आप लोग नये सदस्य हैं ऐसा नहीं कहना चाहिये. अध्यक्ष जी जैसा निर्देश दे रहे हैं उसका पालन करें.

अध्यक्ष महोदय, यह हमारे पास में व्यावसायिक परीक्षा मंडल का वार्षिक प्रतिवेदन है." व्यापम - बढते कदम " वर्ष 2011-12- मध्यप्रदेश तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग- मध्यप्रदेश व्यावसायिक परीक्षा मंडल . इस प्रतिवेदन के अंत में इस साल व्यापम ने कौन कौन सी परीक्षायें आयोजित की, कितने लोगों ने आवेदन किये, कितने लोग सिलेक्ट हुये, पास हुये, रिजेक्ट हुये वह सबका इसमें खाका बना है. अध्यक्ष जी, हमारे पास में 2012 का प्रतिवेदन है. Madhya Pradesh Professional Examination Board, Bhopal Details of Examination Year, 2012. अध्यक्ष महोदय, इसमें जिस परीक्षा में श्री मीहिर कुमार बैठे उस परीक्षा का ही उल्लेख नहीं है जबकि व्यापम की साइड से हमने डाउनलोड किया तो मीहिर कुमार का नाम हमारे पास में है. क्रमांक 27 पर मिहिर कुमार का नाम है. 25.06.2012 को नियुक्त

हुए. इसके कॉलम अलग अलग हैं. उसके लिए फिर प्रथम पेज पर आना पड़ेगा. लेकिन इससे यह स्थापित होता है जो गड़बड़ी व्यापम ने की थी, उसको छिपाने की कोशिश की. अभी हमारे एक मित्र ने बोला था कि परीक्षाएं रुक गई हैं. व्यापम ने परीक्षाएं नहीं रोकी हैं. अभी भी यह विज्ञापन निकला है. अगर आपको किसी को भरना हो तो भर देना.

अध्यक्ष महोदय-- माननीय प्रतिपक्ष के नेताजी यदि आप अनुमति दें तो...

श्री सत्यदेव कटारे-- 5 मिनट में समाप्त कर रहा हूं.

अध्यक्ष महोदय-- 5-5 मिनट करके आपने आधा घंटा कर दिया. आप अनुमति दें तो मैं सदन के माननीय नेताजी को बुलाऊं.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, मैं 5 मिनट में समाप्त कर रहा हूं.

अध्यक्ष महोदय-- आप समाप्त नहीं करेंगे.

श्री सत्यदेव कटारे-- सच में समाप्त कर दूंगा. अब ज्यादा कुछ नहीं बोलना है.

अध्यक्ष महोदय-- एक-दो बात कह कर समाप्त करें.

डॉ नरोत्तम मिश्रा-- अध्यक्ष जी, अब तो उनके दल के भी आधे से ज्यादा लोग चले गये. अब तो मान जायें.

श्री सत्यदेव कटारे-- यह होमगार्ड मुख्यालय, गृह विभाग, म.प्र.शासन के अंतर्गत प्लाटून कमांडर की भर्ती हेतु चयन परीक्षा 2014. यह विज्ञापन व्यापम ने अभी निकाला है. इसमें भी आपने शारीरिक अर्हता शिथिल कर दी है. अध्यक्ष महोदय, जब पुलिस और होमगार्ड शारीरिक अर्हता ही नहीं रखेगी तो फिर वह क्या कर पायेगी. अध्यक्ष महोदय, इसके बाद हमें कुछ नहीं कहना. हम लगभग सारी बात कह चुके. बहुत सारी चीजें हैं उसमें लंबा समय लग जायेगा. हम एक ही प्रार्थना करना चाहते हैं.

डॉ गौरीशंकर शेजवार-- कटारे जी जरा पर्यवेक्षकों की तरफ भी देख लिया करें.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्षजी, व्यापम में इतनी सारी गड़बड़ी हो रही है. कुछ लोग बंद हैं. दो श्रेणी के लोग क्यों छोड़ दिये? व्यापम के अध्यक्ष जिनके रहते हुए यह गड़बड़ी हुई उनको आप टच क्यों नहीं कर रहे हैं. उनको एसटीएफ ने टच क्यों नहीं किया? क्या बात है? वह भी तो कहीं न कहीं इसके दोषी हैं. दूसरा,

जब व्यापम की परीक्षाएं होती थीं तो परीक्षाएं आयोजित करने के लिए कोई ने कोई रिटायर ऑफिसर या स्टालवार्ट(Stalwart) उसके परीक्षक होते थे, उनके खिलाफ आपने क्या कार्रवाई की? इतनी सारी गड़बड़ी चल रही है. ये जांच अधूरी है. एसटीएफ जांच को सही दिशा में नहीं ले जा रही है. हमारे दल के लोगों ने जो विभिन्न बातें कहीं उनसे पूरी तरह स्थापित होता है कि एसटीएफ जांच करने में सक्षम नहीं है. एसटीएफ जांच नहीं कर पा रही है. अंतर्राज्यीय विषय है. सबसे बड़ी बात यह है कि इस घटना से मध्यप्रदेश का आभा मंडल पूरे देश में बिगड़ गया है. पूरे देश में मध्यप्रदेश शर्मसार हो रहा है. मध्यप्रदेश के नौजवान कहीं नौकरी मांगने जायें तो कहीं नौकरी नहीं मिलती है. मध्यप्रदेश में रहते हुए उनको पीछे लिख कर चलना पड़ता है कि मैं 'व्यापम से पास किया हुआ व्यक्ति नहीं हूं.' इससे ज्यादा शर्म की बात कोई हो नहीं सकती. मुख्यमंत्रीजी अब जांच सीबीआई को देना है या नहीं देना है यह आप तय करें. लेकिन हम आपसे यह मांग करते हैं कि आप इस्तीफा दे दो तो एसटीएफ जांच कर लें. अगर इस्तीफा दे दें तो वह जांच कर लें और अगर इस्तीफा नहीं दे रहे हैं तो जांच सीबीआई को दे देंगे तो अच्छा रहेगा. धन्यवाद.

मुख्यमंत्री(श्री शिवराज सिंह चौहान)--अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपका आभार प्रकट करता हूं. एक अत्यन्त लोक महत्व के विषय पर आपने स्थगन के अंतर्गत सदन की कार्यवाही स्थगित करके, चर्चा करवायी.

अध्यक्ष महोदय, मैं चर्चा के लिए बेताब था क्योंकि पिछले दिनों से जो वातावरण बनाया गया था और मुझे कहने में कोई संकोच नहीं है. सवाल व्यापम की जांच का नहीं था. सवाल किसी की प्रतिमा खण्डित करने का था. सवाल असत्य आरोप लगाने का था. सवाल समाज में भ्रम फैलाने का था. अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय नेता प्रतिपक्ष को मान गया वह बड़े विश्वास के साथ असत्य बोलते हैं. पूरे विश्वास के साथ, धीमी गति से, आंखों में आंखे डालकर. लेकिन इस सदन को याद होगा पिछली उनने एक व्यक्ति के बारे में कहा था कि पता नहीं उसको जान से मार दिया गया. गायब कर दिया गया है. पता नहीं लग रहा है. वह इतने विश्वास से बोले मैं घबरा गया. मैंने युद्ध स्तर पर निर्देश दिये कि ढूंढवाओ. आखिर नेता प्रतिपक्ष आरोप लगा रहे हैं. आरोप लगा रहे हैं तो उनके आरोपों में वजन होगा. बाद में पता चला वह सही सलामत हैं. अभी उन्होंने एक और सनसनीखेज आरोप लगाया. ऐसे नेता प्रतिपक्ष मुश्किल से मिलते हैं.

उन्होंने आरोप लगाया, प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखा, राष्ट्रपति जी को पत्र लिखा कि मुख्यमंत्री जी से मेरी जान को खतरा है. माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रदेश जानता है कि मुझसे किसी की जान को खतरा हो सकता है क्या ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, कानफीडेंस के साथ में, मैं सच कहना चाहता हूं कि इतने विद्वान नेता प्रतिपक्ष को पाकर हम लोग धन्य हैं. माननीय अध्यक्ष महोदय, कई तरह के सवाल उठाये गये हैं लेकिन सवालों के मूल में क्या है मैं उस पर आऊंगा. लेकिन यह जो व्यापम के बारे में जो बातें की जा रही हैं. यह सच है 2009 में सवाल पूछे गये थे. पारस सकलेचा जी ने भी पूछा था, हमने समिति बनाई थी, समिति ने छानबीन की थी, छानबीन के बाद में संदिग्ध छात्र पहचाने गये थे. उन संदिग्ध छात्रों के खिलाफ में एफआईआर हुई थी. उनके प्रवेश निरस्त किये गये हैं. लेकिन यह कहना गलत है कि हमने इससे कोई सबक नहीं लियाहै. हम सतर्क हो गये हैं . हम नजर रखने लगे हैं, और इसलिए जब 2013 में जून के माह में 20 जून का वह दिन था. एक गुमनामपत्र मिलता है हमारी गुप्तचर शाखा को इंदौर में मिलता है कि पीएमटी की परीक्षा में कुछ फर्जी छात्र बैठने वाले हैं . पत्र में दो व्यक्तियों के नाम भी होते हैं. वह व्यक्ति गड़बड़ करने वाले हैं. मुझे जानकारी दी गई. मैंने कहा कि किसी भी कीमत पर बच नहीं पायें. छापा मारो पकड़ो , इंदौर पुलिस ने कार्यवाही शुरू की, संदिग्ध छात्र पकड़े गये. उन्होंने नाम बताये, उन नामों के आधार पर एफआईआर हुई, लोग गिरफ्तार हुए. आज कांग्रेसबड़ी बातें कर रही है . क्या आपने यह घोटाला खोजा था, क्या आपने यह गड़बड़ियां पकड़ी थी, क्या किसी और एजेन्सी ने हमें सूचना दी थी.

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस गड़बडी को उजागर करने का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वह शिवराज सिंह चौहान और इस सरकार को है. जब हमें यह पता चला तो मेरी आईजी इंदौर के साथ में बातचीत हुई. मुझे उन्होंने कहा कि इस मामले की जड़ें और भी गहरी हैं, जांच और गहराई से होना चाहिए, मैंने बैठक बुलाई, बैठक में तत्कालीन सीएस थे बैठक में डीजीपी थे. हम लोगों ने विचार विमर्श किया . माननीय अध्यक्ष महोदय बात की जा रही है दबाने की, छुपाने की बात होती तो इंदौर की पुलिस अपने आप उन छात्रों को गिरफ्तार करके छोड़ देती किसी को पता नहीं चलता. उस समय मैं तड़फ गया, मैं ईमानदारी से कहना चाहता हूं . मेरे

मित्र जानते हैं जो कि इस बेंच पर बैठे हैं, हमने भर्ती में कैसे पारदर्शिता आये, मेरिट के आधार पर कैसे प्रवेश हों, किसी भी छात्र के साथ में कैसे नाइंसाफी नहीं हो पाये. कांग्रेस के जमाने में जो मन चाहे भर्ती कर दी

जाती थी उस पर कैसे रोक लगायें उसके लिए एक नहीं अनेकों प्रयास किये हैं और मैं यह कहता हूं मुझे भरोसा था, मुझे विश्वास था कि नियुक्तियों में बेइमानी नहीं हो रही है. उसमें पारदर्शिता की पूरी प्रक्रिया हमने तय की थी. लेकिन जैसे ही पता चला कि कुछ गड़बड़ियां हुई हैं तो मन तड़फ गया और मैंने निर्देश दिये, आज मैं यह जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि मैंने डीजीपी को निर्देश दिये, मैंने सीएस को निर्देश दिये, कि यह जांच अब सामान्य पुलिस नहीं करेगी इस जांच को हम एसटीएफ से कराने का काम करेंगे. यह फैसला हमारा था और जब हमने फैसला किया था तो किसी को कुछ पता नहीं था कि अंदर कौन है और कहां तक मामला जा सकता है इसलिए अध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि यह टास्क है एक , कोई भी बेइमान हो कहीं का भी हो, किसी भी दल का हो किसी भी कीमत पर छोड़ा नहीं जाना चाहिए, यह विश्वासघात है यह छात्रों की आशाओं पर कुठाराघात है. यह उनके भविष्य को चौपट कर सकता है, इसलिए हमने एसटीएफ को जांच दी, एसटीएफ प्रमाणिकता के साथ में, पूरी पारदर्शिता के साथ में जांच करती गई. अध्यक्ष महोदय, अगर कहा था तो केवल इतना कहा था कि किसी दोषी को मत छोड़ना , कोई निर्दोष पकड़ा न जाय और कोई दोषी छूट न जाय. एक के बाद में एक नाम आते गये. जांच चलती गई और जैसे जैसे नाम आते गये, तथ्य मिलते गये, तथ्यों के आधार पर पूछताछ होती गई और पूछताछ के आधार पर अगर कोई चीज मिली तो पुलिस ने आरोपी बनाये, गिरफ्तारियां की, एक नहीं अनेकों गिरफ्तारियां की है. हमें कहा गया कि कौन गिरफ्तार है कितने गिरफ्तार हैं. माननीय अध्यक्ष महोदय, अफसर भी गिरफ्तार हैं

माननीय अध्यक्ष महोदय, अफसर भी गिरफ्तार हैं, बेईमानी करने वाले कोई नेता थे तो वह भी गिरफ्तार हैं, जो दलाल हैं, वे भी गिरफ्तार हैं. कोई अगर छूटे हैं तो उनको गिरफ्तार करने का काम चल रहा है. कब इतनी प्रामाणिकता के साथ कार्यवाही है? मेरे मन में अगर इस बात की तकलीफ है कि सारी सावधानियां बरतने के बाद भी गड़बड़ हुई है तो माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात का संतोष भी है कि उन गड़बड़ियों को पकड़कर अपराधियों को सजा दिलवाने का काम रहे हैं. यह सरकार कर रही है. हम कर रहे हैं. (मजों की थपथपाहट).. किसी को नहीं छोड़ेंगे. जो अपराधी हैं वे छोड़े नहीं जाएंगे. याद कीजिए मैंने पिछले सत्र में भी कहा था. जिन्होंने यह अपराध किया है, वे धनपशु हैं. ये धनपशु क्षमा करने के लायक नहीं हैं. किसी भी कीमत पर क्षमा करने लायक नहीं हैं.

माननीय अध्यक्ष महोदय, जांच पर सवाल उठाए जा रहे हैं. प्रश्न चिह्न लगाये जा रहे हैं. अधिकारियों के बारे में बातें की जा रही हैं. बहुत साधारण है किसी के ऊपर भी कीचड़ उछाल दो. किसी पर भी आरोप लगा दो. किसी को भी लांछित कर दो. लेकिन बात आई है तो मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि माननीय उच्च न्यायालय में याचिकाएं लगाई गईं. 14 याचिकाएं, जिनमें हमारे साथी भी शामिल थे, श्री

उमंग सिंह आर्य शामिल थे, एक और हमारे विधायक शामिल थे. माननीय उच्च न्यायालय में याचिकाएं लगाईं कि ये जांच सीबीआई से की जानी चाहिए. माननीय उच्च न्यायालय ने उन याचिकाओं पर सुनवाई की. माननीय उच्च न्यायालय ने सुनवाई के बाद जो टिप्पणियां की हैं, मैं वह टिप्पणियां हिन्दी में उसका अनुवाद करके बताना चाहता हूं. श्री तिवारी जी तो बहुत विद्वान हैं. वे फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते हैं. लेकिन अभी पूरा प्रदेश अंग्रेजी नहीं समझता है और तिवारी जी, अंग्रेजी में भाषण देकर जनता के बीच से चुनाव में जीतकर आओ तब जानूं. जनता की बात जनता की भाषा में होना चाहिए.

माननीय अध्यक्ष महोदय, एसटीएफ के बारे में कई तरह की बातें की गईं. आरोप लगाये गये. सवाल उठाये गये. आप तो सवाल उठाएंगे ही. क्योंकि आप नहीं चाहते कि जांच परिणाम तक पहुंचे. आप जांच को भटकाना चाहते हैं. आप दूसरों पर आरोप मढ़ना चाहते हैं. आप सरकार को लांछित करना चाहते हैं. लेकिन माननीय उच्च न्यायालय ने क्या कहा, दिनांक 16.4.2014 का माननीय उच्च न्यायालय का उद्धरण दे रहा हूं. आदेश का पैरा, तिवारी जी पूछ रहे हैं कि पैरा बताइए, पैरा 32. अंग्रेजी में बताऊं thirty two. माननीय उच्च न्यायालय द्वारा अपने आदेश दिनांक 16.4.2014 के अंतर्गत यह मान्य किया गया कि राज्य शासन ने प्रकरण की व्यापकता, जटिलता एवं संक्षिप्त आपराधिक गिरोह की संलिप्पता को देखते हुए बिना समय गंवाए एसटीएफ को मामला दिया. तिवारी जी, उसी पैरा 32 में आगे पढ़िए. एसटीएफ का गठन अनुभवी एवं स्वच्छ छवि के अधिकारियों से किया गया. स्वच्छ छवि और अनुभवी, यह मेरा कथन नहीं है, यह माननीय उच्च न्यायालय का कथन है.

माननीय अध्यक्ष महोदय, और उसी पैरा 32 में आगे बढ़िए, एसटीएफ द्वारा बिना समय गंवाए और जांच में कोई शिथिलता बरतते हुए त्वरित कार्यवाही की है. यह मैं नहीं कह रहा हूं. यह उच्च न्यायालय की टिप्पणियां हैं. अब तिवारी जी, पैरा 33 पर आ जाएं. पहला अपराध दर्ज होने के बाद एसटीएफ ने ..

श्री सुंदरलाल तिवारी - अध्यक्ष महोदय, (व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय - आपको अनुमति नहीं दे रहे हैं. तिवारी जी, आप बैठ जाएं, पूरी बात सुन लीजिए.

श्री शिवराज सिंह चौहान - माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत शांति से प्रतिपक्ष को सुना है.

अध्यक्ष महोदय - यह बिल्कुल एलाऊ नहीं किया जाएगा. नेता प्रतिपक्ष जी के समय मैंने किसी को बोलने नहीं दिया. आपसे विनम्र अनुरोध है. सदन के नेता बोल रहे हैं, मर्यादा रखिए. (व्यवधान)...यह बात ठीक नहीं है. तिवारी जी, जो बोल रहे हैं वह लिखा नहीं जाएगा.

श्री सुंदरलाल तिवारी - (XXX)

(व्यवधान)..

श्री शिवराज सिंह चौहान - माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी पैरा 33 में...(व्यवधान)...

श्री सुंदरलाल तिवारी - (XXX)

(व्यवधान)...

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय- माननीय तिवारी जी, सदन के नेता बोल रहे हैं आप जरा सदन की मर्यादा समझिये. माननीय सुन्दरलाल जी तिवारी कृपया बैठ जायें, माननीय सदस्य कृपया बैठ जायें. (व्यवधान) कोई नहीं बोलेगा.

यह बात बिलकुल उचित नहीं है कि सदन के नेता बोलें तब आप बोलें. कृपा करके सदन की मर्यादाओं का पालन करें. यह कोई प्रश्नकाल नहीं है. (व्यवधान) आप बैठ जाईए. बीच में कोई प्रश्नोत्तर नहीं होंगे न कोई खंडन किया जायेगा न कोई मंडन किया जाएगा. आप बैठ जाईए. कुछ नहीं लिखा जा रहा है. कृपा करके बैठ जाईए. सदन चलने दें. आप सबकी बात शांतिपूर्वक सुनी गई. (व्यवधान) यह बात बिलकुल आपत्तिजनक है, माननीय सदस्य बैठिए.

श्री शिवराज सिंह चौहान- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ बात कर रहा हूं. क्योंकि बार बार ये सवाल उठाये गये, इसलिए उत्तर जरूरी थे और इसलिए जो बात कही गई है उस बात को मैं सामने रखने का काम कर रहा हूं. माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं,

श्री सत्यदेव कटारे- मुख्यमंत्री जी, जरा आधा मिनट...अध्यक्ष महोदय, मैं एक निवेदन करना चाहता था. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय- वे नहीं बैठ रहे हैं तो आपको बैठना चाहिए. (व्यवधान) वे नहीं बैठ रहे हैं.

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय नई बात खड़ी हो गई है. .

अध्यक्ष महोदय—वे नहीं बैठ रहे हैं,ये अलाऊ नहीं किया जाएगा. जो नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं वह नहीं लिखा जाएगा.

श्री सत्यदेव कटारे – (XXX)

(XXX) आदेशानुसार रिकार्ड नहीं किया गया.

श्री शिवराज सिंह चौहान—माननीय अध्यक्ष महोदय, ये है , पता नहीं क्यों प्रतिपक्ष सुनना भी नहीं चाहता. मैं इतनी देर से, पूरी शान्ति से हर एक वक्ता को सुनता रहा. माननीय अध्यक्ष महोदय, इस तरह माननीय उच्च न्यायालय ने जितनी भी ऐसी याचिकाएं लगाईं थी कि सी.बी.आई. को जांच दी जाए, उन्होंने याचिकाएं खारिज कर दीं और कहा कि एस.टी.एफ. पूरी प्रमाणिकता के साथ जांच कर रही है और इसलिए जांच जारी रहेगी. माननीय अध्यक्ष महोदय यह बात बार बार कही जा चुकी है. लेकिन एक बार मैं फिर दोहराना चाहता हूं. मामला हाईकोर्ट में गया , अब इनको हम पर भरोसा नहीं है. शिवराज सिंह चौहान पर भरोसा नहीं है, मेरी सरकार पर भरोसा नहीं है. एस.टी.एफ. पर भरोसा नहीं है, पुलिस पर भरोसा नहीं है, मुझे पता नहीं कि अपने आप पर भी भरोसा है कि नहीं. लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय ये कम से कम हाईकोर्ट पर तो भरोसा करें. माननीय उच्च न्यायालय अब लगातार मॉनीटरिंग कर रहे हैं. तथ्य देख रहे हैं. उनकी देख रेख में सारी कार्यवाही संपादित की जा रही है. ...

और माननीय अध्यक्ष महोदय, इससे बड़ी निष्पक्षता का प्रमाण क्या होगा. आप लोगों ने बार बार नाम लिए कि फलाने जेल में हैं, फलाने वहां बैठे हैं, सरकार की बिना इच्छा शक्ति के क्या यह हो सकता था? मैं प्रतिपक्ष के मित्रों से यह पूछना चाहता हूं कि अगर किसी ने अपराध किया तो वह कौन पास है, कौन दूर है, कौन नाक का बाल था, कौन नाक का बाल नहीं था, जब न्याय करने वाला बैठता है तो यह नहीं

देखता कि कौन करीब है, कौन दूर है, सबको न्याय मिले, एक समान व्यवहार हो, यह आपकी सरकार नहीं है कि अंधा बांटे रेवड़ी और चीन्ह चीन्ह के दे, देख देखकर फैसला करे. हमने फैसले किये तो निष्पक्षता के आधार पर फैसले किए, लेकिन मुझे तकलीफ भी है, इन्होंने जब यह देखा कि जांच लगातार आगे बढ़ रही है, अपराधी पकड़े जा रहे हैं, पहले यही थे जो कहते थे कि अब फलाना नहीं पकड़ा गया, अब वह नहीं पकड़ा गया, वह पकड़ा गया तो वह नहीं पकड़ा गया. अध्यक्ष महोदय, जो पकड़े गए, वह सामने हैं. कौन आरोपी है, कौन अपराधी है, कौन नहीं है, यह फैसला माननीय न्यायालय करेगा, लेकिन जिनके खिलाफ तथ्य मिले वह पकड़े गए हैं या कोई बचा है तो वह पकड़ा जाएगा, लेकिन जब देखा कि एक मुद्दा हाथ से निकल रहा है तो कांग्रेस लोकसभा के चुनाव में और उसके पहले विधानसभा के चुनाव में पराजित कांग्रेस, हताश कांग्रेस, निराश कांग्रेस, अपने अस्तित्व के लिए लड़ती कांग्रेस को जब यह लगा कि मुद्दा हाथ से जा रहा है तो एक नए आरोपों की श्रंखला शुरू कर दी गई. नए आरोप जिनके बारे में कोई तथ्य नहीं हैं, जिनके बारे में कोई प्रमाण नहीं हैं, कांग्रेस के प्रवक्ता, प्रेस कान्फ्रेस लेते हैं और प्रेस कान्फ्रेन्स में तथ्य उद्घाटित करते हैं कि 17 लोगों को सी.एम. की पत्नी ने भर्ती करवा दिया. माननीय अध्यक्ष महोदय, कोई अपराधी हो तो कोई हो, किसी का कोई पति हो, किसी की कोई पत्नि हो, आरोप लगाने में कभी कोई आपत्ति नहीं हो सकती, लेकिन मैं व्यथित मन से कहना चाहता हूं, मैं पीड़ा के साथ कहना चाहता हूं कि क्या बिना तथ्यों को देखकर आरोप लगाए जाएंगे, क्या निराधार आरोप किसी पर भी मढ़ दिए जाएंगे? और निराधार आरोप लगाते समय उसकी मानसिकता जिस पर आरोप लगाए जा रहे हैं, उसकी मानसिक स्थिति क्या बनेगी, उसका दर्द और पीड़ा क्या होगी, क्या इस बात का भी हम अहसास नहीं करेंगे? क्या सी.एम. की पत्नि होना अपराध है? ऐसे आरोप लगाए गए. मैं खजुराहो में था, मेरे विधायक जानते हैं, राजनाथ सिंह जी वहां आए हुए थे, हम विधायकों के वर्ग में थे. टेलीविजन में खबरें चलना शुरू हुईं, मिसलीड किया गया, क्योंकि यह तो बड़ी खबर थी कि पत्नि ने भर्ती करवा दिए, फोटो दिखाए जा रहे हैं, टेलीविजन में बताया जा रहा है. माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं और पीड़ा भरे मन से कहना चाहता हूं कि क्या कमर के नीचे वार किए जाएंगे, क्या बिना तथ्यों के आरोप लगाए जाएंगे? क्या निरपराध महिला को, निर्दोष महिला को आरोपों की चक्की में पीसने का काम किया जायगा? क्या उसको मानसिक प्रताड़ना देने का काम

किया जायगा? अध्यक्ष महोदय, कभी इस सदन में क्या ऐसा हुआ है? मैं नेता प्रतिपक्ष से कहना चाहता हूं, मैं प्रतिपक्ष के बाकी सदस्यों से भी कहना चाहता हूं कि हमने इस सदन में देखा है कि जब स्व. अर्जुन सिंह जी यहां बिराजमान हुआ करते थे, सुंदरलाल पटवा जी हुआ करते थे, कैलाश जोशी जी हुआ करते थे, मोतीलाल वोराजी हुआ करते थे, तब क्या ऐसी प्रतिद्वंदिता होती थी, तब क्या ऐसे आरोप लगाए जाते थे? इस सदन की गौरवशाली परंपरा जिसका जिक्र यहां किया गया था, हम राजनैतिक विरोधी हैं, विचारधाराओं के विरोधी हैं, तथ्यों के आधार पर आरोप लगाएं, तथ्यों के आधार पर घेरने का काम करें, क्या अध्यक्ष महोदय हम व्यक्तिगत् दुश्मन बन गए हैं, क्या इस ढंग से आरोप लगाए जाएंगे? आज बड़ी पीड़ा के साथ मैं कहना चाहता हूं, दर्द भरे मन से कहना चाहता हूं और इस सदन के माध्यम से मीडिया और प्रदेश की जनता को कहना चाहता हूं कि आरोपों की श्रंखला, कई बार विज्ञापनों में फोटो छाप दिए गए, यह मुख्यमंत्री, यह उनकी पत्नि, नोट की मशीन, कैसे कैसे आरोप झेले हैं, कैसे कैसे घिनौने आरोपों में घिरे हैं, क्या यह राजनीति है, क्या यह राजनीति का चरित्र होगा, क्या यह राजनीति का स्तर होगा? मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जब मैं खजुराहो से लौटा तो मुझे लगा कि मुख्यमंत्री बनकर क्या मैंने अपराध कर दिया है, क्या मैं जबरदस्ती आपकी कुर्सी छीनने पहुंच गया था, प्रदेश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को चुनाव जिताया, भाजपा ने मेरे नेतृत्व में चुनाव लड़ा, विधायकों ने मुझे नेता चुना, इसके बाद मैं मुख्यमंत्री बना. आज इस सदन में पूरी जिम्मेदारी के साथ शिवराज चौहान कहता है कि इनमें से एक भी आरोप अगर सत्य सिद्ध हो गया तो राजनीति तो छोड़ो इस दुनिया से सन्यास ले लूंगा.

आरोप लगाये जा रहे हैं, बिना मतलब के आरोप लगाये जा रहे हैं. क्या इस तरह राजनीति करेंगे और जब सूची में वैसे कोई नाम दिखाई नहीं दिये, दूसरे तीसरे दिन सारे तथ्य सामने आ गए तो फिर और दूसरा आरोप मढ़ दो, संघ का नाम ले लो, स्वर्गीय नाम उछाल दो और दूसरों पर आरोप लगा दो. माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा स्पष्ट आरोप है कि यह कांग्रेस की जांच को भटकाने की साजिश है. यह जांच को भटका के असली अपराधियों को बचाने की साजिश है. किसी का भी नाम ला दोगे, बिना तथ्यों के ला दोगे. एक जांच एजेन्सी जांच कर रही है. हाई कोर्ट मॉनीटरिंग कर रहा है. जब मन में आया इसको पकड़ लो, इसको गिरफ्तार क्यों नहीं किया, उसको क्यों छोड़ दिया, क्या घर का खेल है, हर किसी को जाकर के पकड़ लें.

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज कहा जा रहा था मुख्यमंत्री शर्म करो. आप कह रहे थे मुख्यमंत्री शर्म करो, पीछे से आवाज आ रही थी मुख्यमंत्री शर्म करो. शिवराजसिंह चौहान शर्म नहीं करता, अपने कामों पर गर्व करता है, यह मैं कहना चाहता हूँ. (मेजों की थपथपाहट) किसलिए शर्म करुं मैं. अगर गड़बड़ पायी गयी तो गड़बड़ पकड़ी. पकड़ने का काम किया. अपराधी सजा पायेंगे और व्यवस्था को परफेक्ट बनाया जायेगा लेकिन ऐसे भाषण दिये जा रहे थे जोर दे दे के, शब्दों का जाल बिछा बिछा के, छात्रों का भविष्य चौपट कर दिया है, पैरों तले रौंद दिया गया है, कुचल दिया गया है. माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने बर्बाद नहीं किया. हमने को गड़बड़ी करने वाले पकड़े हैं अगर बर्बादी कभी होती थी तो आपकी सरकारों में होती थी. माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ तथ्य आपके सामने रखना चाहूंगा, मैं निवेदन करना चाहता हूँ उस समय में, हम पर आरोप लगाने वालों हमें जवाब चाहिए और यह बात प्रासंगिक है, भर्तियां कैसे होती थीं, यह आर्डरशीट, "श्री राजवेन्द्रसिंह आत्मज हरिप्रतापसिंह, तिलक नगर, खुट्टई जिला रीवा इलेक्ट्रिक ट्रेड में द्वितीय वर्ष डिप्लोमा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण है की आर्थिक हालत अत्यन्त दयनीय होने के कारण मानवीय आधार पर सेवा भर्ती नियमों को शिथिल करते हुए विशेष नियुक्ति लोक निर्माण विभाग में उपयंत्री के पद पर दी जाती है - श्री दिग्विजयसिंह" (शेम शेम की आवाज) माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पूरा पुलंदा है मेरे पास. कुमारी प्रभा तिवारी.

श्री सत्यदेव कटारे—यह व्यापमं जांच का हिस्सा है क्या? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपया आप बैठ जाएं. आप सुनना चाहते हैं कि नहीं (व्यवधान) यह बात ठीक नहीं है.आप बैठिये (व्यवधान) यदि आपने कोई बात कही है तो उत्तर सुनने तक धीरज रखना चाहिए (व्यवधान) आप कृपया बैठ जाएं.कृपया व्यवस्था बनाये(व्यवधान) अब आप उत्तर सुनिये. जब वक्तव्य शुरु हो गया है उसमें ऐसी कौन सी प्रक्रिया हो गयी है.

श्री सत्यदेव कटारे—मेरा प्वाइंट आप आर्डर है.

अध्यक्ष महोदय-- प्वाइंट आफ आर्डर इस वक्त नहीं उठ सकता.

श्री सत्यदेव कटारे—क्यों?

अध्यक्ष महोदय—इसलिए नहीं उठ सकता क्योंकि यह कोई प्रक्रियात्मक गलती नहीं है.

श्री सत्यदेव कटारे—जब चर्चा विषय से बाहर जाएगी..

अध्यक्ष महोदय-- न ही कोई विषय से अलग की बात है. आप बैठ जाएं कृपया. अब आपको सुनना चाहिए.माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी, आपकी दिन भर से बात सुन रहे हैं.(व्यवधान) आप कृपया बैठ जाएं. माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, दिन भर आपकी बहस सुनी गयी अब आपको उत्तर सुनना चाहिए.

यह बात तो ठीक नहीं है आप उत्तर नहीं सुनना चाहते हैं....(व्यवधान)..वह उत्तर ही दे रहे हैं. आप बैठ जाइए.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा--- अभी से बौखला गये हैं. अभी तो शुरुआत हुई है.

अध्यक्ष महोदय--- यह प्रश्नोत्तर काल नहीं है...(व्यवधान)...आप लोग बैठ जाइए.आप लोग उत्तर सुनना नहीं चाहते हैं क्या. अभी उत्तर पूरा नहीं हुआ है. वह बता रहे हैं. आप बैठकर सुनिये कि वह रेलीवेंट कैसे हैं. वह बता रहे हैं..(व्यवधान)..आप सुनना ही नहीं चाहते हैं, आप बैठ जाइए कृपा करके.

श्री कैलाश विजयवर्गीय--- अध्यक्ष महोदय, यह सदन से भागने का बहाना है. इनमें सुनने का साहस नहीं है.

अध्यक्ष महोदय--- (श्री सुंदरलाल तिवारी जी के व्यवधान के बीच कुछ कहने पर) माननीय सुंदरलाल जी तिवारी, आप बहुत व्यवधान डाल रहे हैं. कृपा करके व्यवधान नहीं डाले और ध्यान से सुनें सारी बात.

श्री शिवराज सिंह चौहान--- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि मुझे कहा गया कि मैं शर्म करूं. व्यापम बनाने की जरूरत क्यों पड़ी मैं यह बता रहा हूं ...(व्यवधान)...माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक और उदाहरण देना चाहूंगा . मध्यप्रदेश शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल के आदेश क्रमांक एफ-44/47/86/बी2/ 20 दिनाँक 10.10 1995 के पालन में माननीय अध्यक्ष महोदय, एक गांव का नाम, तिवारी जी जानते होंगे, तिवनी गांव. तिवनी में एक हाईस्कूल खोला गया, प्राइवेट स्कूल, उस स्कूल में परिवार के सब सदस्यों की पहले भर्ती कर ली गई , जिसमें तिवारी जी के परिवार के सदस्य भी शामिल हैं.(शेम-शेम की आवाजें)और बाद में उसको शासनाधीन करा लिया गया और सबको नियमित कर दिया गया. सबको शासकीय नौकरी दे दी गई. मैं नाम पढ़ता हूं ..(व्यवधान)...पुष्पा तिवारी...

श्री उमंग सिंघार--- यह व्यापम से भर्ती हुई है क्या.

एक माननीय सदस्य--- अब बोलो, तिवारी जी. भांडाफोड़ हो गया है तिवारी जी का.....(व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय--- आप लोग कृपया माननीय सदन के नेताजी का वक्तव्य पूरा होने दें. उनको पूरी बात कहने दे यह बात उचित नहीं है. स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा है आपको उत्तर सुनना चाहिए.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा--- सुनने की हिम्मत चाहिए . नाम तो सुन लो.

अध्यक्ष महोदय--- चर्चा आपने प्रारंभ की और अब उत्तर नहीं सुनना चाहते यह कौनसी बात हुई. आप चर्चा कराते नहीं. आपने चर्चा कराई, आप 4 महीने से बोल रहे हैं . आज चर्चा कराई है तो आप उत्तर नहीं सुनना चाहते हैं.आप उत्तर क्यों नहीं सुनना चाहते हैं. कृपा करके बैठ जाइए.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा--- आप सुन तो लो .

श्री उमाशंकर गुप्ता--- तिवारी जी सुन लो.

अध्यक्ष महोदय--- आप कृपया बैठ जाइए.

श्री सत्यदेव कटारे---- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर यह गलत हुए हैं जो मुख्यमंत्री जी उल्लेख कर रहे हैं, अगर वह गलत हैं तो उनको जांच को सौंपे , सरकार तो आप चला रहे हैं.... (व्यवधान)...आप विषयांतर मत करिये.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा--- विषयांतर नहीं हो रहा है. जब आप बोले तब कोई बोला था.

श्री शिवराज सिंह चौहान--- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझ पर तो कैसे-कैसे आरोप लगाये गये . कहा गया कि मेरे मामा के लड़के के फोन से कोई फोन किया गया. मेरे मामा के स्वर्गवास को आठ साल हो गया. मुझ पर इस तरह के आरोप लगाये गये. माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह सूची पढ़ रहा था विद्यावती तिवारी, मित्रा तिवारी, चन्द्रकला तिवारी, श्रीमती रश्मि तिवारी,..(व्यवधान)..श्रीमती गंगा तिवारी..(व्यवधान)..सिमरन प्रकाश तिवारी, उमेश तिवारी, मालती तिवारी..(व्यवधान)..गोविन्द तिवारी..(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- क्या आप उत्तर नहीं सुनना चाहते हैं?..(व्यवधान)..

श्री शिवराज सिंह चौहान-- यह पारदर्शिता थी?...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- क्या आप उत्तर नहीं सुनना चाहते हैं?..(व्यवधान)..

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- मुख्यमंत्री जी, दोनों मामले सी बी आई को दे दें...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- उत्तर सुनना चाहते हैं कि नहीं?..(व्यवधान)..प्रश्न उठाया है तो उत्तर तो सुनना पड़ेगा. ..(व्यवधान)..

श्री सत्यदेव कटारे-- मेरा बहुत विनम्रता से अनुरोध है....(व्यवधान)..

डॉ.नरोत्तम मिश्रा-- तिवारी जी, आपने बहुत घोटाले किए.सुन लो अभी तो और पोल खोलेंगे... (व्यवधान)..

श्री सत्यदेव कटारे-- आसन्दी से व्यवस्था तो दीजिए....(व्यवधान)..अध्यक्ष महोदय, आप मेरी बात तो सुन लें.

अध्यक्ष महोदय-- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आपने पूछा कि यह रिलेवेंट कैसे है उसका उत्तर वे दे रहे हैं.

श्री सत्यदेव कटारे-- मैं दूसरी बात कर रहा हूँ.

अध्यक्ष महोदय-- रिलेवेंट बात कर सकते हैं कि नहीं कर सकते.

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरी बात कह रहा हूँ. जो सदन के नेता आरोप लगा रहे हैं ये, जो हमारी पार्टी के प्रवक्ता ने आरोप लगाए हैं...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- पहले बात तो पूरी होने दीजिए...(व्यवधान)..कृपया बैठ जाइये...(व्यवधान)..

श्री सुन्दरलाल तिवारी-- एस टी एफ से काम नहीं चलेगा ये दोनों मामले सी बी आई को दे दें... (व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- मेरा प्रतिपक्ष से और सत्ता पक्ष दोनों से अनुरोध है कि कृपया अपना स्थान ग्रहण करें और सदन के नेता जी को सुनें. आपकी सबकी बात आ गई है. अब सदन के नेता जी का वक्तव्य आने दीजिए. कृपा करके सदन को ठीक से चलने दीजिए.

श्री शिवराज सिंह चौहान-- माननीय अध्यक्ष महोदय, सच कड़वा होता है. यह पूरी सूची है. कुमारी प्रभा तिवारी..(व्यवधान)..सीता मिश्रा, राजेश कुमार मिश्रा..(व्यवधान)..

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, हमारी प्रार्थना यह है कि मुख्यमंत्री जी जो आरोप लगा रहे है वे, हमारे प्रवक्ता ने आरोप लगाए वे और हमने आरोप लगाए वे, सारे सी बी आई को सौंप दो...(व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय-- पहले बात तो पूरी होने दें...(व्यवधान)..

(भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अनेक सदस्यों द्वारा सी बी आई जाँच हेतु गर्भगृह में धरना दिया गया एवं नारेबाजी की गई.)

..(व्यवधान)..

श्री शिवराज सिंह चौहान-- मैं पूरा भाषण दूंगा...(व्यवधान)..माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यापम का सच सुनना पड़ेगा. व्यापम का सच सुना रहे हैं इसलिए तो व्यापम बनाया...(व्यवधान)..

श्री सत्यदेव कटारे-- अध्यक्ष महोदय, हमारा दल यह प्रार्थना करता है कि जो आरोप मुख्यमंत्री ने लगाए वे, जो आरोप हमारे प्रवक्ता ने लगाए वे और जो आरोप हमने लगाए वे, सी बी आई को सौंप दो नहीं तो हम यहाँ धरने पर बैठेंगे...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय-- आप लोगों से मेरा अनुरोध है कि पहले आप बात पूरी होने दीजिए...(व्यवधान)..

(व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, अब गंभीर बात हो गई है मुख्यमंत्रीजी ने गंभीर आरोप लगाये हैं (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप दोनों पक्ष पहले मेरी बात सुन लें, दोनों पक्षों से अनुरोध है कि पहले मेरी बात सुन लें. कृपा करके प्रतिपक्ष और सत्तापक्ष दोनों कृपया मेरी बात सुन लें. आप कृपा करके बैठ जाइये. (व्यवधान)

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—एक भी नहीं बचेगा (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपा करके बैठ जाइये (व्यवधान) आप पहले बात को सुन लीजिये (व्यवधान) यह बात ठीक नहीं है (व्यवधान)

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—अभी नेता प्रतिपक्ष का नाम तो आया ही नहीं है (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने आरोप लगाये हैं बहुत गंभीर बात है जो आरोप उन्होंने लगाये, जो हमारे दल ने आरोप लगाये और जो हमारे प्रवक्ता ने आरोप लगाये सभी सीबीआई को सौंप दें.

अध्यक्ष महोदय—आप आधी बात में ही यह बात क्यों कह रहे हैं आप पहले पूरी बात सुन लें. पूरी बात सुनकर बोलिये जो बोलना है.

श्री सत्यदेव कटारे—सीबीआई के लिये हां कह दें. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप पूरी बात सुनना नहीं चाहते हैं(व्यवधान) आप सबने अपनी बात कह ली, अब आपको सुनना चाहिये (व्यवधान)

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—आपने सीबीआई की अपनी मांग रख दी, अब मुख्यमंत्रीजी की बात तो सुनो (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप सब ने अपनी-अपनी बात कह ली कि नहीं कह ली ?(व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—व्यापम और सीबीआई इन दो बातों के अलावा कुछ सुनाई नहीं दे रहा है (व्यवधान)

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—अध्यक्ष महोदय, यह इनका दबाव है क्या ? क्या इनके दबाव से सरकार चलेगी ? आपने अपनी बात कह ली ना.

श्री सत्यदेव कटारे—हां.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—अब मुख्यमंत्री की तो सुन लो ?

श्री सत्यदेव कटारे—सीबीआई की जांच के लिये हां करवाओ.

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—दबाव में चलेगी क्या यह सरकार..(व्यवधान) विपक्ष में जिन-जिन ने भाषण दिये हैं सबका रिकार्ड है एक-एक का कच्चा चिट्ठा है यहां पर, यह मध्यप्रदेश की जनता सुनेगी आपका कच्चा चिट्ठा, सुनो तो सही, अब कोई नहीं बचा सकता (व्यवधान) सुनो ना अब क्यों नहीं सुन रहे (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—कृपया आप अपने सदस्यों को शांत कराये.(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य—यह जांच सीबीआई को जायेगी तो तिवारी का पूरा खानदान जेल में जायेगा (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—यह फिर विषय से बाहर बोल रहे हैं. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आप प्रतिपक्ष के नेता हैं आप बीच में मत टोकिये, दोनों पक्षों के सदस्यों ने अपनी-अपनी बात कही, प्रतिपक्ष के नेता ने भी कही अब आपको सदने के नेता का उत्तर सुनना ही चाहिये, अब बीच में किसी भी मांग को लेकर नारे लगा रहे हैं यह सर्वथा अनुचित है (व्यवधान)

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—सुन तो लो.

श्री सत्यदेव कटारे—विषय से बाहर की कोई बात नहीं सुनेंगे और सीबीआई के अलावा कुछ नहीं सुनेंगे (व्यवधान)

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—नहीं करा रहे सीबीआई जांच और बोलो, दबे हुए हैं क्या (व्यवधान) अब इस मोर्चे पर कांग्रेस का सफाया करेंगे (व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—तुम करते रहो जो करना है (व्यवधान)

डॉ. नरोत्तम मिश्रा—मुख्यमंत्रीजी ने आपसे निवेदन किया था (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय:- कृपया आप लोग बैठ जाईये, मेरी बात सुन लीजिये।

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य गर्भगृह में बैठकर नारे लगाते रहे)

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्य अपने स्थान पर खड़े होकर जोर-जोर से बोलते रहे।)

...(व्यवधान)..

अध्यक्ष महोदय:- कृपया आप लोग मेरी बात सुन लीजिये , आप लोग बैठ जाईये। आप मेरी बात सुनना चाहते हैं या नहीं।

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य गर्भगृह में बैठकर नारे लगाते रहे)

6.14 बजे - (उपाध्यक्ष महोदय (डॉ राजेन्द्र कुमार सिंह) पीठासीन हुए)

उपाध्यक्ष महोदय:- आप लोग बैठ जाईये, मुख्यमंत्री जी की बात आप लोग सुन लें।

...(व्यवधान)..

(...व्यवधान..)(गर्भगृह में कांग्रेस पक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाये जाते रहे.)

श्री शिवराज सिंह चौहान – माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं भाषण पूरा करूंगा. आपने वायदा किया था कि मेरा पूरा भाषण सुनोगे. उसके बाद फैसला लेना. आरोप लगाकर भाग जाओ...(...व्यवधान..) यह नहीं होगा.(..व्यवधान.) मेरा भाषण पूरा होगा.(..व्यवधान..)

उपाध्यक्ष महोदय - मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि माननीय मुख्यमंत्री जी का भाषण समाप्त हो रहा है उसे सुन लें.

(6.18 बजे) **अध्यक्ष महोदय (डॉ. सीतासरन शर्मा) पीठासीन हुए.**

(गर्भगृह में कांग्रेस पक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाए जाते रहने पर जवाब में सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा भी अपने आसन पर खड़े होकर नारे लगाये गये.)

अध्यक्ष महोदय – आप लोग बात सुनना चाहते हैं कि नहीं आप लोग जवाब सुनना चाहते हैं कि नहीं. प्राकृतिक न्याय यह कहता है कि आपने यदि किसी पर आरोप लगाये हैं तो आपको उत्तर सुनना

चाहिये. दूसरी बात यह कि आपने यह प्रस्ताव उठाया अब उस प्रस्ताव का आपको उत्तर सुनना चाहिये. इतनी सहनशक्ति होना चाहिये. मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि कृपा करके शांति से सुनें. आपकी सारी बातें शांति से सुनी गईं. जब भी डिस्टरबेंस हुआ. उसको रोका गया. अब आपको भी शांति से सुनना चाहिये. मेरा विनम्र अनुरोध है कि चर्चा को पूरी होने दें. अभी और अवसर आएंगे जिन पर आप अपनी-अपनी बात कह सकते हैं. कृपा करके यह चर्चा आपने उठाई है और नेचुरल जस्टिस भी यही कहता है कि जवाब सुनें.(..व्यवधान..)यह कोई बात नहीं. आप उसको कन्क्लूड तो होनें दें. उन्होंने अभी रिफ्यूज कहां किया. अभी न तो ना कहा है न ना कहा है. आप कन्क्लूड जब तक नहीं होने देंगे तब तक आप कैसे कह रहे हैं यह बात.(..व्यवधान..) आप लोगों से मेरा अनुरोध है कि आप कृपा करके बात सुनें.(..व्यवधान..)

विधान सभा की कार्यवाही 15 मिनट के लिये स्थगित.

(6.20 बजे) 6 बजकर 20 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही 15 मिनट के लिये स्थगित की गई.

(6 बजकर 20 मिनट से 15 मिनट का अंतराल.)

6.37 बजे विधान सभा पुनः समवेत हुई.

{माननीय अध्यक्ष (डॉ.सीतासरन शर्मा) पीठासीन हुए}

(कांग्रेस पक्ष के सदस्यों द्वारा गर्भ गृभ में आकर नारे लगाये जाते रहे)

अध्यक्ष महोदय—माननीय मुख्यमंत्री जी.

श्री शिवराज सिंह चौहान—माननीय अध्यक्ष महोदय,

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय—आपको उत्तर सुनना है कि नहीं सुनना है. माननीय सदस्यगण माननीय मुख्यमंत्री जी का उत्तर सुनना चाहते हैं कि नहीं. कृपया आप लोग अपना अपना स्थान ग्रहण करें.

श्री उमाशंकर गुप्ता—आप मुख्यमंत्री जी का भाषण तो सुन लें.

अध्यक्ष महोदय—माननीय सदस्यगण आप कृपा करके मेरी बात सुन लें आप एक प्रस्ताव लाये उस प्रस्ताव में आपकी जो मांग थी वह रख दी. मैं माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी से जानना चाहता हूं कि वह पूरा

उत्तर सुनना चाहते हैं या नहीं. बीच में ही आप लोग नारे लगायेंगे आप उत्तर सुनने के बाद नारे लगाईये और जो करना हो करिये उत्तर तो पूरा सुनिये.

(व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे—आपने बिल्कुल सही सवाल उठाया है आपकी बात बिल्कुल सत्य है हमने पूरा सुना अपनी बात अपने दल के साथ बोली.

श्री शिवराज सिंह चौहान—अभी मेरा भाषण पूरा नहीं हुआ है अभी तो भाषण शुरू हुआ है.

श्री सत्यदेव कटारे—भाषण सुनने के लिये तैयार हुए और बैठे थे और सुन ही रहे थे लेकिन अध्यक्ष महोदय मुख्यमंत्री जी ने गंभीर आरोप हमारे दल के नेता के ऊपर लगाये जो कि सदन में सदस्य ही नहीं है.

अध्यक्ष महोदय--नहीं, किसी का नाम नहीं लिया था.

श्री सत्यदेव कटारे--लिया है.

अध्यक्ष महोदय--किसी का नाम नहीं लिया.

श्री सत्यदेव कटारे--लिया है ना, लिया है. (व्यवधान) नहीं लिया है तो जांच हो जाये सी.बी.आई. से (व्यवधान) अगर आरोप लगाये हैं सी.बी.आई. से जांच करवाओ. (व्यवधान)सी.बी.आई. से जांच होनी चाहिये.

अध्यक्ष महोदय--यह परंपरा ठीक नहीं है (व्यवधान) यह परंपरा ठीक नहीं है कि पहले कोई प्रस्ताव उठाया जाये और उसका उत्तर नहीं सुना जाये.

श्री सत्यदेव कटारे--अध्यक्ष महोदय, परंपरायें बहुत बिगड़ गईं हैं. अभी सदन में जो नई परंपरायें बनेंगी वह आपके नेतृत्व में बनेंगी.

श्री शिवराज सिंह चौहान--और कीचड़ उछालकर भाग **जा** जाओगे क्या आप लोग ? (व्यवधान).

(गर्भगृह में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा नारे लगाये जाते रहे)

(व्यवधान)

श्री सत्यदेव कटारे--सी.बी.आई. जांच की घोषणा कर दें, ढाई घंटे सुनेंगे पर पहले सी.बी.आई. जांच की घोषणा करो. (व्यवधान).

एक माननीय सदस्य--सदन के अंदर भाषण देते हो मर्यादा का ध्यान रखना चाहिये और खुद ही मर्यादा नहीं रख रहे हो, मर्यादा निभाओ अच्छे से.

(गर्भगृह में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा नारे लगाये जाते रहे कि सी.बी.आई. से जांच कराओ)

अध्यक्ष महोदय--माननीय मुख्यमंत्री जी का जवाब कल जारी रहेगा. विधान सभा की कार्यवाही गुरूवार, दिनांक 3 जुलाई, 2014 के प्रात: 10.30 बजे तक के लिये स्थगित.

अपराह्न 6.42 बजे विधान सभा की कार्यवाही गुरुवार, दिनाँक 3 जुलाई, 2014 (12 आषाढ़, शक संवत् 1936) के प्रात: 10.30 बजे तक के लिए स्थगित की गई.

भोपाल,
दिनांक : 2 जुलाई,2014

भगवानदेव ईसरानी
प्रमुख सचिव,
मध्यप्रदेश विधानसभा